* ऊपर बताये गये सभी शिलालेखों में दी गई सिंचाई स्रोतों की सूची बनायें और चर्चा करें कि इसका उपयोग कैसे हो सकता था?

राज्यों मेंा प्रशासन (Administration in the Kingdom)

इनमें से कई नये राजाओं ने बड़ी-बड़ी खिताबों पदवियों जैसे महाराजा -अधिराज (महान राजा, राजाओं के राजाधिराज) त्रिभुवन-चक्रवर्ती (तीनों लोक के राजा) आदि को अपनाया था। इन उपाधियों के बावज़ूद भी वे सामंत, ब्राह्मण, कृषक और व्यापारियों के साथ भी अपनी अधिकार बाँटते थे।

प्रत्येक राज्य में, संसाधनों के उत्पादक- जैसे कि कृषक, चरवाहे, कलाकारों और व्यापारी आदि पर दबाव डालकर अपने उत्पाद के हिस्से को बेचने के लिए कहा जाता था। कभी-कभी इन उत्पादों को किराये के रूप में अधीराज को देना पड़ता था, जो उस भूमि के अधिपति थे। व्यापारियों से भी कर वसूल करते थे।

इस साधनों का उपयोग राजा के भवनों, मंदिरों तथा किलों को बनाने के लिए किया जाता था। वे युद्ध भी किया करते थे। जिससे परिणाम स्वरुप श्रद्धांजलि के रूप में धन और व्यापार मार्ग के लिए भूमि का अर्जन किया जाता था।

साधारणतः आय वसूली के लिए सत्तारूढ़ परिवार के लोगों को नियुक्त किया जाता था, जैसे यह पद अक्सर प्रभावी परिवार और वंशानुक्रम में आते थे। यह बात सेना के लिए भी लागू होती थी। कई संदर्भों में यह पद राजा के रिश्तेदारों के पास ही होते थे।

* इस प्रकार की शासन व्यवस्था आज की प्रशासन व्यवस्था से किस प्रकार भिन्न थी?

सम्पति के लिए युद्ध (Warfare for wealth)

आपने यह देखा होगा कि इनमें से प्रत्येक राजवंश का एक विशिष्ट क्षेत्र था। उसी समय वे दूसरे क्षेत्रों को भी नियंत्रित करने का प्रयास करते थे। ऐसा ही एक क्षेत्र गंगा घाटी का कन्नौज था। कई वर्षों तक कन्नौज पर नियंत्रण पाने के लिए गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट और पाला राजवंश के शासकों ने लड़ाइयाँ लड़ीं। चूंकि नियंत्रण की इस लड़ाई में तीन शासक दल थे, इसीलिए इस लंबे युद्ध को इतिहासकार "तिहरा संघर्ष" भी कहते थे।

मानचित्र 1 देखकर कारण बतायें कि क्यों कन्नौज और गंगा घाटी पर शासक नियंत्रण करना चाहते थे?

महमूद ग़ज़नी (Mahmud Gazani)

अफ़ग़ानिस्तान के गज़नी के शासक सुल्तान महमूद ने 997 CE से 1030 CE तक शासन किया और मध्य एशिया, ईरान और उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी हिस्से पर अपने नियंत्रण का विस्तार किया। वह हर वर्ष उपमहाद्वीप पर धावा बोलता था - उसके निशाने पर हिंदू मंदिर रहते थे, जिसमें गुजरात का सोमनाथ मंदिर भी शामिल था। महमूद द्वारा लूटे गए धन का प्रयोग अधिकतर गज़नी में एक भव्य राजधानी बनाने के लिए किया।

सुल्तान महमूद उन लोगों के बारे में भी अधिक जानकारी प्राप्त करने में रुचि रखता था, जिनपर उसने युद्ध में जीत प्राप्त की थी और अल-बिरुनी नामक एक विद्वान को उपमहाद्वीप का विवरण लिखने की जिम्मेदारी लाद दी। अरबी भाषा में किये गये इस कार्य को किताब अल-हिंद नाम से जाना जाता है, जो इतिहासकारों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। अल-बिरुनी ने इस लेख को तैयार करने में संस्कृत विद्वान की सहायता ली।

चाहमन (चौहान) (Chahamanas)

चाहमनों, जिनको बाद में चौहान नाम से भी पहचाना जाने लगा, ने दिल्ली और अज़मेर क्षेत्र पर शासन किया। उन्होंने अपने नियंत्रण का विस्तार पश्चिम और पूर्व में करने का प्रयास किया, जहाँ उन्हें गुजरात के

SCERT TELANGANA

चालुक्य और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गढ़वालों के विरोध का सामना करना पड़ा।

चाहमनों के प्रमुख शासकों में पृथ्वीराज III (1168 ई.–1192 ई.), प्रसिद्ध थे। जिन्होंने एक अफ़गान शासक सुल्तान महमूद गौरी को 1191 ई. में हराया, लेकिन अगले वर्ष 1192 ई. में वे उससे हार गये।

मानचित्र पर फिर से निगाह डालें और चर्चा करें क्यों चाहमन अपनी सीमाएँ बढ़ाना चाहते थे?

भाग–II

चोल

अब हम दक्षिणी भारत पर एक निगाह डालेंगे।

चोल शासन दक्षिण का सबसे व्यवस्थित इतिहास रहा है। आइए देखते हैं वे कैसे सफल शासक बने।

उरियार से तन्जावुर तक

चोल एक शक्ति के रूप में कैसे उभरे? मुतिय्यार नाम के एक छोटे से सैनिक परिवार ने कावेरी डेल्टा क्षेत्र में अपना नियंत्रण रखा। वे कांचिपुरम के पल्लव राजा के आधीन थे। विजयालय, जो उरियार के प्राचीन चोल सैनिक परिवार से थे, ने नौवीं सदी के मध्य में मुतियार के डेल्टा पर कब्जा किया। उसने तन्जावुर कस्बा बनाया और वहाँ निशुम्भासुदिनी माता का मंदिर बनवाया।

विजयालय के उत्तराधिकारियों ने पड़ोस के क्षेत्रों पर जीत हासिल की और राज्य के आकार और शक्ति में वृद्धि हुई। दक्षिण और उत्तर में पाड्यन तथा पल्लवों की सीमाओं को इस सम्राज्य का हिस्सा बनाया गया। राजराजा –1 सबसे शक्तिशाली चोल शासक माना जाता है। वह 985 ई. में राजा बना और उसने इनमेंद्वसे अधिकतर क्षेत्रों में

मानचित्र 2 चोल साम्राज्य एवं इसके पड़ोसी राज्य

SCERT TELANGANA

चित्र 11.3 गंगईकोंडा-चोलापुरम का मंदिर। ध्यान दें कि किस तरह छत निर्मित की गई है। बाहरी दीवार को सजाने के लिए उपयोग किए गए पत्थर को देखिए। .

अपने आधिपत्य का विस्तार किया। उसने अपने सम्राज्य के प्रशासन को पुनः व्यवस्थित किया। राजराज के पुत्र राजेंद्र-1 ने उनकी नीतियों को जारी रखा और यहां तक गंगा घाटी, श्रीलंका और दक्षिणपूर्वी एशिया के देशों पर भी आक्रमण किया। इस तरह के आक्रमणों के लिए उन्होंने जल सेना विकसित की।

भव्य मंदिर और कांस्य मूर्तियाँ

तंजावुर और गंगईकोण्डा-चोलापुरम के राजराजा और राजेंद्र द्वारा बनाए गए मंदिरों में अद्भुत शिल्पकला और मूर्तिकला देखी जा सकती है।

चोल के मंदिर अकसर अपने चारों ओर के निर्णयों का केंद्र थे। यह कला के उत्पाद के केंद्र थे। इन मंदिरों को भूमि अनुदान के रूप में शासकों और अन्य लोगों से मिलती थी। इस भूमि से हुई पैदावार से मंदिर में कार्य करने वाले सभी लोग और कभी-कभी पास रहने वाले - पुजारी, फूलमाला बनाने वाले, रसोइए, सफाई करने वाले, संगीतकार, नर्तक इत्यादि, का भरण-पोषण किया जाता था। मंदिर न केवल पूजा-अर्चना का स्थान था, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र भी था।

चित्र 11.4 चोल कालीन कंस्य मूर्ति जिसका अलंकरण बड़ी सावधानी के साथ किया है।

मंदिर के साथ जुड़ी कलाओं में कांसे की मूर्ति तैयार करना सबसे विशिष्ट कार्य था। चोलों की कांसे की मूर्तियाँ विश्व की बेहतरीन मूर्तियाँ मानी जाती हैं। अधिकतर मूर्तियाँ भगवान की बनाई जाती थीं लेकिन कभी-कभी भक्तों की मूर्तियाँ भी बनाई जाती थीं।

कृषि और सिंचाई
(Agriculture and Irrigation)

चोल की अधिक उलपब्धियाँ कृषि में नई उन्नति के कारण संभव हो सकी। मानचित्र -2 को फिर से देखें। ध्यान दें कि बंगाल की खाड़ी में मिलने से पहले कावेरी नदी कई छोटी-छोटी धाराओं के रूप में बँट जाती है। इनमें अधिकतर बाढ़ आती है और उपजाऊ मिट्टी इनके किनारों पर इकट्ठा होती है। इनका पानी खेती के लिए आवश्यक नमी भी उलपब्ध कराता था, विशेषतौर पर धान की खेती के लिए।

SCERT TELANGANA

चित्र 11.5 तमिलनाडु में नवीं शताब्दी जलनिकासी फाटक यह एक तालाब के पानी को नियमित कर चैनल (Channel) को भेजता था। जिसके खेत की सिंचाई हीती थी।

हालाँकि कृषि तमिलनाडु के दूसरे हिस्सों में पहले ही विकसित हो चुकी थी, केवल छठी या सातवीं सदी में यह क्षेत्र बड़े पैमाने पर खेती के लिए खुला। कुछ क्षेत्रों में जंगलों की कटाई करनी पड़ी, कुछ जगहों पर भूमि को समतल करना पड़ा। डेल्टा क्षेत्र में बाढ़ से बचने के लिए ऊंची दीवार बनाई गई और खेतों तक पानी पहुँचाने के लिए नहरों का निर्माण किया गया। कई क्षेत्रों में एक वर्ष में दो फसलें उगाई जाती थीं।

कई मामलों में खेतों में फसलों के लिए कृत्रिम तरीके से पानी पहुंचाया जाता था। सिंचाई के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाता था। कई जगहों पर कुएँ खोदे गये थे। अन्य स्थानों पर बारिश का पानी एकत्र करने के लिए विशाल टैंकों का निर्माण किया गया था। यह याद रखना जरूरी है कि सिंचाई के काम में योजना – मज़दूरों और संसाधनों को व्यवस्थित करना, इन कार्यों का रखरखाव करना और पानी कैसे बाँटा जाये, इस बारे में फैसला करना आवश्यक होता है। अधिकतर नए शासक एवं गाँव में रहने वाले लोगों ने इन कार्यों में सक्रिय रुचि लेते थे।

साम्राज्य का प्रशासन

(The administration of the Empire)

प्रशासन को कैसे व्यवस्थित किया जाता था? राजा के पास सहायता के लिए मंत्री परिषद होती थी। उसके पास ताकतवर सेना और नौसैना थी। साम्राज्य को मंडल तथा तालुकों में और फिर इन्हें वालानाडुओं और नाडुओं में विभाजित किया गया।

किसानों की समस्या के निबटारे को ऊरू कहा जाता है, जो कृषि सिंचाई के विस्तार के साथ उन्नत बन गये। इस तरह गांव के समूह की विशाल इकाई बनी, जिसे नाडु कहा जाता था। ग्राम परिषद् और नाडु ने कई प्रशासनिक कार्य किये, जिसमें न्याय करना और कर प्राप्त करना शामिल था।

वेल्लाला जाति के धनी किसानों का नाडु पर अच्छा नियंत्रण था, जिसे वे केंद्रीय चोल सरकार की निगरानी में करते थे। चोल राजाओं ने छोटे अमीर जमीनदारों को मुवेंदावेलन (वेलन या तीन राजाओं की

SCERT TELANGANA

सेवा करने वाला किसान), अरैय्यार (मुखिया), इत्यादि उपाधिया दे रखी थी और उन्हें केंद्र की ओर से राज्य में मुख्य कार्यालय सौंपा गया था।

भूमि के प्रकार (Types of Land)

चोल शिलालेखों में भूमि के कई प्रकारों का वर्णन किया गया है।

वालांवगाई – गैर ब्राह्मण किसानों की भूमि

ब्रह्मदेया – ब्राह्मणों को अनुदान में दी गई भूमि

बालाभोग– स्कूल को बनाए रखने की भूमि

देवदाना, तिरुनामाट्टुक्कानी– मंदिरों को भेंट की गई भूमि

पाल्लिच्छान्दम– जैन संस्थाओं को दान में दी गई भूमि।

हमने यह देखा कि ब्राह्मण अक्सर भूमि अनुदान या ब्रहादेय प्राप्त करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि कावेरी की घाटी में ब्राह्मणों का प्रवासन बढ़ने लगे विशेष कर भारत के दक्षिण में।

प्रत्येक ब्रह्मदेय देखभाल एक विशिष्ठ ब्राह्मण जमींदार की सभा करता था। वे सभाएँ बड़ी कुशलता के साथ जमींदारी का कार्य संभालने लगे। उनके निर्णय शिलालेखों व मंदिरों की दीवारों पर लिखे हुए देखे जा सकते हैं। नगरम नाम से ये व्यापारिक संस्थाएँ कस्बों में प्रशासनिक कार्य भी करती थी।।

सभा किस प्रकार आयोजित की जाती थी, इसका विवरण तमिलनाडु के चंगलपट्टु जिले में उत्तरमेरुर शिलालेख में है। सभा में सिंचाई, कार्य, चमन मंदिरों की सुरक्षा हेतु विशेष समितियाँ थीं। इन समितियों के सदस्यों के नाम ताड़ के पत्तों पर लिखे जाते थे। सभी पत्ते घड़े में डालकर एक छोटे बालक से एक–एक पत्ता निकलवाकर समितियाँ बनाई जाती थीं।

शिलालेख और लेख

सभा के सदस्य कौन होते थे, उत्तरा मेरूर शिला निम्न विषयों की जानकारी देता है।

सभा का सदस्य बनने के लिए कर युक्त भूमि का मालिक होना आवश्यक था। उसका अपना मकान भी होना आवश्यक था।

उनकी आयु 35 से70 वर्ष के बीच होनी चाहिए।

उन्हे वेदों का ज्ञान होना भी आवश्यक था ।

साथ ही शासन की जानकारी और ईमानदार पड़ता था।

यदि कोई सदस्य पिछले तीन वर्षो से किसी समिति में सदस्य रह चुका हो तो वह अन्य समिति का सदस्य नहीं बन सकता।

पिछला लेखा–जोखा और उनके सगे संबंधियों की विस्तृत जानकारी न बताने वाले और उनके सगे संबंधी चुनाव में भाग नहीं ले सकते

- क्या इन सभाओं में महिलाएँ भाग लेती थीं? इन समितियों के सदस्यों को लॉटरी के द्वारा चुना जाना कहाँ तक उपयोगी होगा? शिलालेख हमें राजाओं और शक्तिशाली व्यक्तियों के बारे में बताते हैं। यहाँ बारहवीं शताब्दी के तमिल भाषा में लिखित पेरियपुराणम शिलालेख के द्वारा यह पता चलता है कि राजा एवं शक्तिशाली योद्धाओं के साथ साथ सामान्य जनता का रहन सहन कैसा था।

SCERT TELANGANA

आदनुर गाँव के बाहरी क्षेत्र में **'पुलयास'** का एक छोटा उपग्राम था, जहाँ घास की छत के नीचे छोटी झोपड़ियों में कृषि श्रमिक रहते थे जो उनके मकानों के सामने मुर्गी के बच्चे झुंड में घूमते थे तथा लोहे के काले कड़े धारण किये हुए काले बच्चे छोटे शवाक से खेलते थे। एक महिला मजदूर अपने बच्चों को मरेडू (अर्जुन) पेड़ों की छाया के चमड़े के टुकड़ों पर सुलाती थी। वहाँ आम के वृक्ष भी थे जिनकी शाखाओं से डपलियाँ लटकते थे तथा नारियल के पेड़ों की छाया में जमीन के खोखल में कुतिया पिल्ले को जन्म देती थी। लाल कलगी वाले मुर्गे भोर होने से पहले हट्टे-कट्टे पुलैयार (Pulaiyar) को उनके काम के लिए पुकारते थे। और दिन में धान से भूखा निकालते समय कंजी पेड़ के नीचे घुँघराले बालों वाली पुलैय्या महिलाएँ गाना गाती थीं।

* गांवों में आयोजित सभी कार्यक्रमों का विवरण दीजिए

मुख्य शब्द :

1. सामंत	2. मंदिर	3.नाडु
4. सभा	5. राज्य	6. सुल्तान

हमने क्या सीखा?

1. त्रिपक्ष युद्ध में किस-किस ने भाग लिया? (AS_1)
2. चोल साम्राज्य में सभा समिति के सदस्य बनने के लिए कौन सी योग्यताएँ होनी चाहिए? (AS_1)
3. चाहमन शासकों के अधीन दो मुख्य नगर कौन से थे? (AS_1)
4. राष्ट्रकुट शक्तिशाली कैसे बने ? (AS_1)
5. जनता की स्वीकृति के लिए नए राज्यों ने क्या किया? (AS_1)
6. तमिल प्रांत में सिंचाई के विकास के लिए किस तरह के कार्य किये गये? (AS_1)
7. चोल राजाओं के मंदिरों से संबंधित कार्यक्रम कौन से थे? (AS_1)
8. उत्तरमेरूर के चुनाव एवं आज के पंचायत राज चुनाव में क्या अंतर है? (AS_4)
9. प्राचीन मंदिरों के चित्र एकत्रित कर अलबम बनाइे। (AS_3)
10. कृषि और सिंचाई शीर्षक के पहले दो अनुच्छेद पढ़िए और उस पर टिप्पणी कीजिए। (AS_2)

परियोजना कार्य:

1. मानचित्र 1 को देखकर यह बताइए क्या तेलंगाणा में कोई **साम्राज्य था**?
2. इस पाठ में **बताये गये** मंदिर तथा आपके प्रांतों में स्थित आज के मंदिरों की तुलना करके उसमें **समानता और** अंतर को बताइए
3. वर्तमान में वसूल किए जाने वाले करों का विवरण दीजिए क्या ये नगद अथवा वस्तु या **श्रम सेवा** के रूप में वसूल किए जाते है ?

SCERT TELANGANA

अध्याय

12

काकतीय-स्थानीय साम्राज्य का उद्‌भव
(The Kakatiyas - Emergence of a Regional)

शायद आपने ब्रह्मनायुडु, बालचंद्रुडु और 66 नायकों की बहादुरी की कथाएँ एवं काव्यकथाएँ सुनी होगी। आपने सम्मक्का और सारक्का जातरा में भी भाग लिया होगा। उन्होंने जनजाति के लोगों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए राजाओं से युद्ध किया था। आपने काटम राजु से संबंधित उस चर्चित कहानी का भी आनंद उठाया होगा, जिसमें उन्होंने चरवाहों के अधिकारों के लिए नेल्लूर राजाओं से युद्ध किया था।

- अपने माता-पिता और बड़े-बुढ़ों से पलनाटी योद्धाओं, सम्मक्का, सारक्का तथा काटम राजु के बारे में कथाओं को जानिए। इन कहानियों को कक्षा से जोड़िए।

ये सभी कहानियाँ 1000 ई. से 1350 ई. कालीन है। यह हमारे इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण काल था। इससे पूर्व के अध्याय में हमने पढ़ा कि किस तरह भारत में शासन करने वाले नये परिवारों का उद्भव हुआ। ये शासक कृषि गाँवों के छोटे साम्राज्यों की स्थापना करने और अपने अनुयायी समूहों को कृषकर्ता के रूप में स्थापित करते। ये महत्वाकांक्षी योद्धा और सम्राट हमेशा एक-दूसरे से निरंतर युद्ध करते थे। इस तरह की मध्यावस्था में वरंगल में काकतीय साम्राज्य का उद्भव हुआ।

यह वही समय था जब तेलुगु की प्रथम पुस्तकें लिखी गयी थी। पारंपरिक तौर पर श्रीमद्-आंध्र महाभारत तेलुगु का प्रथम काव्यमय कार्य था। जो 1000 ई.और 1400 ई.के बीच कवित्रयमु कवियों की त्रिमूर्ति-नन्नया, तिक्कना और एर्रा प्रगड़ा के द्वारा रची गयी थी।

हमारे पास कई शिलालेख (बायम्मा, हजारा स्थम्ब मंदिर, नगुलापाडु, पिलालमारी, पालमपेट, कोण्डापर्ती, भूतपूर्व) जो हमें राजाओं, रानियों, प्रमुखों,कृषकों, अनुयायियों तथा व्यापरियों के बारे में बताते हैं। हमारे पास तेलुगु और संस्कृत में लिखी पुस्तकें भी हैं। काकतीय शासन के समय विद्यानाथ ने 'प्रतापरुद्र यशोभूषणम' नामक ग्रंथ लिखा। कुछ लिखित कार्य उनके शासनोपरांत लिखे गये।(बिनुकोंड वल्लभाचार्य कृत कीधाभीराममु, एकारनत कृत प्रताप रुद्र चरितम)।

चित्र 12.1 कीर्ति तोरण- वरंगल के काकतीय शासकों द्वारा निर्मित स्वयंभू शिव मंदिर का प्रवेश द्वार

SCERT TELANGANA

- उक्त अनुच्छेद पढ़ने के उपरांत क्या आप बता सकते हैं कि काकतीय शासकों की जानकारी देनेवाले दो मुख्य स्रोत क्या हैं?

शिलालेखो और साहित्य से पता चलता है कि काकतीय दुर्जय वंश से संबद्ध थे। उन्होंने तेलुगु को दरबारी भाषा के रूप में स्वीकार किया। अधिकांशतः उनके शिलालेख तेलुगु में हैं और उन्होंने स्वयं को आंध्र राजा बताया है। वे तीनों प्रांतों जहाँ तेलुगु बोली जाती है–तटीय प्रांत, तेलंगाणा प्रांत और रायलसीमा प्रांतों को समीप लाने का काम किया था। इस तरह वे तेलुगु प्रांत को समीप लाना चाहते थे और कुछ सीमा तक वे सफल भी हुए इसलिए आज भी इस प्रांत में उन्हें याद किया जाता है।

महत्वपूर्ण काकतीय शासक	
प्रोला II	(1116 - 1157ई.)
रुद्रदेव	(1158 - 1195ई.)
गणपितदेव	(1199 - 1262ई.)
रुद्रमादेवी	(1262 - 1289ई.)
प्रतापरुद्र	(1289 - 1323ई.)

वंश के प्रारंभिक सदस्यों ने अपना पेशा कर्नाटक प्रांत में शासन करनेवाले राष्ट्रकूट और चालुक्य राजाओं के यहां योद्धाओं और सामंतों के रूप में हुआ। वे गाँव के मुखिया के रूप में आरंभ किया। पद पर आसीन थे और अपने सैन्य कौशल के कारण सैन्य प्रमुख तथा सामंत आदि बने और उन्होंने तेलंगाना प्रांत के अनमकोंडा पर पूरी तरह से नियंत्रण पा लिया। पश्चिमी चालुक्यों के पतन के बाद काकतीय शासक स्वतंत्र शासकों के रूप में प्रकट हुए।

रुद्रदेव के शासन के समय (1158 ई.-1195 ई.) अनमकोंडा से राजधानी बदलकर ओरुगल्लु (वरंगल) कर दी गई। नया शहर बनाने का उद्देश्य अधिक मात्रा में जनसंख्या के लिए आवास की व्यवस्था तथा शाही राजधानी की आवश्यकताओं की पूर्ति करना था । रुद्रदेव ने एक बड़ा किला,एक तालाब, एक मंदिर जिसका नाम हज़ार खंभा मंदिर का निर्माण हनमकोण्डा में किया।

ओरुगल्लु किले का मानचित्र देखिए। आप देख सकते हैं कि किले की बाहरी दीवार चार गेटों के साथ निर्मित है। ये किले के भीतर कृषि और पानी के टैंक की सुरक्षा के लिए होती है, इस क्षेत्र कई कलाकारों के कुटिया थी। जिनमें टोकरी बनाने वाले कारीगर रहते थे। इन्हें पार करने के बाद ठीक बीच में जब पहुँचते हैं, जहाँ एक खंदक और मिट्टी से बनी किले की दीवार थी।

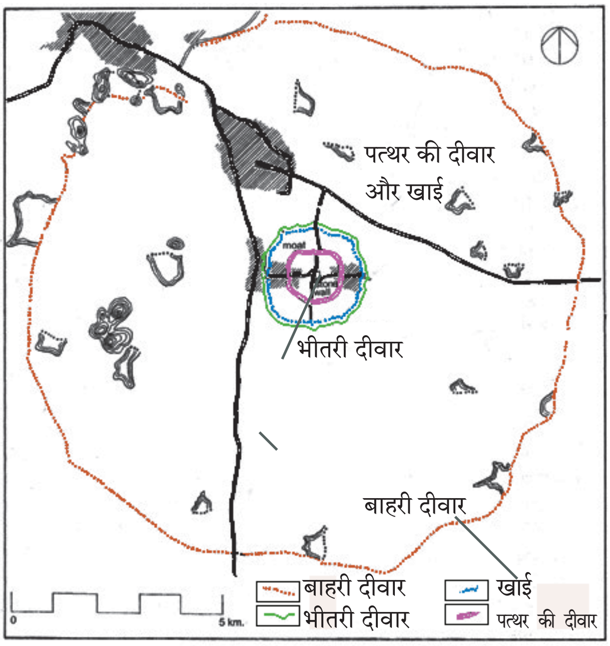

मानचित्र 1 . ओरुगल्लु का किला

SCERT TELANGANA

यदि आप मध्य की ओर आगे बढ़ें तो एक और खंदक और पत्थर की बनी दीवार पाएँगे। नगर के भवन और महल इसी पत्थर की दीवार के भीतर थे। इसके चार द्वार थे। जो पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में खुलते हैं। हर द्वार से मुख्य सड़क शहर के बीचों बीच तक जाती थी। जहाँ स्वयंभू शिवजी का मंदिर था। इस मंदिर के भी चार द्वार थे, जो चार दिशाओं में खुलते थे।

शहर अपने आप में कई हिस्सों या वादास में विभाजित था। व्यवसाय विशेष के लोग अपने विशेष हिस्सों या वड़े में रहते थे।

- क्या तुम अपने गांव या शहर का मानचित्र उतार कर उसकी तुलना ओरुगल्लु के मानचित्र से कर सकते हो?
- तुम्हें आज के गांवों और शहरों की तुलना पुराने समय के ओरुगल्लु से करने पर क्या अंतर दिखाई दिया?
- स्केल की सहायता से पूर्व से पश्चिम तक शहर की बाहरी दीवार की चौड़ाई का पता करो।
- उसी तरह भीतरी पत्थर से बनी दीवार को मापते हुए उत्तर से दक्षिण तक आन्तरिक शहर की चौड़ाई पता करो।
- अगर तुमने वरंगल शहर देखा है तो अपने सहपाठियों चर्चा बताओ।
- स्वयंभू शिव काकतीयों के कुल देवता थे । शहर के बीचों बीच महल या बाज़ार की जगह मंदिर क्यों बनवाया गया होगा?

जैसे-जैसे काकतीय शक्तिशाली बनते गये वे कई मुखिया पर उन्हें राजा स्वीकार करने के लिए दबाव डालने लगे। काकतीय अपने अनुयायियों को सामंतों, योद्धाओं और मुखिया से बचाते थे। किसी नगर पर आक्रमण करना हो तो उन्हें भी साथ ले जाते थे। कई सामंत उनसे स्वतंत्र भी होना चाहते थे किंतु काकतीय सेना भेज कर उन्हें बंदी बना लेते थे।

रुद्रमा देवी

क्या कभी तुमने वीरांगना रुद्रमा देवी का नाम सुना है ? उसने अपनी योग्यताओं के बल पर शक्तिशाली व सफल शासक के रूप में सभी को प्रभावित किया। रुद्रमा देवी ने ओरुगल्लु (आधुनिक वरंगल) पर शासन किया। वह काकतीय वंशज थी। उन्होंने 1262 ई. से 1289 ई. तक लगभग 27 वर्षों तक शासन किया। हमारे देश में बहुत ही कम वीरांगनाएँ हुई हैं। बहुत पहले दिल्ली में भी नारी शासक रज़िया सुलताना ने कुछ वर्षो तक शासन किया था। किंतु वहाँ के सरदार एक स्त्री को शासिका के रूप में पसंद नहीं करते थे इसलिए उन्होंने उसकी हत्या कर दी। इटली के प्रसिद्ध यात्री

चित्र 12.2 रुद्रमा देवी - घुड़सवारी करते हुए (हैदराबाद में आधुनिक प्रतिनिधित्व)

SCERT TELANGANA

मार्कोपोलो ने रुद्रमा देवी के साम्राज्य का भ्रमण किया। उसने बताया कि वह निर्भय, पुरुष के समान परिधान पहनने तथा सहजता से घुड़सवारी करने वाली थी। वास्तव में उनके शिलालेखों में रूद्रमा देवी स्वयं को रुद्रदेव महाराज बतलाती है। रजिया सुलताना के समान उन्हें भी अपने पिता के अधीन कार्य करने वाले प्रधानों का विरोध झेलना पड़ा, किंतु रुद्रमा देवी उन्हें नियंत्रित करने में सफल हुई। रुद्रमा और उनके पौत्र प्रतापरुद्र ने कई विद्रोहों का सामना किया और इन प्रधानों को नियंत्रित करने के लिए कई कदम उठाए। लेकिन उनका एक सहायक अधिकारी कायस्थ अम्बादेव ने उनके विरुद्ध आन्दोलन किया। नलगोण्डा जिले के चदूपट्ला में यह युद्ध हुआ, उसमें रुद्रमादेवी ने अपने प्राण गाँव दिए।

चित्र 12.3 मिट्टी की दीवार का भीतरी हिस्सा (सूखा) दायीं और बायीं ओर खंदक के साथ

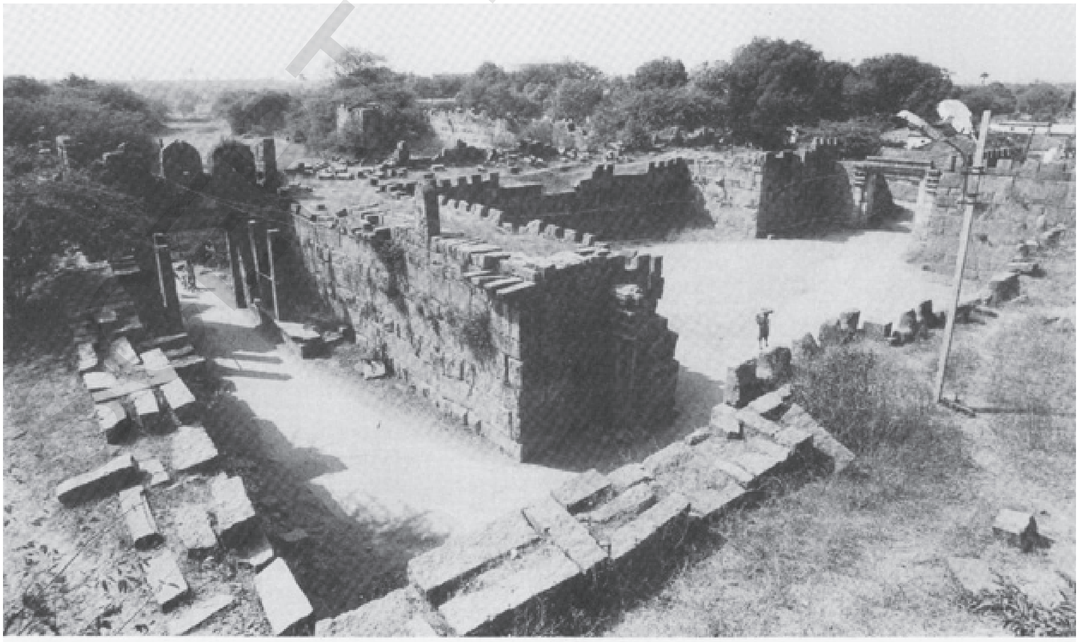

चित्र 12.4 पत्थर से बनी दिवार का आकाशी दृश्य जिसमें पूर्वी द्वार (benttetrace) तथा खुला आंगन दिखाई दे रहा है। (वेंकादर) महान नगर द्वार का प्रवेश द्वार जो दाई ओर है (महान शहर द्वार) राज्य मार्ग की ओर बढ़ता है। (राजा मार्गम्बु)

नयंकर व्यवस्था (Nayankara System)

रुद्रमादेवी और प्रतापरुद्र ने ऐसे कई कुशल योद्धाओं को प्रोत्साहित किया जो शक्तिशाली परिवार से नहीं थे किंतु महारानी और महाराज के विश्वास पात्री थे। उन्होंने उन्हें कुछ पद एवं नायक उपाधि देकर सम्मानित किया। उन्हें कई गाँव भी दिये गये जहाँ से वे कर वसूल कर। इन गांवों को उनके नयंकर कहते थे। हर नायक का यह दायित्व होता था कि वे अपने राजा की सेवा के लिए नयंकर सबसे वसूल कर उसमें निर्धारित सेना की व्यवस्था करे। किंतु ये गांव हमेशा उनके अधीन में नहीं होते थे, बल्कि राजा की इच्छा पर नायकों का स्थानांतरण, नई जगह पर कर दिया जाता था। ये नायक राजा या रानी पर निर्भर रहते थे। उनके विश्वासपात्र होते थे। इनका इस्तेमाल कभी-कभी विद्रोह करने वाले प्रधानों के दमन के लिए किया जाता था। इस व्यवस्था को नयंकर व्यवस्था कहते थे।

रुद्रमादेवी के एक नायक द्वारा लिखवाये गये शिलालेख का यह अंश पढ़िए :

''वर्ष *(1270 ई.)* के संक्रांति के अवसर पर बोल्लीनायक जो एक काकतीय रुद्रदेव महाराज के लिए द्वार का संरक्षक, अपने ही नयंकर में दस माप ज़मीन क्रंजा गाँव के भगवान कल्याण केशव के मंदिर के नौकरों को अपने राजा रुद्रदेव महाराज की तरक्की के लिए दी।

- बोल्लीनायक ने रुद्रमादेवी को क्यों रुद्रदेव कहा होगा?

चित्र 12.5 शिव को समर्पित महान मंदिर के अवशेष

कृषि तथा मंदिरों को प्रोत्साहन

(Encouragement to Agriculture and Temples)

काकतीयों ने जमीन के बहुत बड़े क्षेत्र में सिंचाई के उद्देश्यों से तालाबों का निर्माण करवाया तथा कुंओं की खुदाई करवायी। राज परिवारों तथा जागीरदार परिवारों के अलावा समाज के अन्य अमीर वर्ग के व्यवसायों के लिए तालाबों का निर्माण करवा कर कृषि का विस्तार किया। इससे तेलंगाना और रायलसीमा आदि क्षेत्रों में सिंचाई होने लगी।

काकतीय राजा बड़ी मात्रा में दान करके मंदिरों के प्रति अपनी श्रद्धा दर्शाते थे। राजपरिवार की स्त्रियाँ जैसे मुप्पामबा और मैलम्मा ने भी भूमि दान दी। अन्य धनी वर्ग की स्त्रियों ने मंदिरों और ब्राह्मणों को ज़मीन,

चित्र 12.6 रामप्पा मंदिर

SCERT TELANGANA

तालाब, नकदी, पशु, आभूषण आदि दान में दिये। कृषि को बढ़ावा देकर वे आय के स्त्रोतो के रूप में उनसे कर और कृषि उत्पादन वसूलते थे।

चित्र *12.7* काकतीयों द्वारा प्रचलित सोने का सिक्का

व्यापार (Trade)

सैनिक, प्रधान और राजा अपनी आय के स्रोतों से उन व्यापारियों से कर वसूलते थे जो मुख्यतः बन्दरगाहों से समुद्री व्यापार करते थे। काकतीय राजा गणपति देव के द्वारा मोटुपल्ली नामक गांव में लिखवाये गये शिलालेख का एक भाग पढ़िए।

“यह अभय शासन जो गणपति देव ने उन व्यापारियों को प्रदान किया जो विदेशी व्यापार के लिए एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीपों, देशों और नगरों को जाते हैं। प्राचीन काल में जो जहाज तूफान में फंस जाते हैं और क्षतिग्रस्त होकर किनारे तक पहुँचते उन जहाजों के व्यापारियों की संपत्ति (सोना, घोड़े, हाथी, आभूषण आदि) बलपूर्वक लूट ली जाती थी। किंतु अब हम अपनी प्रतिष्ठा और पुण्य और उन लोगों के लिए जो अपने जीवन को जोखिम में डालने वाले यात्रियों पर दया करते हैं, उपभोगी कर को छोड़कर सभी कर हटा दिये गये।

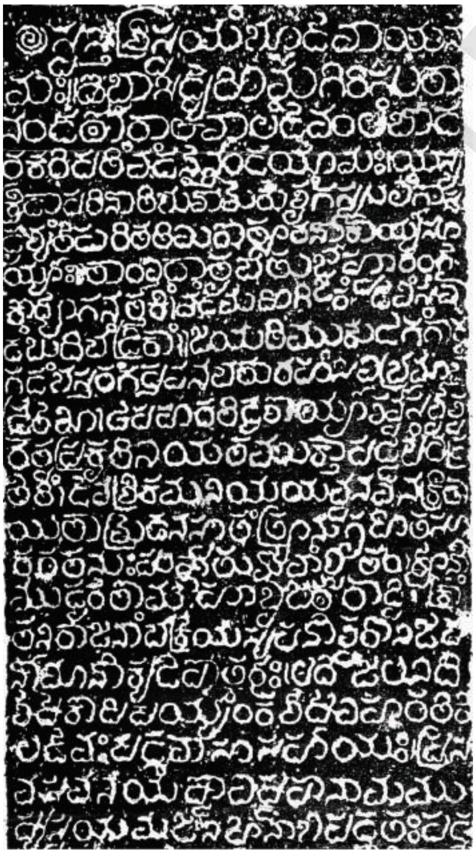

चित्र *12.8* **मोटुपल्ली स्तंभ पर शिला लेख**

शिलालेखों में उन करों का उल्लेख है जो व्यापारियों पर अलग-अलग वस्तुओं के व्यापार के लिए लगाया जाता था।

- प्राचीन काल में राजा व्यापारियों के साथ कैसा व्यवहार करते थे?
- गणपति देव ने व्यापारियों को क्या आश्वासन दिया था?
- राजा गणपति देव विदेशी व्यापारियों को सुरक्षा क्यों प्रदान करते थे?

मार्कोपोलो जो इनमें से एक बंदरगाह गया था कहता है कि यहाँ हीरे और दिखाई देनेवाले सर्वश्रेष्ठ मकड़ी के जाले की तरह महीन कपड़े का निर्यात होता था। उसने यह भी कहा – “शायद ही विश्व में कोई ऐसा राजा या रानी होंगे जो इस कपड़े को पहनकर प्रसन्न न होते हों”।

काकतीयों का पतन

1190 ई. के आस पास दिल्ली में नए साम्राज्य की स्थापना हुई। नए राजाओं को सुल्तान कहा जाता था। ये मूलरूप से तुर्किस्तान से आए थे। उनके पास ऐसी शक्तिशाली सेना थी कि उत्तर और दक्कन के अधिकतर राजाओं को पराजित करने की क्षमता रखते थे। 1323 ई. में सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने काकतीय राजा प्रतापरुद्र देव को पराजित किया। इस तरह काकतीय साम्राज्य का अंत हुआ।

TELANGANA

कुछ वर्षों बाद कर्नाटक में दो नये राज्य स्थापित हुए। जिन्हें बहमनी और विजयनगर साम्राज्यों के नाम से जाना जाता है। इनके बारे में हम अगले अध्याय में अध्ययन करेंगे।

पलनाटी वीर – वह नायक जिसने जाति-प्रथा समाप्त की।

1350 ई में श्रीनाथ द्वारा रचित पलनाटी वीरुला कथा से यह समझने में सहायता मिलती है कि कैसे कई योद्धाओं में एकता स्थापित हुई, इसका मुख्य पात्र बालचंद्रुडु के पास समर्पित साथियों और विभिन्न वर्गों की सेना की टुकड़ी थी। इसमें एक ब्राह्मण था जबकि अन्य, एक लोहार, एक सुनार, एक धोबी, एक कुम्हार और एक नाई था। जो उनके सेवक और कलाकार वर्ग में से थे। बालचंद्रुडु और उनके साथी आपस में इतने समर्पित थे कि वे एक दूसरे को सोदरुलु (भाई) कहते थे। युद्ध में जाने से पहले बालचंद्रुडु की मां ने सभी भाईयों के लिए अपने हाथों से भोजन बनाया। सभी को अलग-अलग थाली (मिट्टी, कास्यं, पत्ता आदि) में परोसा। तब इस भेद पर उसके बेटे ने कहा कि युद्ध में जाने वालों में वर्ग भेद नहीं करना चाहिए। इसके बाद सभी भाई वर्ग भेद मिटाने के लिए एक-दूसरे के थाली में से खाते थे। इस व्यवहार ने प्रचलित परंपरा को तोड़कर इनकी पहचान को आपसी भाग्य से जोड़ दिया।

मुख्य शब्द :

1. योद्धा
2. नयंकर व्यवस्था
3. सामन्त
4. कलाकार

हमने क्या सिखा?

1. आधुनिक युग की सेना के बारे में आप क्या जानते हैं, इनकी तुलना प्राचीनकाल के योद्धाओं से कीजिए। दोनों में क्या अंतर दिखाई पड़ता है? (AS_1)
2. काकतीय समय के राजाओं और मंत्रियों ने कृषि की उन्नति के लिए जलाशय का निर्माण करवाया। यदि वे आज शामन करते तो उन जलाशयों का क्या उपयोग है? (AS_1)
3. आपके विचार में काकतीय राजाओं ने सरदारों पर कैसे नियंत्रण किया? (AS_1)
4. काकतीयों ने शक्तिशाली नायकों को सरदार के रूप में क्यों नियुक्त नहीं किया? (AS_1)
5. उन दिनों महिलाओं का शासन करना क्यों मुश्किल था? क्या आज स्थिति अलग है? कैसे? (AS_4)
6. उन दिनों शक्तिशाली व्यक्तियों की अपनी खुद की ज़मीन होती थी, वे दूसरे किसानों व्यापारियों और कालाकारों से कर वसूल करते थे। क्या शक्तिशाली लोग आज ऐसा कर सकते हैं? कारण बताइए। (AS_4)
7. नयंकर पद्धति अनुच्छेद पढ़िए और टिप्पणी कीजिए। (AS_2)
8. महिलाएँ भी प्रशासन अच्छी प्रकार संभाल सकती है। क्या आप इससे सहमत है? क्यों? (AS_2)

परियोजना कार्य :

1. तीन में से किसी एक कहानी पर संक्षिप्त नाटक का प्रस्तुतीतकरण तैयार करें।
2. अपने गांव या शहर में उद्धव हुए तथ्यों एवं घटनाओं को एक तालिका के रूप में प्रस्तुत करें।
3. अपने इलाके के किसी पुराने मंदिर को जाएँ और पता लगायें कि उसे किसने और कब बनवाया और शिलालेख हो तो उसे देखने का प्रयास करें।

SCERT TELANGANA

अध्याय 13

विजयनगर साम्राज्य के शासक
The Kings of (Vijayanagara)

पिछले अध्याय में हमने योद्धाओं व सामंत राजाओं ने किस तरह गाँवों को अपने अधीन कर लिया था और उनको काकतीय़ राजाओं ने कैसे अपने अधीन कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, यह जाना। दिल्ली सुलतानों के द्वारा वरंगल पर विजय पाते ही काकतीय साम्राज्य का पतन हो गया। बाद में नये योद्धा परिवारों ने एक नए विशाल साम्राज्य की स्थापना की वही विजयनगर साम्राज्य या कर्नाटक साम्राज्य कहलाया।

विजयनगर का अर्थ है– 'विजय का नगर'। यह नगर तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित था। इतिहास के अनुसार इसकी स्थापना दो भाईयो हरिहरराय एवं बुक्काराय ने 1336CE में की। वे विद्यारण्य स्वामी के अनुयायी थे। विजयनगर के राजा विरुपाक्ष (शिव) की आराधना करते थे। विजयनगर के राजाओं ने लगभग 300 वर्षों तक शासन किया। लेकिन किसी एक ही परिवार के राजा द्वारा यह शासन नहीं चला। संगम, सलुवा, तुलवा एवं अर्वती वंश के परिवारों ने एक के बाद एक शासन किया। इनमें कुछ राजा कन्नड भाषा का उपयोग करते थे। लेकिन कृष्णदेवराय ने तेलुगु को समुचित महत्व प्रदान दिया।

तुंगभद्रा नदी के उत्तरी भाग में कुछ नये राज्य उत्पन्न हुए जो बहमनी राज्य कहलाये। आरंभ में यह एक बड़े राज्य की तरह स्थापित हुआ जिसकी राजधानी गुलबर्गा थी। बाद में 1489CE और 1520 यह राज्य में पाँच छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हुआ। जिनमें बीजापुर, गोलकोंडा दो बड़े राज्यों के रूप में उभरे। जिसका अधिकतर भाग आज कर्नाटक, तेलंगाना एवं आंध्रप्रदेश राज्य में हैं। इन राज्यों पर बहुत से सुलतानों एवं योद्धाओं ने शासन किया जिनमें ईरान व अरब के अधिक थे। इन सभी राज्यों ने एक-दूसरे से निरंतर युद्ध करते हुए अपने राज्य का विस्तार करने का प्रयास किया। इन्होंने स्थानीय योद्धाओं और सरदारों को नियुक्त किया जिनके बारे में हम पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं। इन्हीं अधिकारियों के द्वारा गाँवों में किसान, व्यापारियों से कर वसूल कर उन पर नियंत्रण स्थापित किया जाता था।

विजयनगर साम्राज्य के कुछ महत्वपूर्ण राजा

हरिहरराय	(1336-1357CE)
बुक्काराय – I	(1357-1377CE)
हरिहरराय - II	(1377-1404CE)
देवराय - II	(1426-1446CE)
सलुआ नरसिंहराय	(1486-1491CE)
श्रीकृष्णदेवराय	(1509-1529CE)
अच्युतराय	(1529-1542CE)
अलिय रामराय	(1543-1565CE)
वेंकटपति राय	(1585-1614CE)

SCERT TELANGANA

हमने कैसे जाना?

हमें विजयनगर साम्राज्य के शासनकाल की जानकारी शिलालेखों, समकालीन ग्रंथों, लिखित प्रतिलिपियों, तत्कालीन भवनों के अवशेषों आदि से मिली। इन्हें सूक्ष्म दृष्टि से देखने से उनके रहन-सहन, प्रबंध एवं सामाजिक संगठनों के बारे में जाना जा सकता है। विविध देशों से आये यात्रियों जैसे- इटली के निकोलो कोंटी 1420CE में विजयनागर आया। ईरान के शासक अब्दुल रजाक ने 1443CE में यहाँ की यात्रा की। पूर्तगाली यात्री डोमिगों पेइज़ क्रमशः 1520CE में आया तथा 1537CE में न्यूनीज ने लिखा।

विजयनगर शहर

विजयनगर शहर तुंगभद्रा नदी के किनारे बनाया गया था। जो प्राचीन मंदिर वीरुपाक्ष, पम्पादेवी आदि के पास में ही है। अब्दुल रज़ाक ने बताया है कि शहर सात घुमावदार चक्रों (रिंग्स) में सुरक्षित है। इनमे से कुछ की खोज पुरातत्व विशेषज्ञों ने की।

पुर्तगाली यात्री पेस के द्वारा किया गया शहर का वर्णन पढ़िए-

राजा ने दीवारों और मीनारों से घिरे एक बहुत ही मज़बूत शहर का निर्माण किया। ये दीवारें अन्य शहरों की दीवारों की तरह नहीं है, बल्कि सुंदर कारीगरी से बनी हुई है। आपको चौड़ी और सुंदर गलियाँ दिखाई देंगी। जहाँ सुंदर घर हैं। ये सुंदर भवन व्यापारियों के थे। यहाँ आपको रत्न, हीरे-जवाहरत, आदि का प्रयोग हुआ था, विश्व के सभी प्रकार के वस्त्र यहाँ थे। शाम में घोड़ों, सब्जियों, फलों, सागवान की वस्तुओं का मेला लगता था जहाँ इन्हें बेचा जाता था।

चित्र 13.1 तिरुमला मंदिर में प्रतिष्ठित श्रीकृष्ण देवराय और उनकी दोनों पत्नियों की काँस्य की मूर्तियाँ

- सब्जी, फल, घोड़ों को शाम में ही क्यों बेचा जाता था?

पुरातत्व विभाग के विशेषज्ञों के अनुसार नगर को चार भागों में विभाजित किया गया था। पहले भाग में पहाडों पर बनाए गए मंदिर। दूसरे भाग में तराई जहाँ नहरो के द्वारा भूमि की सिंचाई होती थी और तीसरे भाग में भव्य भवन , राज भवन एवं मुख्य नायकों के निवास, चौथे भाग में सामान्य जनता रहती थी। चित्र में दिखाये अनुसार प्रत्येक क्षेत्र को दूसरे से अलग किया गया था।

- विजयनगर, वरंगल शहरों के बीच अंतर और समानता को पहचानिए।

SCERT TELANGANA

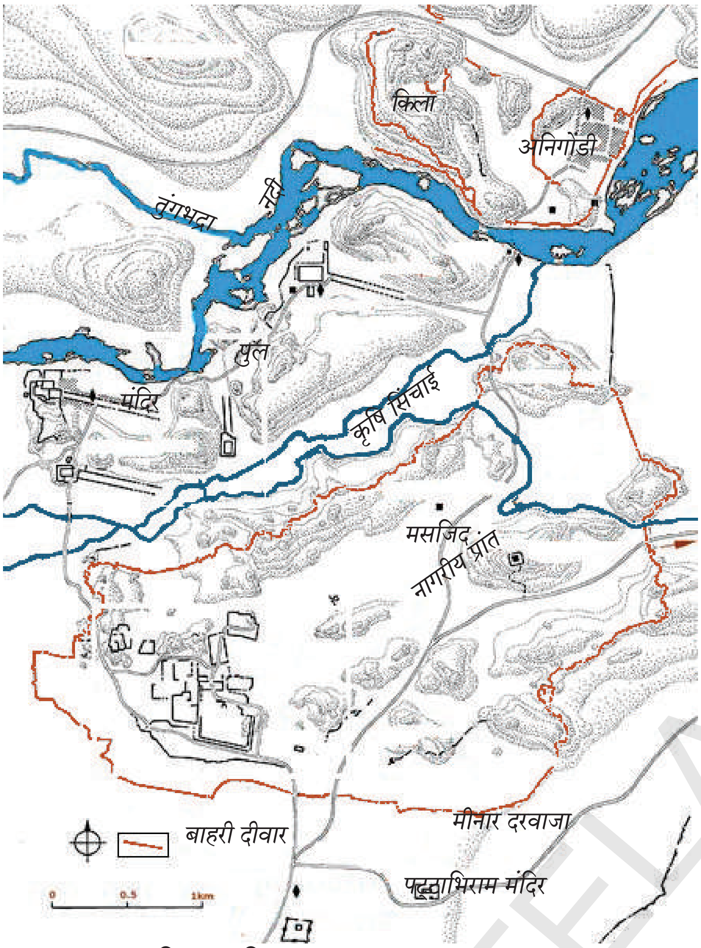

मानचित्र 1: विजयनगर शहर

- आधुनिक नगरों में इस तरह की किलो की दिवारे क्यों नहीं बनायी जा रही हैं?

सेना-सैनिक अधिकारी

(Armies and Military Leaders)

आज महा युद्ध कैसे होते हैं और शक्ति शाली सेना के बारे में भी आपने सुना और पढ़ा होगा।

- देश की सेना कैसे शक्तिशाली बन सकती है?
- आधुनिक सैनिकों द्वारा उपयोगी युद्ध सामग्री कौनसी है?

अब हम विजयनगर के राजाओं ने तत्कालीन समय में युद्ध के लिए किस सामग्री का उपयोग किया था इसे जानेंगे।

विजयनगर के राजाओं ने सैनिक शक्ति को सुदृढ़ बनाने हेतु बहुत धन खर्च किया था। वे अरब और ईरान से विशेष घोड़ों को जहाजों से पश्चिमी तट पर मँगवाते थे। उन्होंने विशाल सैनिकों की नियुक्ति की और कई मजबूत किले बनवाए। विजयनगर के देवराय II ने मुस्लिम योद्धाओं की नियुक्ति करना और अपनी सेना को नयी युद्ध नीति का प्रशिक्षण देना आरंभ। उनके लिए राजधानी में सैनिक शिविरों में मस्जिद भी बनाने की अनुमति दी थी। उन दिनों बंदूकों, तोपो का उपयोग नया था। विजयनगर शासकों ने अपनी सेना में बंदूकों और तोप का उपयोग करना आरंभ किया। भारत में आधुनिक अश्वदल, सैनिकदल दोनों को मिलाकर एक शक्तिशाली सेना तैयार की गई थी।

- उन दिनों युद्ध में तेज गति के लिए अश्वों का उपयोग किया जाता था, आज किसका उपयोग किया जा रहा है?
- हाथी धीरे-धीरे चलते है पर आक्रमण करने में कुशल होते है आज उनकी जगह किनका उपयोग हो रहा है?

('Captains of the Troops' – the Amarnayakas)

सैनिक दल के नेता-अमरनायक

पूरे राज्य पर वास्तव में इन सैनिकों का नियंत्रण एवं प्रशासन था। वे कौन थे और क्या काम करते थे आइए अब हम इसकी जानकारी प्राप्त करेंगे कि डोमिंगों पेईज़ के द्वारा लिखे गए विवरण को पढ़े जो श्रीकृष्ण देवराय के समय विजयनगर के संदर्भ में था। राजा के पास लाखों सैनिकों के अलावा *35,000* अश्वदल, किसी भी समय, कहीं पर भी युद्ध के लिए तैयार रहा करते थे। यह भय दूसरे राजाओं को हमेशा रहता था।

SCERT TELANGANA

सैनिक दल के अधिकारी उसमें कुलीनवर्गों के थे। इन्हें राज्य में ज़मीन, नगरों, गांवों पर पूरा अधिकार सौंपा गया था। इनमें कुछ अधिकारी लाखों स्वर्ण सिक्कों को कर के रूप में वसूल करते थे और कुछ दो, तीन, पांच सौ हजार सिक्के वसूल करते थे। राजा कर वसुली के अनुसार सैनिक दल के नेता को (पैदल, अश्वदल, गजदल) सेना रखने का अधिकार देता था। इन्हें कार्य के लिए हमेशा तैयार रखा जाता था। राजा इनके राजस्व कर के आधार पर सेना की सख्या निश्चित करता था। यही नहीं राजा को वार्षिक भुगतान भी देते थे। दल के नेता के द्वारा भेजी गई सेना के अतिरिक्त राजा की सेना भी रहती थी जिसका वेतन राजा ही देता था।

चित्र 13.2 हजारा रामालय का शिलारथ.

उपरोक्त अनुच्छेद ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- श्रीकृष्ण देवराय से अन्य राजा क्यों भयभीत रहते थे ?
- विजयनगर साम्राज्य के गाँव एवं नगरों पर कौन नियंत्रण करता था ?
- क्या सभी को समान आय मिलती थी?
- नेता को गांवों के बदले में राजा के लिए क्या करना पड़ता था?
- क्या राजा नेता की सेना पर ही आधारित रहते थे ?

सेनापति को नायक के रूप में भी नियुक्त किया जाता था इन्हें ही 'अमरनायक' कहा जाता था। इन नायकों पर 'अमरा' राजस्व वसूलने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी अमरा का अर्थ है- निर्धारित प्रांत में राजस्व कर वसूल का अधिकार। अर्थात, इन्हें दिए गए गांव, नगरों से राजस्व वसूलकर उसके उपयोग का अधिकार दिया गया। इतना ही नहीं बल्कि इसी आय से सैनिक दलों के भरण-पोषण का भार भी इन पर था। इनके अधीन प्रांतों पर इन्हें शासन का अधिकार भी प्राप्त था। उन्हें न्याय संबंधी अधिकार भी प्राप्त था। अपराधियों को कठोर दण्ड देने का अधिकार भी इन्हें था। यह पद्धति दिल्ली सुलतानों के समान थी। इन्होंने भी कुलीन एवं अमीरों को 'इक्ता' नामक राजस्व कर वसूलने का अधिकार दिया था।

अधिकतर अमरनायक तेलुगु योद्धा थे। ये सैनिकों को अपने गांवों या सगोत्री लोगों में से ही नियुक्त करते थे और उन्हें प्रशिक्षण देते थे। ये सेनाएँ राजा से भी अधिक मान नायकों को ही देती थी। कई शक्तिशाली नायक जैसी सालुवा नरसिंहा या नरसा नायक जो शक्तिशाली नायक थे वे विशाल भू-भाग पर अपना अधिपत्य स्थापित कर कुछ संदर्भों में विजयनगर राजाओं

SCERT TELANGANA

को ही चुनौती दे देते थे। वास्तव मे ये इतने शक्तिशाली थे कि राजा की मृत्यु के उपरांत राज्यभार संभालकर स्वयं को राजा घोषित कर लिया।

आइए तुलना करें

आपने पढ़ा है कि चोल साम्राज्य में जमींदारों की परिषद के द्वारा गाँवों का प्रशासन किस प्रकार किया जाता था। किस प्रकार राजा इस परिषद की सहायता से राजस्व (रेवेन्यु) वसूलते थे। सेना और नायक की शक्ति बढ़ने के साथ-साथ विजयनगर साम्राज्य में भी परिवर्तन आए! आपने देखा है कि गाँवों और नगरों पर नियंत्रण का अधिकार इन नायकों को ही दिया गया था।

- 'अमरनायक' व्यवस्था के कारण गाँवों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा? अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।
- छठी कक्षा में आपने पढ़ा की भारत में गांव, नगर का शासन कैसे चलाया जाता था। क्या आप इसकी तुलना विजयनगर साम्राज्य से कर अंतर बता पाओगे?

श्री कृष्णदेवराय एक महान शासक

श्री कृष्णदेवराय का शासन समय 1509 ई. से 1529 ई. तक था। वह एक शक्तिशाली सेनापति था जिसने बहमनी राजा गजपतियों के विरोध में विजयनगर सेना का संचालन और सफलता पूर्वक किया। इसने कर्नाटक, आंध्र, तमिलनाडु क्षेत्र के कई विरोधी नायकों का दमन किया। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रान्त पर उन्होंने अपना आधिपत्य स्थापित किया। इन्होंने विशेषरूप से कृष्णा नदी के दक्षिण में और पूर्वी तट के बंदरगाहों पर नियंत्रण पाया।

इसी समय पश्चिमी तट के कुछ बंदरगाह जैसे गोवा पर पुर्तगालियों ने अधिकार किया। श्री कृष्णदेवराय ने प्रकार के घोड़े, विस्फोटक सामग्री आदि को प्राप्त करने के लिए पुर्तगालियों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये। इसने पुर्तगाली सेना को भी युद्ध में शामिल किया।

प्रति वर्ष विजयदशमी के दिन धूमधाम से त्योहार बनाया जाता था। साथ ही सैनिक दलों की प्रदर्शनी आयोजित की जाती थी। उस प्रदर्शनी में बहुत भारी संख्या में भाग लेकर सभी सैनिक दलों के सेनापति तथा अमरनायकों (Amarnayakas) द्वारा राजा को धन राशि समर्पित की जाती थी। श्री कृष्णदेवराय अपने दक्षिण साम्राज्य में स्थित मंदिरों पर विशेष ध्यान रखते थे। उन्होंने स्वयं तिरुपति, श्रीशैलम, अहोबिलम् आदि पुण्य क्षेत्रों के दर्शन कर अधिक मात्रा में दान-दक्षिणा अर्पित की।

श्री कृष्णदेवराय के शिलालेखों से यह मालूम होता है कि उन्होंने कई युद्धों में विजय हासिल कर प्राप्त धन राशि

चित्र 13.3 हजार रामालय का एक इसकी कहानी लिखिए झलक। क्या इन चित्रों पर आधारित लिख सकते है?

चित्र 13.4 कांचीपुरम के एकांबेश्वर मंदिर का मुखद्वार

को भारत के बड़े-बड़े मंदिरों में बाँट दिया । इन देवालयों में इनकी गौरव स्मृति के लिए "रायगोपुरम्" नामक मुखद्वारों का निर्माण किया गया था। अपनी दानशीलता के कारण ये दक्षिण भारतीयों के हृदय में अंकित रह गए। इनके द्वारा विजयनगर में भी सुंदर मंदिरों का निर्माण किया गया।

श्री कृष्णदेवराय स्वयं तेलुगु साहित्य के प्रसिद्ध कवि थे। इन्होंने "अंडाल" नामक तमिल भक्त कवयित्री की जीवनी पर आधारित "आमुक्त मालयदा" नामक ग्रंथ लिखा। इनके दरबार में आठ कवि थे, जिन्हें 'अष्ट दिग्गज' कहा जाता था। धूर्जटी, अल्लसानी पेद्दना, तेनाली रामकृष्णा, नन्दी तिम्मणा, पिंगली सूरन्ना, रामराजाभूषण, माद्य्यागारी मल्लना, अय्यलाराजू, रामभद्र नामक इन आठ कवियों ने अपना स्थान अलंकृत किया था।

श्री कृष्णदेवराय के वंशज अच्युतदेवराय एवं अलियरामाराय के काल में विजयनगर राजाओं के महत्व एवं बल में बढ़ोतरी हुई। इन्होंने बहमनी राजाओं के राज्य व्यवहार में हस्तक्षेप किया। बहमनी अकेले विजयनगर से लड़ने में असमर्थ थे। इनके निरंतर हस्तक्षेप के परिणाम स्वरूप बहमनी पांच राजाओं ने 1565 ई. में एकजुट होकर रक्कासी तंगडी या तल्लीकोटा युद्ध में रामराय को पराजित कर विजयनगर साम्राज्य को लूटकर इसका विनाश किया। इनके वंशज ने तिरुपति के समीप चंद्रगिरि को राजधानी बनाया। लेकिन वे पूर्ववैभव को प्राप्त करने में असफल रहे। कुछ प्रांतों पर सुलतानों के आक्रमण के बाद बचे भू-भाग पर वहां के नायकों ने अपने आपको स्वतंत्र राजा घोषित कर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

गोलकोण्डा के कुतुबशाही (1512-1687)

कुतुबशाही कार्य का काल	
कुली कुतुबशाह	(1512-1543)
जमशेद कुली	(1543-1550)
इब्राहिम कुतुबशाह	(1551-1580)
मोहम्मद कुली कुतुबशाह	(1580-1612)
मोहम्मद कुतुबशाह	(1612-1626)
अबदुल्ला कुतुबशाह	(1626-1672)
अबदुल हसन तानशाह	(1672-1687)

पिछले अध्याय ने हमने तेलंगाणा क्षेत्र के काकतीय साम्राज्य के बारे में पढ़ा था। काकतीय साम्राज्य के समाप्ति के पश्चात उनके उप नायकों ने स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना की। इनमें से रचकोण्डा और देवरकोण्ड़ा अधिक बलशाली थे और उन्होंने विजयनगर साम्राज्य एवं बहमनी साम्राज्य को चुनौती दी। 1512 में तेलंगाणा क्षेत्र के बहमनी साम्राज्य के गवर्नर कुली कुतुबशाह ने स्वयं का स्वतंत्र घोषित किया और गोलकोण्डा में कुली कुतुबशाह साम्राज्य की स्थापना की। कुली कुतुबशाह ने वरंगल, कोण्ड़ापल्ली, एलुरू और राजमहेन्द्री के किलों पर विजय प्राप्त कर-कर शासन का विस्तार किया। गोलकोण्डा तेलंगाना का प्रमुख भाग था। उनके उत्तराधिकारियों ने 1687 तक शासन किया।

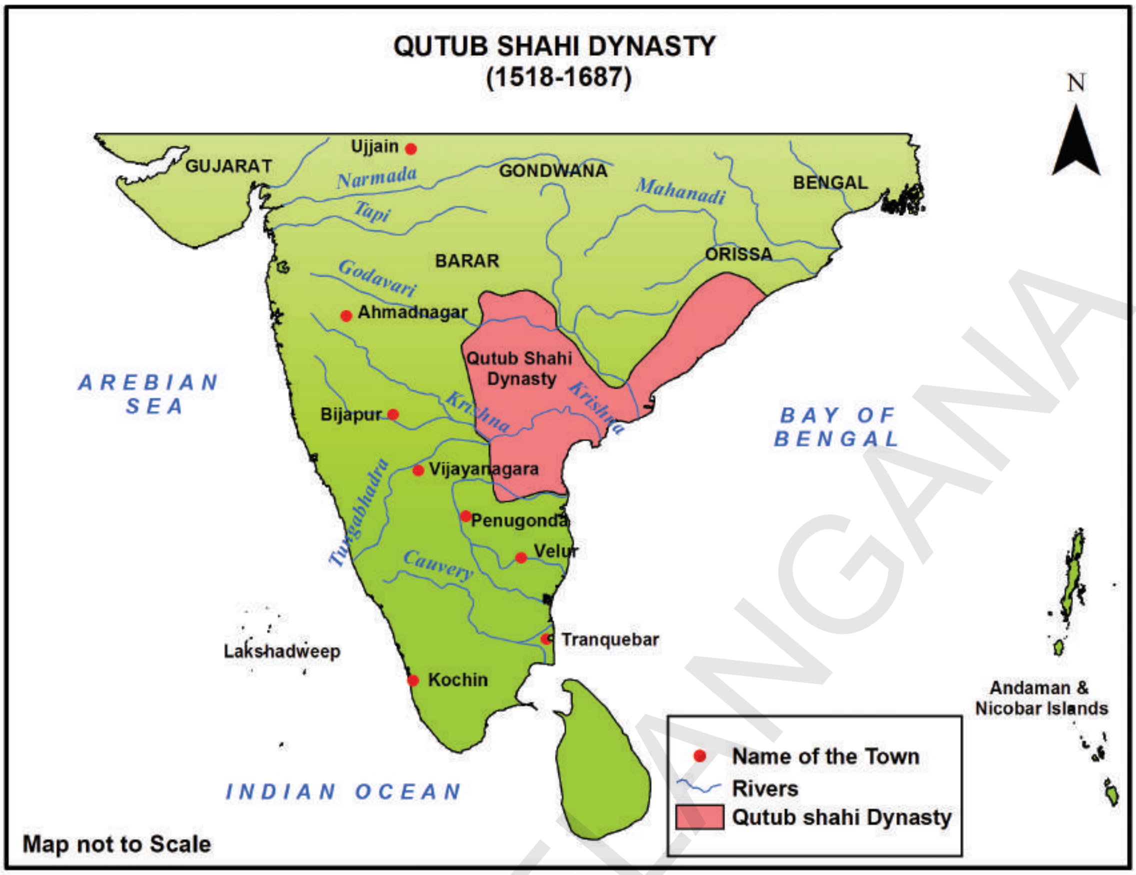

चित्र 2: कुतुबशाही साम्राज्य

काकतीय राजाओं के समान ही इब्राहीम कुली कुतुबशाह (1550-80) ने तेलुगु साहित्य को बढ़ावा दिया, ब्राह्मणों एवं मन्दिरों को सहायता दी, तथा विशाल सिंचाई कार्य में संलग्न रहा। इब्राहिम कुली कुतुबशाह के काल में प्रसिद्ध तेलुगु कवि सिंगानाचार्युडु, अंदकी गंगाधारूडु, कन्दुकुरू रुद्रकवि और पोन्नमंटी तेलागानारय्या, इब्राहिम कुली कुतुबशाही द्वारा सम्मानित किये गये। कवियों ने द्वारा इब्राहिम कुली कुतुबशाह की प्रशंसा मालकीभा-रामा के रूप में की। उन्होंने अपनी सेवा में कई नायकों को नियुक्त किया। काकतीय के प्रताप रूद्रा से विशेष रूप से योद्धा समर्थको ने सम्मान दिया। इब्राहिम ने उन्हें अग्रिम क्षेत्र में सुविधाजनक अधिकार दिया तथा बड़े किलों का नियंत्रण भी दिया।

तेलंगाना के केन्द्रीय क्षेत्र में कुली कुतुबशाह ने काकतीयों के समान सिंचाई पद्धति को अपनाना चाहा क्योंकि वह क्षेत्रीय परिस्थिति से अवगत हो चुके थे। इब्राहीम कुतुबशाह के काल में जब वे राजधानी गोलकोंडा में रहते थे उस समय उन्होंने 1562 में हुसैनसागर झील का निर्माण करवाया। उन्होंने इसका नाम हजरत हुसैन शाह वाली सूफी संत के नाम पर रखा, जिन्होंने उसे आकार देने में सहायता की। इसे कृत्रिम रूप से विकसित किया गया जिसमें वर्ष भर मूसी नदी से जल भरा रहता था। हैदराबाद के लिए यह शुद्ध पेय जल का एक मुख्य स्रोत बन गया। इब्राहीमपटनम का टैंक इसके द्वारा बनाया गया। यह भी समझा जाता है कि मूसी नदी पर पुराना पुल भी बनाया गया।

इब्राहिम के पुत्र मोहम्मद कुली एक अच्छे निरीक्षक थे और हैदराबाद शहर की योजनाओं एवं इमारतों को बनाने के लिए उत्तरदायी थे। इनके समय में मीर मोमीन अस्तरबादी हैदराबाद शहर के प्रसिद्ध शिल्पकार (वास्तु आकार देने वाला) कलाकार थे। कुली कुतुबशाह के प्रधान मंत्री के रूप में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन्होंने चारमीनार के लिए नई योजनाएँ नए हैदराबाद शहर के अनुरूप तैयार की। मोहम्मद कुली कुतुबशाह ने मक्का मस्जिद और जामामस्जिद का निर्माण किया। इसका निर्माण मक्का की बड़ी मस्जिद के आकार में किया। कुली कुतुबशाह ने मक्का से लाई गई मिट्टी से ईंटे तैयार करवा कर उससे केन्द्रीय वृत खण्ड (आर्क) बनवाया और उसे मस्जिद का नाम दिया। मस्जिद के एक कमरे में हजरत मोहम्मद के बाल भी थे। कुली कुतुबशाह ने चारमिनार भी बनवाया जो हैदराबाद की जानी मानी पहचान का चिह्न है। वह स्वयं भी परशियन एवं उर्दू भाषा का कवि था। उन्हीं के योगदान के कारण दक्षिणी उर्दू को साहित्यिक भाषा का स्तर प्राप्त हुआ।

चित्र 13.5 चारमीनार

मोहम्मद कुली कुतुबशाह की पुत्री हयात बक्शी बेगम थी। उन्होंने हैदराबाद के पास हयातनगर में हयात बक्शी मस्जिद बनवायी। उन्हें माँ साहेबा भी कहते थे। मसब टैंक, माँ साहेबा टैंक का अपभ्रंश शब्द है।

अब्दुल्ला कुतुब शाह कविता एवं संगीत का प्रेमी था। उन्होंने प्रसिद्ध पदम लेखक क्षेत्रय्या को अपने दरबार में आमंत्रित कर सम्मानित किया। कुतुबशाही साम्राज्य के अब्दुल-हसन-शाह अन्तिम व सबसे प्रसिद्ध शासक थे। उन्होंने पालंचा देशा में कंचाराल गोप्पन्ना (इन्हें रामदास भी कहते थे) को तहसीलदार (कर विभाग में प्रमुख) के रूप में नियुक्त किया। रामदास ने भद्राचलम के राम मंदिर बनाने के लिए जनता से वसूल किये चंदे का उपयोग किया जिससे भगवान राम, लक्ष्मण एवं सीता की मूर्तियाँ के लिए आभूषण भी खरीदे। जनता के पैसों का इस प्रकार उपयोग किए जाने पर ताना शाह ने उन्हें जेल में डाल दिया तथा सच्चाई जानने के बाद उन्हें आजाद किया।

कुली कुतुबशाह के समय गोलकोण्डा अपने हीरे के कारण विश्व प्रसिद्ध था। उस समय मछलीपट्टनम प्रसिद्ध बन्दरगाह था जहाँ से दक्षिण पूर्वी एशिया, चीन पर्शिया, अरब और यूरोप के साथ व्यापार किया जाता था। बड़े-बड़े कारवाँ हीरे-जवाहरात, सोना, चाँदी लेकर तटीय क्षेत्र से गोलकोंडा जाते थे।

प्रसिद्ध सात कुतुब शाही शासकों की समाधियाँ हैदराबाद में गोलकोण्डा किले के पास स्थित इब्राहिम बाग में है। इनकी शैली ईरानी एवं भारतीय शैली का अद्भुत मिश्रित रूप है। कुली कुतुब शाह के बुर्ज (मिनार) की वास्तुकला से मुगल शासक शाहजहाँ प्रभावित हुए और सफेद संगमरमर से ताजमहल का निर्माण किया। ये पत्थरों में जटिल नक्शाकारी से बने हुए हैं तथा चारों और सुंदर बगीचों से घिरे हुए हैं।

मुगल, इब्राहिम कुतुबशाह के समय से ही उस संपन्न साम्राज्य पर जीत प्राप्त की तक में थे तथा 1687 में औरंगजेब के नेतृत्व में गोलकोण्डा पर विजय प्राप्त की।

मुगलों ने कुतुबशाहियों की समावेशी नीति (इन्क्लुसिव पॉलिसी) को नहीं अपनाया और स्थानीय लोगों को अधिकार से हटा कर बाहर से लोगों को लाकर नियुक्त किया उन्होंने अधिक कर प्राप्त करने का प्रयत्न किया। कर ठेकेदारी प्रणाली को अपनाया। इस व्यवस्था के

SCERT TELANGANA

अन्तर्गत सरकार ने कर जमा करने के लिए नीलामी पद्धति को अपनाया जिसमें उस क्षेत्र के कर को जमा करने का अधिकार ऊँची बोली बोलने वाले को अधिकार दिया जाता था। ये अधिकतर उस क्षेत्र के शक्तिशाली लोग या साहूकार होते थे तथा किसानों और कलाकारों के अधिक आय प्राप्त करने के विरोधी थे। यह व्यापक असंतोष, अकाल, स्थानांतरण तथा जनसंख्या में पतन का कारण बना।

चित्र 13.6 गोलकोण्डा किला

- कुतुबशाही साम्राज्य के मानचित्र को देखिए तथा गोलकोण्डा, मछलीपट्टनम, भद्राचलम आदि को अंकित कीजिए।
- आपके विचार से गोलकोण्डा साम्राज्य की आर्थिक स्थिति कुतुबशाह के काल में संपन्न थी जबकि आरम्भिक मुगल शासन के समय इसका पतन क्यों हुआ?

मुख्य शब्द :

1. अमरनायक
2. अमीर
3. इक्ता
4. पुरातत्व विशेषज्ञ
5. रायगोपुरम्

हमने क्या सीखा?

1. ओरुगल्लु नरेशों की तरह विजयनगर के नरेशों ने नगर के बीचोबीच अपना निवास स्थान न चुनकर एक विशेष स्थान का चयन क्यों किया होगा? (AS_1)
2. अमरनायक शक्तिशाली क्यों थे? (AS_1)
3. अमरनायकों एवं काकतीयों के नयंकरों की तुलना कीजिए? किस रूप में उनमें मतभेद एवं समानताएँ थी?(AS_1)
4. विजयनगर सेना पश्चिमी तटीय आयात पर क्यों निर्भर थी? (AS_1)
5. श्री कृष्णदेवराय ने अपने राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए जिन शत्रुओं से युद्ध किया, उनकी तालिका बनाइए। (AS_3)
6. विजयनगर राजाओं द्वारा तेलुगु साहित्य में क्या सेवाएँ दी गई? (AS_6)
7. भारत के मानचित्र में निम्न स्थान दर्शाइए। (AS_5)
   अ) हम्पी आ) बीजापूर इ) तिरूपति ई) श्रीशैलम उ) कांची ऊ) तुंगभद्रा नदी
8. तेलुगु साहित्य को समर्थन देने वाले विभिन्न साम्राज्यों की चर्चा कीजिए। (AS_1)
9. कुतुबशाही शासकों के कला एवं स्थापत्य का वर्णन कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 14

मुगल साम्राज्य
(Mughal Empire)

1526 CE में बाबर के आक्रमण से भारत में एक नयेयुग मुगल का आरंभ होता है। मुगलो ने1550 और 1700 ई के बीच, दिल्ली के आस पास से लेकर लगभग समूचे उपमहाद्वीप में अपने साम्राज्य की स्थापना की। उनके राज्य के पतन होने के बाद भी परवर्ती शासकों को उनकी प्रशासन व्यवस्था, शासन विचार और स्थापत्यकला प्रभावित करती रही है। आज भारत के प्रधान मंत्री द्वारा स्वतंत्रता दिवस के दिन जिस लाल किले की दुर्ग-प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित किया जाता है वह मुगल शासकों का आवास था।

जहाँगीर को दर्शाता सिक्का

मुगल कौन थे?

मुगल मध्य एशिया के देश उज़्बेकिस्तान और मंगोलिया के शासक परिवार के लोग थे। प्रथम मुगल बादशाह बाबर (1526 - 1530 ई), को अपने पूर्वजों से प्राप्त साम्राज्य को दूसरे राजाओं के आक्रमण के कारण छोड़ना पड़ा। उसके बाद कई साल घूमने के बाद उसने सन 1504 ई में काबूल को हस्तगत कर लिया 1526 ई में दिल्ली के सुल्तान,इब्राहीम लोदी को हराकर दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया।

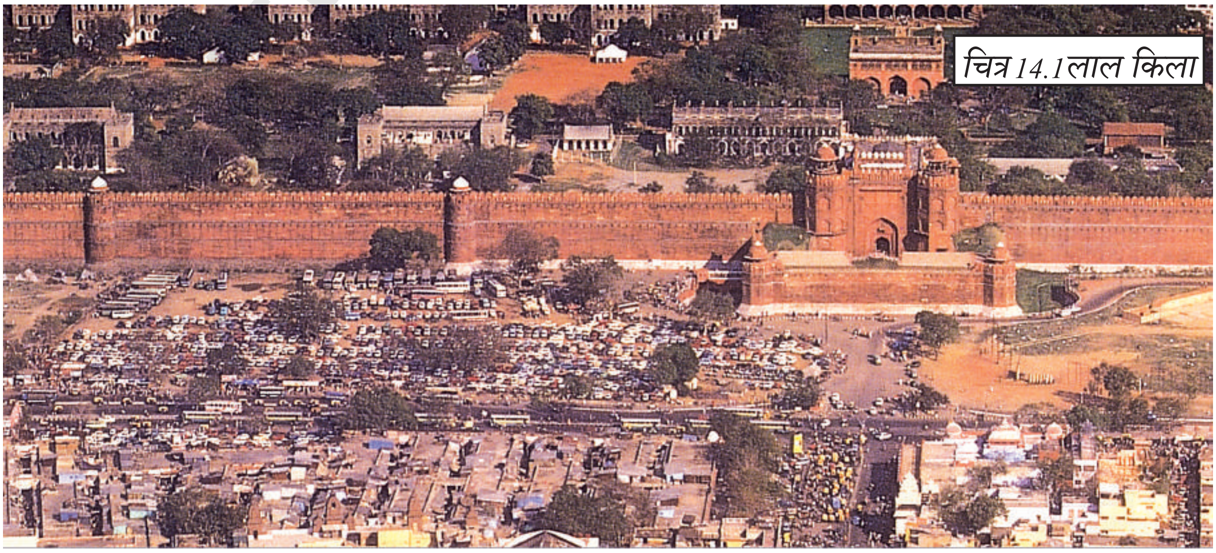

चित्र 14.1 लाल किला

SCERT TELANGANA

प्रमुख मुगल सम्राट–मुख्य अभियान और घटनाएँ (Important Mughal Emperors – Major compaigns and events)

बाबर 1526-1530 **ई. (बाएँ)**

सन् 1526 ई.– में इब्राहिम लोदी को हराकर आगरा और दिल्ली को अपने अधीन कर लिया।

हुमायूँ- 1530-1556 **ई.(दाएँ)**

शेरखान ने हुमायूँ को हराकर, ईरान तक खदेड़ दिया। ईरान में हुमायूँ ने सफाविद शाह से सहायता प्राप्त की। फिर उसने 1555 ई. में दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया लेकिन उसी वर्ष ही एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हुई।

अकबर – 1556-1605ई. (बाएँ)

जब अकबर बादशाह बना तब उसकी आयु तेरह वर्ष थी। बहुत ही शीघ्र उसने बंगाल, मध्यभारत, राजस्थान और गुजरात को जीत लिया। उसके बाद इसने अफगानिस्तान,कश्मीर और दकन के कुछ प्रांतों पर विजय प्राप्त की। उसके साम्राज्य को मानचित्र 1 में देखिए।

जहाँगीर 1605-1627 ई. (ऊपर)

अकबर के द्वारा प्रारंभ किये गए सैनिक अभियान को इसने जारी रखा। कोई महत्वपूर्व विजय प्राप्त नहीं की।

शाहजहाँ- 1627-1658 ई.(नीचे बाएँ)

दक्षिण में मुगलों के अभियान को जारी रखा। उसने अपने साम्राज्य के कुलीन और सरदारों के विद्रोह का सामना किया। सन्1657-1658 ई. में उत्तराधिकार के लिए शाहजहां के पुत्रों के बीच संघर्ष हुआ। औरंगजेब की विजय हुई और उसके तीनों भाई मारे गये। शाहजहाँ को कैद कर दिया गया जिसके कारण उसे अपना शेष जीवन आगरा की जेल में गुज़ारना पड़ा।

(दाएँ) औरंगजेब 1658-1707 ई.

इन्होंने असम को जीतने का प्रयास किया लेकिन उन्हें अपने साम्राज्य के अफगानिस्तान, असम, राजस्थान, पंजाब, दक्षिण आदि प्रांतों से अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। गुरु तेग बहादुर, गोविंद सिंह, शिवाजी और स्वयं उसके पुत्र अकबर ने उनके विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। अकबर ने उनका विरोध किया। स्वतंत्र मराठा साम्राज्य की स्थापना में शिवाजी विजयी हुए। औरंगजेब ने सन् 1685 में बीजापुर को, सन् 1687 में गोलकोंडा को जीत लिया। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकारी के लिए संघर्ष हुआ।

दूसरे शासकों के साथ मुगलों के संबंध

उस समय भारत के विभिन्न प्रांतों में अनेक राजाओं और सरदारों का शासन था। मुगलों ने इनको अपने अधीन कर लिया था। उन्होंने पुराने राजाओं और सरदारों को अपने पुराने राज्यों पर शासन करने की अनुमति दी और उनसे राजस्व वसूल किया। परन्तु ये राजा आपस में युद्ध नहीं कर सकते थे और उन्हें बादशाहों के लिए हमेशा सेना तैयार रखनी होती थी।

मुगल शासकों ने उन राजाओं से जो इनके अधिकार को स्वीकार नहीं करते थे, निरंतर युद्ध करके उनको अपने नियंत्रण में कर लिया। जब मुगल शक्तिशाली बन गये, अनेक राजाओं ने अपने आप उनकी समर्पित किया। अपनी पुत्रियों का विवाह मुगल परिवार में किया। लेकिन कुछ लोगों ने इसका विरोध भी किया। चित्तौड़ के सिसोदिया राजपूतों ने लंबे समय तक मुगलों के अधिकार को स्वीकार नहीं किया। जब वे पराजित हो जाते थे तो संधि के अनुसार उनका भूभाग उन्हें सुपुर्द कर दिया जाता। अपने विरोधियों को केवल हराना उनका निष्कासन न करना। इससे अनेक राजा और सरदार मुगलों से प्रभावित हुए। मित्रता के, प्रतीक रूप में अनेक स्थानीय राजाओं की राजकुमारियों से मुगलों ने विवाह किया। जहाँगीर की माता अंबर (आधुनिक जयपुर) के राजपूत राजा की पुत्री थी। शाहजहाँ की माता जोधपुर के राजपूत राजा की पुत्री थी।

मनसबदार और जागीरदार (Mansabdas and Jagirdars)

विभिन्न प्रांतों तक साम्राज्य का विस्तार होने के कारण मुगलों ने विभिन्न प्रकार के लोगों की नियुक्ति की। जिसमें तुर्की अमीरों के साथ साथ ईरानी, भारतीय मुसलमान, अफगान, राजपूत, मराठा और अन्य वर्ग के थे। जो मुगल सेवा में भर्ती होते थे उनको मनसबदार (Mansabdar)

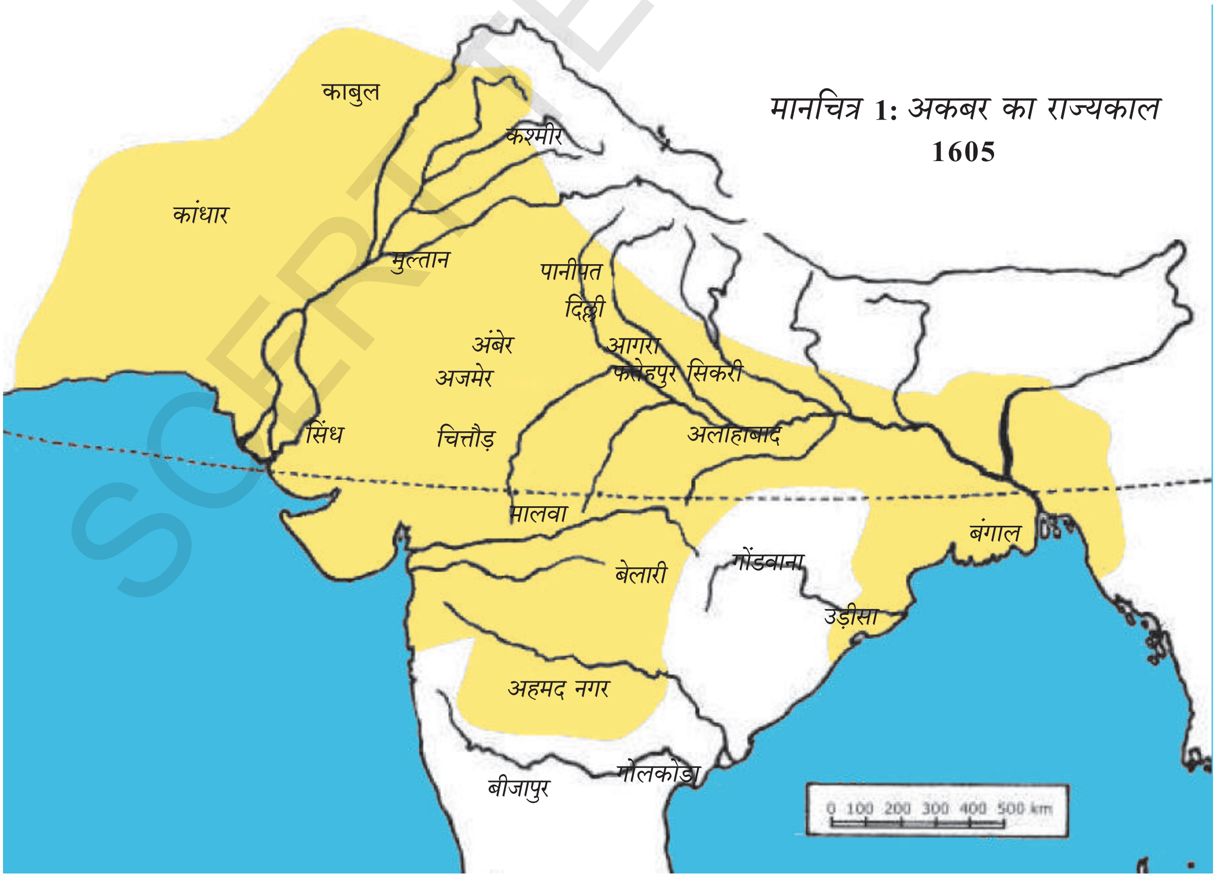

मानचित्र 1: अकबर का राज्यकाल
1605

SCERT TELANGANA

चित्र 14.2 अपने सवारों के साथ सैनिक यात्रा पर मनसबदार .

कहा जाता और उनको सैनिक पद दिया जाता । ये सब प्रत्यक्ष रूप से सम्राट के अधीन होते थे। इनको राज महल की रक्षा, किसी प्रांत का प्रशासन करने, नये राज्य को जीतने या विद्रोह को दबाने के काम सौंपे जाते थे।

मुगलों ने एक राजनैतिक व्यवस्था का विकास किया, जिसमें बादशाह की इच्छा के बिना मनसबदार स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर सकते थे। आपको याद होगा कि विजयनगर साम्राज्य में नायक स्वतंत्र होकर इतने शक्तिशाली बने कि खुद को सम्राट घोषित कर दिया था। ऐसी स्थिति पैदा न हों, इसके लिए मुगल शासक मनसबदारों का दो-तीन वर्ष में एक स्थान से दूसरे स्थान पर तबादला किया करते थे ताकि वे स्थाई रूप से एक स्थान पर रहकर शक्तिशाली बनें।

मनसबदारों के सैन्य उत्तरदायित्व के लिए यह आवश्यक था कि वे एक निश्चित संख्य में घुड़ सवारों अथवा अश्वारोही की व्यवस्था करे। मनसबदार अश्वारोहियों का निरीक्षण करवाने, उनके घोड़ो का पंजीकरण कराकर उनके घोड़ों पर निशान लगाने के लिए अधिकारियों के पास लाते थे तब वेतन देने के लिए धन प्राप्त करते थे।

मनसबदार का बेटा स्वतः मनसबदार नहीं बन सकता था क्योंकि यह पद पैतृक नहीं था। मनसबदार के बेटे को नियुक्त करना या नहीं करना बादशाह के निर्णय पर निर्भर था। वास्तविकता में वह मनसबदार के निधन के बाद उसकी सारी सम्पत्ति ले लेता था।

विजयनगर के नायकों की तरह मुगल मनसबदार भी अपना वेतन राजस्व कर द्वारा प्राप्त करते थे जो जागीर कहलाता था। जो नयंकर की तरह ही था किंतु नायकों की तरह नहीं। अधिकतर मनसबदार अपने जागीर या प्रशासन क्षेत्र में निवास नहीं करते थे। वे जागीर के अंतर्गत गांवों से कर वसूल करते और बादशाह के पास भेजते थे। मनसबदार देश के किसी भी भाग में व्यस्त रहने पर उनके कर्मचारी जागीर के क्षेत्र से कर वसूल करते। जागीर का प्रशासन बादशाह के निरीक्षण में अन्य अधिकारी किया करते थे अधिकारी यह सुनिश्चित करते थे कि जागीदार के कर्मचारी निर्धारित कर से अधिक न वसूल करे। जागीरदारों का भी प्रति दो या तीन वर्ष में एक बार

स्थानांतरण कर दिया जाता था।

अकबर के युग में जागीरों का ध्यानपूर्वक मूल्य निधारण किया गया ताकि जो कर वसूल हो वह मनसबदार के वेतन के बराबर हो। औरंगजेब के युग तक मनसबदारों की संख्या में काफी वृद्धि हुई, इस कारण जागीर प्राप्त करने वालों को लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। ये और अतिरिक्त अन्य कारणों से जागीरों की संख्या का अभाव हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि जागीदार अपनी जागीर से जितनी अधिक सम्भावना हो उतना कर प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगे। औरंगजेब शासन के अंतिम दिनों में इन परिस्थितियों को वश में करने में असमर्थ हो गया जिसके कारण किसान को विपत्तियों का सामना करना पड़ा।

चित्र 14.3 शाहजहाँ के समय शिलालेख पर चित्र जिसमें उनके पिता के शासनकाल में भ्रष्टाचार दर्शाया गया है। 1.एक भ्रष्ट अधिकारी रिश्वत लेता हुआ और 2.एक कर वसूल करनेवाला गरीब आदमी को सजा देते हुए

जब्त और जमींदार (Zabt and Zamindars)

मुगल शासकों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि उत्पादन पर कर था। अकबर के वित्त मंत्री टोडरमल ने1570-1580ई में दस वर्ष के लिए फसल की पैदावार, उसका मूल्य और खेती योग्य भूमि का सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण के आधार पर अपने प्रत्येक फसल पर नकद कर निर्धारित किया। प्रत्येक प्रांत को वैयक्तिगत फसलों के लिए उसकी राजस्व कर की अपनी सूची के साथ राजस्व चक्रों में बाँटा गया। इस कर व्यवस्था को जब्त कहते थे। इसका प्रचलन उन क्षेत्रों में था जहाँ मुगल शासन के प्रबंधकों ने भूमि का सर्वेक्षण कर ध्यानपूर्वक कर का निर्धारण किया। गुजरात और बंगाल के प्रांतों में यह सम्भव नहीं हुआ था।

ज्यादातर क्षेत्रों में कर का भुगतान देहातों का अभिजात वर्ग- जैसे क्षेत्रीय मुखिया या सरदार के द्वारा किया जाता था। मुगलों द्वारा जमींदार का अर्थ उन प्रतिनिधियों से था, जो क्षेत्रीय गाँव का मुखिया हो या शक्तिशाली सरदार। मुगल बादशाह जमीनदारों की नियुक्ति नहीं करते थे किंतु ये एक पैतृक पद्धति थी। अर्थात पिता के निधन के बाद बेटा जमीनदार बन जाता था। वे सेना का नेतृत्व भी करते थे। जागीरदार द्वारा प्राप्त किए गए कर में से उसे कुछ भाग मिलता था और क्षेत्रीय किसानों की ओर से भी कुछ न कुछ मिल जाता था। प्रायः वह क्षेत्रीय जनता के प्रतिनिधि के रूप में मुगल अधिकारियों के संपर्क में रहता था।

कुछ क्षेत्रों में जमीदारों के पास काफी शक्ति हुआ करती थी। मुगल अधिकारियों के शोषण पर वे विद्रोह कर देते थे। कभी कभी जर्मीनदार और किसान मिलकर मुगल अधिकारियों का विद्रोह करते थे। सत्रहवीं शताब्दी में जर्मीनदार और किसानों ने मिलकर मुगल साम्राज्य के स्थायित्व को चुनौती दी थी।

- मनसबदार और जमीनदार के बीच में क्या अंतर था?
- बादशाह के अत्यधिक नियंत्रण में कौन था ?

- नायक और मनसबदार की स्थिति की तुलना कीजिए।

अकबर की नीतियों पर एक गहरी दृष्टि

अकबर अपने मित्र, दरबारी से प्रशासन की व्यापक विशेषताओं पर गंभीर रूप से चर्चा किया करता था। यह बात अबुल फजल ने अपनी पुस्तक अकबर नामा में बताई है।

1570ई.के दशक में आगरा के समीप फतेपुर सीकरी में आवास के समय मुस्लिम, हिन्दु, ईसाई और यहूदी विद्वानों से अकबर धर्म के संबंध में व्यापक चर्चा की। उसे धर्म और लोगों के विभिन्न सामाजिक रीति-रिवाज़ो में विशेष रुचि थी। वह विभिन्न धर्मावलंबियों का एक साथ लाना चाहता था। अकबर को इसी विचार धारा से सुलह-ए-कुल या सार्वभौमिक शांति का सिद्धान्त मिला। इस प्रकार की भेद-भाव रहित विचार धारा ने जनता में मदभेद की भावना को मिटाया। इस के अतिरिक्त इस प्रकार की नीति के कारण ईमानदारी, न्याय तथा शांति को सार्वभौमिक रूप से लागू किया। अबुल फजल ने शासन का ढाँचा बनाने में अकबर की सहायता की जो सुलह-ए-कुल विचारधारा से संबंधित थी। धर्म या सामाजिक प्रतिष्ठा के बिना ही बादशाह को अपनी जनता के हित के लिए कार्य करना होता है। इस शासन नीति का पालन जहाँगीर एवं शाहजहाँ ने भी किया। लेकिन इस नीति के विपरीत औरगज़ेब ने सुन्नी मुस्लिम वर्ग को महत्व दिया। अन्य मतावलंबी औरगज़ेब की इस नीति से दुखी हुए।

चित्र 14.4 इबादत खाने में विभिन्न मतावलबियों के वरिष्ठों से चर्चा करते हुए अकबर.

सुलह-ए-कुल (Sulh-i-kul)

अकबर के पुत्र जहाँगीर ने अपने पिता की नीति सुलह-ए-कुल का वर्णन इस प्रकार किया है।

इस विशाल विश्व में सभी जीवों पर ईश्वर की समान दया रहती है। इस देश की सभी दिशाओं में सभी समान हैं और यह चारों ओर से केवल समुद्र से सीमित है। आस्तिक ,नास्तिक और सभी धर्मावलंबियों का यहाँ निवास होता है। सांप्रदायिक मतभेदों का कोई स्थान नहीं है। सुन्नी, शिया लोग प्रार्थना के लिए एक ही मस्जिद में मिलते हैं तो ईसाई एवं यहूदी प्रार्थना के लिए गिरिजाघरों में सम्मिलित होते हैं। अकबर ने विश्व शांति (Sulh-i-kul) की नीति को अपनाया था।

17 वीं शताब्दी व उसके पश्चात में मुगल साम्राज्य

मुगल बादशाहों के प्रबंध एवं सेना क्षमता उनकी आर्थिक और व्यापारिक समर्थता दर्शाती है। विदेशी यात्रियों के कथनों से पता चलता है कि मुगल साम्राज्य एक समृद्ध राज्य था। पर इन्हीं यात्रियों ने इनकी बुरी दशा के बारे में भी बताया। असमानताएँ सुस्पष्ट थीं। शाहजहाँ के बारे में विदेशी यात्रियों ने यह कहा है कि मुगल साम्राज्य प्रसिद्ध एवं संपन्न साम्राज्य है। शाहजहाँ के शासनकाल के बीसवें वर्ष के ऐतिहासिक दस्तावेज बताते हैं कि शाहजहाँ के शासित क्षेत्रों मंसबदारों को सबसे उच्च स्थान प्राप्त था। बीसवीं शताब्दी के 8000 मनसबदारों में 445 शाहजहाँ के क्षेत्र में ही थे। यह कुल मनसबदारों का केवल 5.6 प्रतिशत था। इनको शासकों द्वारा प्राप्त अनुमानित कर का 61.5 प्रतिशत इनके व उनके सैनिकों के वेतन के लिए प्राप्त होता था।

सरदार सर्वाइ पापना

सरदार सर्वाइ पापना जो वरंगल जिले का था, उसने तेलंगाना में मुगलों का विरोध किया। यह औरंगजेब के समय का था। उसने कई गरीबों, पिछड़ी जाति एवं पद्दलितों के जीवन को सहायता प्रदान की।

1687CE से 1724CE में पापन्ना ने मुगल शासकों से तेलंगाना प्राप्त किया, कैलाशपूर में जो वरंगल जिले की राजधानी मानी जाती है वहाँ किला बनवाया।

उस समय के मुगलो द्वारा किए गए उत्पीड़न एवं अत्याचारों को देखकर उन्होंने एक छोटी सेना बनायी और उन्हें गुरिल्ला पद्धति में प्रशिक्षित किया।

पापना ने भुवनगिरि, नलगोंडा के कोलनपाक, थातीकोण्डा, वरंगल के चेरियाला, हुजुराबाद, करीमनगर के हुसनाबाद किलों पर अधिपत्य जमाया। उन्होंने राज्य के विस्तार के उद्देश्य से अपना पहला किला सर्वेपेटा में बनाया। उसने थाटीकोण्डा, वेमुलाकोण्डा और शाहपुरम में भी किलो का निर्माण किया। पापन्ना के काल में थाटीकोण्डा में चेक ड़ेम भी बनवाया गया। जिससे यह पता चलता है कि वह विकास प्रिय शासक है। जो अपने नियंत्रण के क्षेत्र को विकसित करता है।

पापन्ना ने सुबेदार पर गुरिल्ला आक्रमण के द्वारा युद्ध और सेना के लिए धन जमा किया। पापन्ना की प्रसिद्धि को सुनकर औरंगजेब ने रूस्तम-दिल-खान को पापन्ना को दबाने की राय दी। रूस्तम-दिल-खान ने कासिम खान को पहले पापन्ना के पास भेजा और बाद में शहपूर किले को जीतने भेजा। पापन्ना ने कासिम खान को पराजित कर मार ड़ाला। रूस्तम-दिल-खान स्वयं युद्ध करने पहुँचा और यह लगभग तीन महीने तक चला। अन्त में रूस्तम-दिल-खान युद्ध से भाग गया और पापन्ना ने अपने करीबी मित्र सर्वन्ना को युद्ध में खो दिया।

1707CE में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात, दक्कन के सुबेदार कमबख्श खान अपना नियंत्रण खोने लगे। दक्कन के कमजोर प्रशासन को देखकर पापन्ना ने 1 अप्रैल 1708CE में वरंगल किले को जीत लिया। हालंकि थाटीकोंडा, कैलाशपूर में लंबे समय की लड़ाई में वह बच गया था। लेकिन वह 1712CE में पकडा गया और उसका सिरच्छेद हुआ।

मुगल सम्राट और उनके मनसबदार अपनी आय का अधिकतर हिस्सा वेतन और सामान पर खर्च किया करते थे। इस कारण प्रथम उत्पादकों, किसान व कलाकार आदि के पास निवेश के लिए बहुत कम पूँजी थी। गरीबों के पास तो खाने से अधिक न बचता था। वह अपने औजारों को भी नहीं खरीद पाता था। इस कारण इस काल के संपन्न व्यापारी, महाजन आदि बहुत लाभ कमाते थे क्योंकि लोग उनसे कर्ज लेने को मजबूर थे।

मुगल साम्राज्य का धन संपन्न वर्ग के अधीन रहता था, जिस कारण सत्रहवीं शताब्दी के अंत में यही समूह सशक्त अस्तित्व में उभर आये। जैसे-जैसे मुगल साम्राज्य का पतन होता गया, उनके अधीन राज्यों जैसे- हैदराबाद, अवध आदि, पर उनका नियंत्रण नहीं रह गया। अठारहवीं शताब्दी तक इनके अधीन राजा स्वयं को स्वतंत्र मानने लगे।

हैदराबाद के असफ जाही 1724-1948

असफ जाहों का समूह क्रम

निजाम-उल-मुल्क	(1724-1748)
नासर जंग	(1748-1751)
मुज़फ्फर जंग	(1751-1751)
सलाबत जंग	(1751-1762)
निजाम अली खान	(1762-1803)
सिकन्दर जा	(1803-1829)
नासिर-उद-दौला	(1829-1857)
अफजल-उद-दौला	(1857-1869)
मीर महबूब अली खान-6वें निजाम	(1869-1911)
मीर उसमान अली खान-7वें निजाम	(1911-1948)

1720 में मुगलों के कमजोर होने के पश्चात, मुगलो के राज्यपालों ने स्वतन्त्रता पा ली। उनमें से एक दक्कन का सुबेदार, चीन कुलीच खान, जिसे निजाम-उल-मुल्क भी कहते थे। उन्होंने ही 1724 में हैदराबाद राज्य में असफ जाही साम्राज्य की स्थापना उन्होंने ही की। निजाम-उल-मुल्क ने 24 वर्षों (1724-1748) तक शासन किया। असफ-जाही शासन में दस शासक हुए जिन्होंने 1724 से 1948 तक शासन किया। उनमें से सात मुगलों से निजाम की उपाधि प्राप्त की। नाजरजंग, मुजफ्फरजंग और सिलाबतजंग की निजाम की उपाधि नहीं मिली। हैदराबाद राज्य को पाने के लिए निजाम हमेशा मराठा और मैसूर के शासकों से युद्ध करते रहते थे। इन्हीं कारणों से वे अंग्रेजों पर निर्भर हो गए और अपनी स्वतन्त्रता खो दी।

ब्रिटिश अधिकारियों के प्रभाव में इन उपनिवेशों का आधुनिकीकरण किया। अंग्रेज हैदराबाद की संस्कृति को पसन्द करते थे। 19वीं शताब्दी के अंत में हैदराबाद का विकास आरंभ हुआ। 1853 और 1883 में सालर जंग निज़ाम के प्रधान मंत्री थे, उन्होंने उपनिवेशों विकास की योजनाएँ बनाई। (इनके बारे में आप अगले अध्याय में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।)

सालर जंग

छठवें निज़ाम, मीर महबूब अली खान का काल अनेक सुधारों के लिए प्रसिद्ध है। आसफिया पुस्तकालय, विक्टोरिया मेमोरियल, अनाथालय, महबूबिया गर्ल्स स्कूल की स्थापना की गयी। 1908 के मूसी नदी में बाढ़ के समय उन्होंने वैयक्तिक रूप से राहत कार्यों, ईश्वर की प्रार्थनाएँ और हताहत (हादसे का शिकार) को शरण प्रदान की। किंतु VII निजाम ने प्रसिद्ध उदारवादी प्रशासनिक सुधार आन्दोलन के बावजूद सांतशाही संरचनाएँ की सुरक्षा का दृढ़ निश्चय किया। (आठवीं कक्षा में आपको उनकी उपलब्धियों के बारे में अधिक जानकारी मिलेगी।)

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द

1. मनसबदार
2. जागीरदार
3. ज़ब्त
4. प्रकाशित
5. जमींदार
6. सुलह-ए-कुल

हमने क्या सीखा?

1. मनसबदार और उसकी जागीर के बीच क्या संबंध रहता था? (AS_1)
2. मुगल शासन में जमींदारों की क्या भूमिका थी? (AS_1)
3. धार्मिक विद्वानों से किये गये शास्त्रार्थों का अकबर के प्रशासनिक निर्णयों पर क्या प्रभाव दिखाई देता है? (AS_1)
4. मुगलों ने राजाओं को अपने पुराने राज्यों पर पहले के समान ही शासन चलाने की अनुमति क्यों दी होगी? (AS_1)
5. मुगल शासकों के विस्तृत शासन क्षेत्र को नियंत्रित करने में सुल्ह-ए-कुल नीति क्यों महत्व रखती है? (AS_1)
6. जब्त और जमींदार का पहला अनुच्छेद पढ़िए और उस पर टिप्पणी कीजिए। (AS_2)
7. मुगल शासकों की विशेषताएँ एकत्रित कर-कर तालिका में भरिए। (AS_3)

क्र.सं.	शासक का नाम	शासन का समय	महत्वपूर्ण विशेषताएँ
1			
2			
3			
4			

SCERT TELANGANA

अध्याय 15

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना
(Establishment of British Empire in India)

शक्तिशाली मुगल शासकों में औरंगजेब अन्तिम शासक थे। उसने विशाल भू–भाग पर अधिकार **स्थापित** किया था, जिसे आज भारत कहते है। 1707 ई. में उसकी मृत्यु के पश्चात अनेक मुगल राज्यपाल (सुबेदार) और बड़े जमींदारों ने भू–भागों पर अधिकार कर क्षेत्रीय साम्राज्य की स्थापना करना आरंभ किया। भारत में अनेक भागों में इस प्रकार के स्थानीय साम्राज्यों की स्थापना हो जाने के कारण दिल्ली अधिक प्रभावशाली केन्द्र नहीं रहा।

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजनैतिक क्षितिज पर एक नई शक्ति उभरी – अंग्रेज। क्या आप जानते हैं कि वास्तव में अंग्रेज छोटी व्यापारी कंपनी के रूप में भारत आए थे? फिर कैसे वे इतने बड़े साम्राज्य के अधिकारी बन गए?

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का **पूर्व में** आना

1600 ई. में इग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ–1 द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को एक चार्टर प्रस्तुत किया गया – ''मैं इसे पूर्व के साथ व्यापार करने का पूर्ण अधिकार देती हूँ। इसका अर्थ हुआ कि यूरोप की अन्य कोई दूसरी कम्पनी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ प्रतियोगी नहीं बन सकती। इसी आदेश के साथ कम्पनी समुद्र पार नई भूमि की तलाश करने लगी जहाँ से कम कीमत पर माल खरीद कर यूरोप ले जाकर उच्च दामों में बेच सके।

वणिकवाद (Mercantalism)

वाणिज्यिक/व्यापारिक एक ऐसी प्रणाली है जिसमें व्यापार द्वारा प्राथमिक लाभ कमाया जाता है। उन दिनों व्यापारी कम्पनियाँ बिना प्रतियोगिता के कम कीमत पर माल खरीद कर अधिक दाम में बेचकर लाभ कमाती थी।

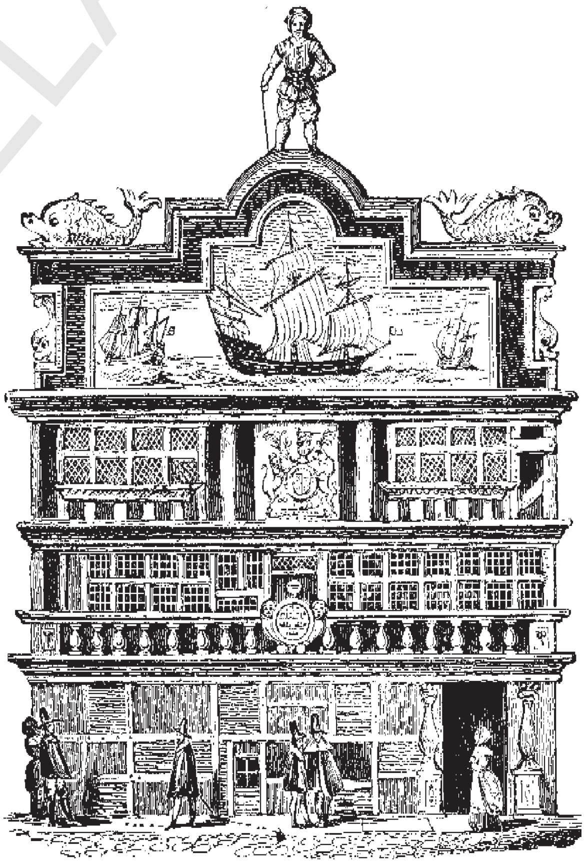

चित्र 15.1 लन्दन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का मुख्यालय

SCERT TELANGANA

चित्र 15.2 वास्को डिगामा

महारानी का चार्टर

अन्य यूरोपीय कम्पनियों को पूर्वी बाजार में व्यापार के लिए आने से रोक नहीं पाया। जब अंग्रेजों का पहला जहाज आफ्रिका के पश्चिमी दिशा से होते हुए कैप आफ गुड होप का चक्कर लगाकर हिंद महासागर को पार कर भारत आया, तब तक पुर्तगाली भारत के पश्चिमी तट में स्थापित हो गए तथा गोवा में अपना केंद्र बना लिया था। 1498 में (पुर्तगाली अन्वेषक) वास्को डिगामा ने भारत के समुद्री मार्ग की खोज की। 17वीं शताब्दी के आरम्भ में डच (हालेण्ड) की भी हिन्द महासागर में व्यापार की सम्भावना खोज रहे थे। जल्दी ही फ्रांसीसी व्यापारी भी आ गये।

समस्या यह थी कि सभी कम्पनियाँ एक ही माल खरीदना चाहती थीं। यूरोप में भारत में उत्पादित सूती और रेशमी कपड़े की अत्यधिक माँग थी। गरम मसाले जैसे काली मिर्च, लौंग, इलायची और दालचीनी की भी अधिक माँग थी। यूरोपीय कम्पनियों में प्रतियोगिता के कारण खरीदी जाने वाली वस्तुओं के दाम बढ़ने लगे। हथियारों से व्यापार किया जाने लगा तथा व्यापारिक केन्द्रों की सुरक्षा किले बनाकर की जाने लगी। किले की व्यवस्था का प्रयास तथा अधिक लाभकारी व्यापार के कारण स्थानीय शासकों से मन मुटाव होने लगा।

हथियारबंद व्यापारी (Armed Traders)

भारत में व्यापार करने के लिए यूरोपियों ने अपनी कम्पनियाँ स्थापित कर ली। अंग्रेजी व्यापारियों ने इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी, फ्रान्स ने फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की। इन दोनों कम्पनियों ने कई वर्षों तक भारत में व्यापार स्थापित करने के लिए युद्ध किया। प्रत्येक एक-दूसरे को भगाने के लिए प्रयास करने लगे। उन्होंने इग्लैण्ड और फ्रान्स से युद्ध में मदद के लिए सेना बुलाई। इंग्लैण्ड एवं फ्रान्स के राजाओं ने भी पीछे से उनकी मदद कई तरह से की। कम्पनियों ने भारत की भूमि पर अधिकार कर किले बनाए ताकि वे वहाँ से एक दूसरे से युद्ध कर सके।

चित्र 15.3 1676 में मछलीपटनम का चित्र

CERT TELANGANA

इस प्रकार **संपत्ति के संग्रह** ने भी विश्व में इंग्लैण्ड द्वारा कारखानों को विकसित कर अपनी सत्ता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसी समय **इंग्लैंड तथा** अन्य यूरोपीय देश जैसे स्पेन, पुर्तगाल, फ्रान्स, हॉलेण्ड और जर्मनी ने उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, आफ्रिका और एशिया **में उपनिवेश** स्थापित किए। **इन यूरोपीय देशों को उपनिवेशों से शक्ति और धन मिला।**

चित्र 15.4 शाहआलम ने रार्बट क्लाइव को बंगाल पर शासन करने का अधिकार दिया

मुगल सम्राट एवं अन्य राजा तथा नवाब को यह अनुभव होने लगा कि इन व्यापारियों की सेना का प्रबन्ध, किले बनाना, युद्ध करना और सैनिक बल की सहायता से आर्थिक **शक्ति** को अपने साम्राज्य में स्थापित करना, कितना खतरनाक है।

जब तक मुगल शासन शक्तिशाली रहा, **किसी** यूरोपीय कम्पनी का साहस नहीं हुआ कि वे भारत में सैनिक शक्ति को स्थापित कर सके। कई अवसरों पर शाहजहाँ और औरंगजेब ने यूरोपीय कम्पनियों को युद्ध में हराया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद कई राज्य स्वतंत्र हो गए तथा राज्यपाल शासन करने लगे। इस प्रकार बंगाल, अवध (लखनऊ) और हैदराबाद स्वतन्त्र राज्य बन गए तथा उन पर मुगलों का अधिकार नाममात्र के लिए हो गया।

जैसे ही मुगल साम्राज्य छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त हो गया, कम्पनियों को शक्ति स्थापित करने का अवसर मिल गया। राजा और नवाब व्यापार में वृद्धि चाहते थे फिर भी उन्होंने कम्पनियों की सैनिक शक्ति की जाँच करने **का प्रयास किया।**

उदाहरण के लिए 1764 CE ई. में अकार्ट के नवाब अनवरूद्दीन खान ने फ्रान्सिसी कम्पनी के साथ युद्ध करने के लिए सेना भेजी। सभी को आश्चर्यचकित करनेवाली बात यह हुई कि नवाब की विशाल सेना को फ्रान्सिसी कम्पनी की छोटी सेना ने परास्त कर दिया। इसके पश्चात यूरोपीय व्यापारियों का हौंसला और बढ़ गया और वे समझने लगे कि भारत में जो वे मनमानी कर सकते है क्योंकि उनके पास शक्तिशाली सेना है।

फिर भी 1700 ई. के समय यूरोपीय सेना भारतीय शासकों की सेना से भिन्न थी? यूरोपीय सैनिक **श्रेष्ठ** रूप से प्रशिक्षित थे और निरंतर ऊँचा वेतन पाते थे। उनके पास अच्छी बन्दूके और तोपे थी। यूरोपीय सैनिक प्रतिदिन परेड और ड्रिल भी करते थे। इस प्रकार की नित्य कसरत आदि के कारण कई भारतीय सैनिक अंग्रेजी सेना **में मिलकर युद्ध में कुशल बन गए।**

SCERT TELANGANA

भारतीय साम्राज्यों में यूरोपीय हस्तक्षेप में वृद्धि (Growing European interference Kingdom of India)

यूरोपीय कम्पनियों ने अपनी सैन्य विशेषता द्वारा व्यापार में अधिक लाभ कमाया। जब किसी अवसर पर उन्होंने देखा कि कोई दो राजा आपस में लड़ रहे तो वे उनकी तरफदारी कर युद्ध में भाग लेते थे। वे एक राजा को सैन्य सहायता देकर शत्रु से लड़वाते थे। इसके बदले में राजा से कई प्रकार की व्यापार में छूट की माँग करते थे। सैन्य सहायता के बदले में शासक भी बड़ी धन राशि और उपहार कम्पनी को देते थे। कम्पनी के लिए यह धन व्यापार में विकास के लिए उपयोगी रहा।

उदाहरण के लिए डुप्ले फ्रेन्च ईस्ट इण्डिया कम्पनी के गवर्नर ने दक्षिण का नवाब बनने में मुजफ्फर जंग की मदद की। उसके बदले में मुजफ्फर जंग ने फ्रान्सिसियों को पाण्डीचेरी के पास कुछ भूमि तथा मछलीपटनम नगर दे दिया। उसने कंपनी को 50,000 रू., 50,000 रू. फ्रान्सिसी सेना तथा 20,00,000 और 1,00,000 कीमत की जागीर डुप्ले को दी।

स्थानीय राजाओं से कम्पनी ने उपहार के रूप में राज्य में भूमि का छोटा भाग भी लेना आरम्भ किया। इस क्षेत्र के गाँव और शहरों से उन्होंने भूमि कर लेना आरम्भ किया और उसी भू कर द्वारा वे व्यापार करने लगे। वे अपनी सेना के रख–रखाव एवं विकास के लिए भी इस धन का उपयोग करते थे।

धीरे–धीरे अंग्रेजी कम्पनी ने फ्रेंच कम्पनी पर जीत प्राप्त कर भारत में एकल अधिकार प्राप्त किया।

कम्पनी के अधिकारों का दुरुपयोग (Mis-use of Company's Power)

जल्दी ही भारतीय राजाओं को कम्पनी को उपहार देना तथा अंग्रेजी सेना का खर्चे उठाना बोझ लगने लगा। वे कम्पनी के कई अन्य कार्यों से भी संकट में पड़ने लगे।

कुछ भारतीय राजाओं ने कंपनी को अपने राज्य से खरीदी जाने वाली कई वस्तुओं पर कर की छूट दे दी। लोग इस छूट से फायदा उठाने लगे। उदाहरण के लिए कम्पनी में काम करने वाले निजी व्यापार कर सकते थे। परन्तु वे लोग अपनी वस्तुओं को कम्पनी की बताते थे ताकि वे कर देने से छूट सके।

इस प्रकार कम्पनी के अमीर होने के साथ–साथ कर्मचारी और अधिकारियों ने भी भारत में खूब धन कमाया। और धनी व्यक्ति बन कर अपने घर लौटे। कई भारतीय व्यापा. रियों और सेठों ने कम्पनी की व्यापार में सहायता की। उन्होंने भी अपने माल को कम्पनी का बनाया और कर देने से बचने लगे।

चित्र. 15.5 1867 में मद्रास में स्थापित नौकाएँ जहाज से वस्तुएँ लाते हुए द्वारा ली गई विलियम सिमसन

SCERT TELANGANA

इस तरह कम्पनी के अधीन साम्राज्य में लूट–मार, छल कपट आदि बढ़ने लगा। कम्पनी को अपनी सेना पर गर्व था कि वह बड़ी निर्लज्जता से काम कर रही थी। वे हस्त उद्योग कर्ता को अपनी वस्तुएँ कम कीमत पर बेचने पर विवश करते थे। कम्पनी ने अपने अधिकृत क्षेत्र के किसानों पर अधिक कर लगाना प्रारंभ किया जो उनके सामर्थ्य के बाहर था। ऐसे कार्यों का राजा जब विरोध करने लगे तो उन्होंने उनसे युद्ध किया। कभी–कभी राजा को गद्दी से उतार कर वे उसके उत्तराधिकारी को गद्दी पर बिठाते जो उनके व्यापार के रास्ते में आने वाली रुकावटों को दूर करने के इच्छुक थे।

- व्यापारियों को वस्तुएँ खरीदने के लिए पैसे की आवश्यकता थी अंग्रेजों को भारत से वस्तुएँ खरीदने के लिए प्राप्त होने वाले धन के तीन स्त्रोत बताइए।
- अंग्रेजों से भारतीय राजाओं ने क्या लाभ उठाया?

अंग्रेजों द्वारा शासन लागू करना

अंग्रेजों को लगने लगा कि वे व्यापार में अधिक लाभ तभी प्राप्त कर सकते थे जब वे स्वयं भारत पर अधिकार प्राप्त कर ले। इसलिए उन्होंने नवाब और राजा को हटाना आरंभ किया और स्वयं शासक बनने लगे।

1757 ई. में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को प्लासी के पास पराजित किया तथा बंगाल पर अधिकार प्राप्त कर लिया। भारतीय इतिहास में प्लासी का युद्ध महत्वपूर्ण घटना है। उसके बाद अंग्रेजों ने भारत के छोटे–बड़े कई राज्यों पर विजय प्राप्त की।

1765–1786 के बीच में इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हैदराबाद के नवाब को तटीय आन्ध्र प्रदेश के जिले (कृष्णा, पूर्वी गोदावरी, पश्चिमी गोदावरी, श्रीकाकुलम, विजयनगरम, प्रकाशम, विशाखापट्टणम और गुन्टूर) देने पर विवश किया। वे भाग कम्पनी के मद्रास क्षेत्र में उत्तरी सरकार के नाम से जाने जाते थे। इसके बदले में अंग्रेजों ने निजाम को सैन्य सहायता देने का वादा किया। वास्तव में यह सेना निजाम की मदद करने के स्थान पर निजाम पर अधिक अधिकार जमाने लगी।

कई राजाओं और नवाबों ने अंग्रेजों की चाल समझ में आ गयी और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किए। इनमें मैसूर के हैदर अली और टीपू सुल्तान, मराठा सरदार महादजी शिंद, नाना फड़नवीस और अन्य थे। परन्तु उनके राज्य छोटे थे। एक के बाद वे एक अंग्रेजों के अधीन होने लगे।

अंग्रेजों की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका रार्बट क्लाईव, वारेन हेस्टिंग और लार्ड वेलेस्ली की थी। धीरे–धीरे भारत का बड़ा भाग सीधे अंग्रेजी शासन के अधीन हो गया। कई स्थानों में राजा और नवाब शासन कर रहे थे, परन्तु वे अंग्रेजी सत्ता के अन्तर्गत कर रहे थे। एक अंग्रेज अधिकारी (जो रेसिडेन्ट कहा जाता था) वह राजाओं और नवाब के दरबार में रहता था, जिससे अंग्रेज सरकार राजाओं पर तथा शासन विधि पर नजर रख सके।

- भारत के साथ व्यापार करते समय अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने देश पर शासन की बात क्यों सोची?

SCERT TELANGANA

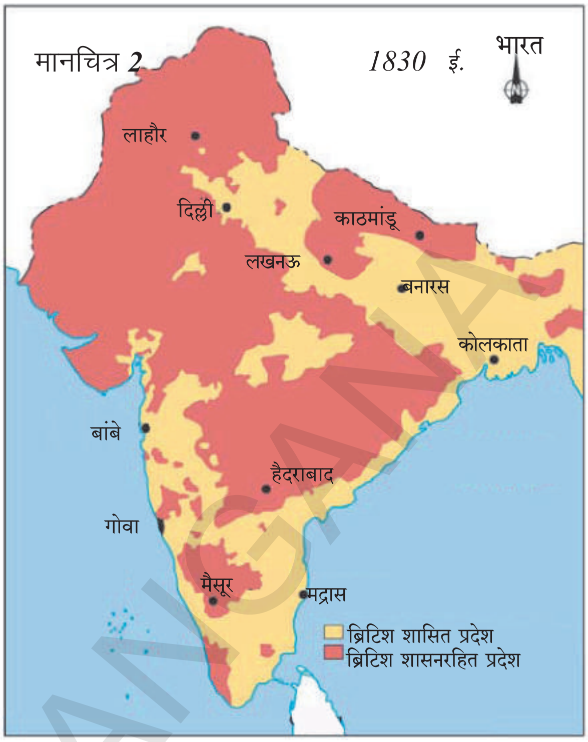

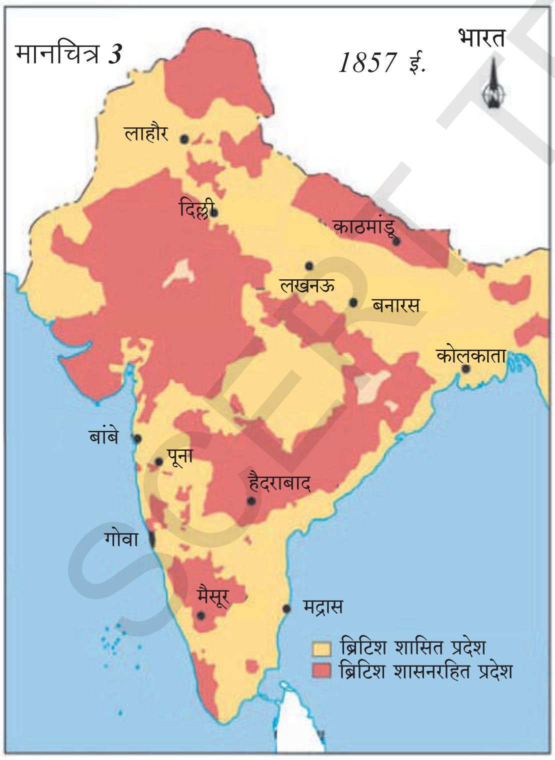

मानचित्रों में अंग्रेजों द्वारा भारत के क्षेत्रों **पर शासन के विस्तार** को दर्शाया है।

- आज के भारत के राजनैतिक मानचित्र के साथ इस मानचित्र को देखिए। प्रत्येक मानचित्र में पता लगाने की कोशिश कीजिए कि भारत के कौन–से भाग अंग्रेजों के अधीन नहीं थे।
- 1857 तक अंग्रेजों के शासन का विस्तार कहाँ तक हुआ ? उन क्षेत्रों की सूची बनाइए जहाँ 1857 के बाद भी भारतीय राज शासन कर रहे थे।

SCERT TELANGANA

अंग्रेजी शासन से असंतुष्ट (Discontent with English Rule)

अंग्रेजों को अपना शासन स्थापित करने के लिए कई राजाओं और नवाबों से लड़ना पड़ा। बाद के वर्षों में आप इनकी योजनाओं और प्रशासन के बारे में जानेंगे। भारतीय लोगों के साथ उनका सामना निरन्तर होता रहा।

ऊँचे घराने के परिवार अंग्रेजों से नाराज थे क्योंकि अपने मतलब के लिए अंग्रेज राज्याभिषेक करना या शासक को निकालने के काम करते थे।

किसान और जमींदारों ने भी विरोध किया क्योंकि अंग्रेजों ने उन पर भारी कर लगाए और कठोरता से वसूल किए। इसी कारण वे कर न दे सकने पर लगातार भयभीत रहने लगे और अपनी भूमि खोने लगे।

जनजातियों ने भी उनका विरोध किया, क्योंकि नए कानून उनके क्षेत्र में लागू किए गए। इसका परिणाम यह हुआ कि कई जनजाति लोगों को जंगल और भूमि से हाथ धोना पड़ा। बाद में आप इसके बारे में अधिक पढ़ेंगे।

कई हिन्दू और मुसलमान सोचते थे अंग्रेज उनके विश्वास को समाप्त कर उन्हें इसाई बनाना चाहते है।

1857 में जब उत्तर भारत में अंग्रेजों के शासन की जड़े मजबूत हो गई, तब उन्हें कठिनतम युद्ध करना पड़ा। यह विद्रोह भारतीय सैनिकों द्वारा आरम्भ किया गया तथा उच्च परिवार, जमींदार, किसान, जनजाति और हस्तकलाकार द्वारा भी किया गया। ऊँचे घराने के लोग जैसे नाना साहब, पेशवा का गोद लिया पुत्र, ताँत्या तोपे, अवध की बेगम और झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई शामिल थे। हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर अपने शत्रु के साथ युद्ध किया।

1857 का विद्रोह (The Revold of 1857)

स्थान :— मेरठ का सैन्य प्रांगण, जहाँ अंग्रेजी सेना का कैम्प था।

दिनांक : 10 मई 1857 रविवार

भारतीय सैनिकों ने जब अंग्रेजी अधिकारियों पर बन्दूके तानी तब सूर्यास्त होने वाला था। ये वहीं सिपाही थे जिन्होंने भारत में राज्यों को जीतने में अंग्रेजों की मदद की। वे अब अंग्रेजों के व्यवहार से उकता गए थे। उन्हें समय पर वेतन नहीं मिलता था तथा अंग्रेजी सेना में उचित सम्मान नहीं मिलता था। इन सबसे ऊपर यह बात थी कि भारतीय सिपाही को शक था कि नई कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी चढ़ाई जाती है। उन्हें लगने लगा कि यह उनके धार्मिक विश्वास के लिए चोट थी। इसी सन्देह के आधार पर 1857 में कोलकत्ता के पास बैरकपूर में विद्रोह आरम्भ किया गया। मेरठ से यह सारे देश में फैल गया। इस दिन सैनिकों ने अंग्रेजी अधिकारियों पर बन्दूके तान दी। विद्रोही सैनिक रातों रात दिल्ली पहुँचे।

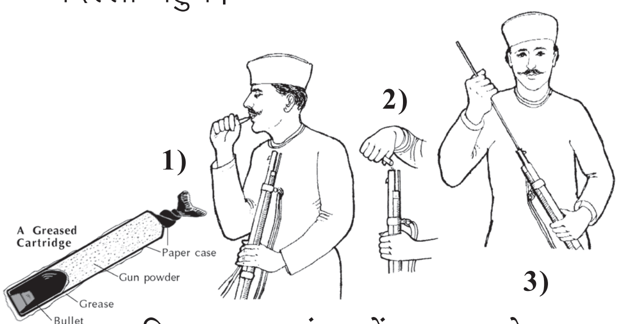

चित्र 15.6 A - बंदूक में बारूद भरने का दृश्य

1. दाँतों से कारतूस पर लगे कागज को निकालना पड़ता था।
2. बन्दूक में बारूद को भरना
3. कारतूस को कागज में लपेट कर बन्दूक में डालना।

SCERT TELANGANA

स्थान– मेरठ शहर
दिनांक– रविवार
रात –सोमवार– मई
– 10–11–1857

सिपाही विद्रोह का समाचार सारे मेरठ में फैल गया। सारा शहर उत्तेजित हो गया। यह तरंग बाजार से आई और अंग्रेजी बंगलों तक पहुँच गई। भीड़ में पुलिस भी मिल गई और सबसे पहले कार्यालय और अंग्रेजों के बंगलों में आग लगाई गई। कई अंग्रेज मारे गए।

चित्र 15.7 : 1857 में मेरठ में सिपाही विद्रोह का दृश्य

मेरठ के सिपाही दिन के आरम्भ होते ही यमुना को पार कर दिल्ली पहुँचे। वे लाल किला पहुँचे, जहाँ अंग्रेजों द्वारा मुगल शासक बादशाह बहादूर शाह जफर को बंदी बनाया गया था। उन्होंने उन्हें अपना बादशाह घोषित किया और अंग्रेजी शासन को मानने से इन्कार किया। उत्तेजित लोगों का नारा था ''अंग्रेजों को भगाओ और मुगल शासन को वापस लाओ।''

स्थान – दिल्ली – लाल किला
दिनांक – सोमवार, 11 मई 1857

चित्र 15.8 1857 में दिल्ली के पन्टून पूल पर यमुना को पार करते हुए सिपाही

विद्रोह का विस्तार

(The Revold Spread)

जैसे ही विद्रोह की बात फैली अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह अनेक स्थानों पर फैल गया। सिपाही छिपते-छिपाते अलीगढ़, मेनपूरी, बुलन्दशहर, अटोक और मथुरा की छावनियों में पहुँच गए। अंग्रेज बुरी तरह से घबरा गए। उनकी स्थिति नाजुक हो गई।

चित्र 15.9 रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों के साथ युद्ध करते हुए।

भारत में अंग्रेज अधिकारी एवं सैनिकों की संख्या 45,000 तक थी। इसके विपरीत अंग्रेज सेना में भारतीय सैनिकों की संख्या 2 लाख 30 हजार थी। इसीलिए अनेक सिपाहियों ने इनका विरोध किया। अब अंग्रेजों की सम्पत्ति और घरों की रक्षा शहरों में कौन करेगा? उनकी सेना में भारतीय विभाग नहीं रहा। कई अंग्रेजी सैनिकों को अंग्रेज परिवारों की सुरक्षा के लिए रखा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि विरोध तुरन्त नहीं दबाया जा सका और यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर फैल गया।

चित्र 15.10 तांतिया तोपे

कई ऊँचे घराने के परिवार जिनके राज्य अंग्रेजों द्वारा छीन लिए गए थे, विद्रोह में शामिल हो गए। उनमें अवध के पूर्वकालीन नवाब, और मराठा पेशवा नाना साहेब थे। उत्तेजित सिपाहियों की सेना और देश के विभिन्न कोने के शासकों ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। आशा थी कि अंग्रेजों को भगा देंगे तथा मुगल शासन और आरम्भिक ह्वउॄ फिर से लागू किए जा सकेंगे।

हैदराबाद उपनिवेशी के अंतर्गत योजनाओं के शोषण के विरूद्ध मौन नहीं था। १८५७ के विद्रोह में अन्य सभी क्रान्तिकारियों में से तुरेबाज खान ने हैदराबाद के अंग्रोजों के विरुद्ध विद्रोह किया। उसने मौलवी अल्लाउद्दीन की सहायता से ६,००० लोगो की सेना तैयार की और ब्रिटिश निवास पर धावा बोला जो आज कोठी का वुमेन्स कॉलेज है। उसमें उस समय विद्रोह किया जब निजाम ने अंग्रोजों की सहायता की। अन्त में आन्दोलन दबा दिया गया और तुरेबाज खान को फाँसी दे दी गई।

तुरेबाज खान

- क्यों मुगल साम्राज्य का विचार उत्तेजित भारतीयों को एकत्रित कर पाया, चर्चा कीजिए।
- जब आप किसी चीज का विरोध करते है तो आप उसके स्थान पर कुछ दूसरा चाहते हैं। आपके अनुभव के आधार पर एक उदाहरण सोचिए जो परिवर्तन की आवश्यकता बताता है।

प्रत्येक गाँव में विद्रोह (Every Village in Revolt)

उत्तर प्रदेश और बिहार के कस्बे से कस्बे तथा गाँव से गाँव में विद्रोह की आग फैलने लगी। किसानों और जमींदारों ने अपनी सेना बनाई और अंग्रेज अधिकारियों को भगाया। उन्होंने अंग्रेज सरकार को कर देना बन्द कर दिया। उन्होंने रेल लाईने तोड़ दी, पुलिस स्टेशन जला दिए, अदालते, डाक और तार विभाग के कार्यालय और टेलीफोन के तार उखाड़ दिए। भारत में अंग्रेजों ने ये नई सेवाएँ आरम्भ की थी। जैसे–जैसे अंग्रेजों की हार होने लगी, वैसे–वैसे भारतीय का साहस बुलन्द होने लगा।

उत्तेजित जनता ने जमींदारों के घरों और मुख्य खातों को जला दिया। ये जमींदार अंग्रेजी कानून के कारण गाँवों में बहुत शक्तिशाली बन गए थे।

विद्रोह का दमन (The Revolt in Suppressed)

विशाल स्तर पर फैले हुए विद्रोह के बावजूद भी अंग्रेजों ने धीरे–धीरे स्थिति पर नियंत्रण प्राप्त किया।

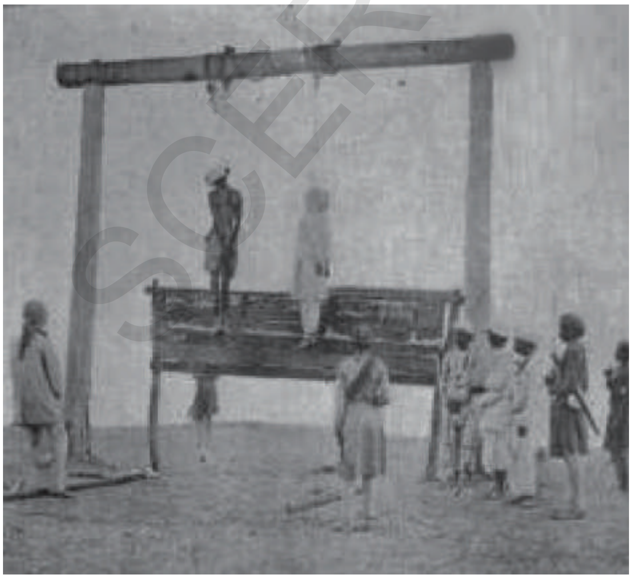

चित्र 15.11 चित्र 17.10 विरोध करने वालों को फाँसी पर लटकाना

तीव्रवादियों ने वीरता पूर्वक युद्ध किया। परन्तु उनमें दो बड़ी कमजोरयाँ थी। प्रत्येक क्षेत्र और शहर से लोग अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने लगे। उन्होंने मिल कर लड़ाई नहीं की थी। इनकी कोई सामूहिक और अच्छी योजना नहीं की थी। इसीलिए अंग्रेजों के लिए एक के बाद एक को दबाना आसान हो गया।

तीव्रवादियों के पास आधुनिक हथियार की कमी थी। बन्दूके, तोप, गिलिया और बन्दूक पाउडर, जिनकी उन्हें आवश्यकता थी वह भारत के बाहर से लाया जाता था। उन्हें पुरानी बन्दूके, तीर कमान, बरछे और तलवार से लड़ना पड़ा। आधुनिक हथियार के सामने कितनी देर तक ये पुराने हथियार टिक सकते थे?

फिर भी जिस तेजी से विद्रोह फैला, अंग्रेज उससे भयभीत हो गए। उन्होंने तीव्रवादियों के दल को निर्दयता पूर्वक दबाया। अमानवता द्वारा उन्होंने तीव्रवादियों को मार डाला और गाँवों में पेड़ों पर उनके शवों को लटका दिया ताकि गाँव की जनता को विद्रोह के परिणाम की जानकारी हो जाए।

वे तीव्रवादियों को कारतूसों पर बाँध देते थे और उन्हें उड़ा कर टुकड़े बना देते थे। कई तीव्रवादी अंग्रेजों की पकड़ से बचने के लिए छिपने तथा स्थान–स्थान पर भागने लगे। कुछ लोग नेपाल जैसे देश में जाकर छिपने लगे।

अंग्रेजों ने बहादूर शाह जफर को रंगून भेज दिया और वहाँ अन्तिम शासक की मृत्यु हुई। अंग्रेजों के लिए 1857 का विद्रोह बड़ी चुनौती बन गया। इसके दमन के बाद अगले 90 वर्षों तक उन्होंने दृढ़ता के साथ भारत में शासन किया।

सही शब्द का चयन कीजिए :–

(ए) 1857 के तीव्रवादी मुगल शासन (रखना / हटाना) .... चाहते थे।

SCERT TELANGANA

(बी) अंग्रेजी सेना की कमजोरी थी कि उनके अधिक सैनिक (यूरोपीय / भारतीय) .... थे।

■ तीव्रवादी भारतीय सेना की क्या कमजोरी क्या थी?

विद्रोह के पश्चात (After the Revold)

अंग्रेजों का 1857 के विद्रोह को दबाने में एक वर्ष से अधिक लगा। इस काल में उन्होंने अपनी कई योजनाएँ बदल दी और नई को अपना लिया। 1858 में इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया ने एक महत्वपूर्ण घोषणा की। उन्होंने कहा भारतीय राजा बिना किसी घबराहट के अपने साम्राज्य पर शासन कर सकते हैं अंग्रेज उन्हें अब गद्दी से नहीं उतारेंगे।

इस प्रकार उन्होंने अमीर परिवारों से निकट के संबंध स्थापित कर लिए। उसी प्रकार जमींदारों को भी कई प्रकार की छूट दी गई और उन्हें आश्वासन दिया गया कि उनकी सम्पत्ति सुरक्षित रहेगी।

पण्डित और मौलवियों को भी यह आश्वासन दिया गया कि भारतीय धार्मिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा और पारम्परिक पद्धति ही चलेगी। यह भी वादा किया गया कि भारतीयों को सरकार में शामिल किया जाएगा। परन्तु सच्चाई यह थी कि अंग्रेजों की दृष्टि 1857 के विद्रोह में छीने गए क्षेत्रों पर टिकी थी। अब वे लोग प्रसिद्ध नामी व्यक्तियों को कई प्रकार की छूट देने लगे ताकि उन्हें शान्त कर सके और लगातार वे अंग्रेजों की मदद करे।

हैदराबाद राज्य एवं अंग्रेज

उस समय के अन्य राज्यों के साथ-साथ हैदराबाद भी इंग्लिश ईस्ट इण्ड़िया कम्पनी से प्रभावित हो गया। अन्त में अंग्रेज़ों ने हैदराबाद में अपने आवास बनाए जहाँ से सारे राज्य के प्रशासन नजर रख सके। निजाम को अपने प्रधानमंत्री या दीवान की नियुक्ति इन आवासियों और ब्रिटिश गवर्नर जनरल की

चित्र 15.12 कैप्टन हैड़सन द्वारा बहादूर शाह जफर और उनके पुत्रों को बंदी बनाया गया। औरंगजेब के बाद कोई शक्तिशाही मुगल शासक नहीं हुआ, परन्तु मुगल सम्राट महत्वपूर्ण थे। 1857 में तीव्रवादियों ने अंग्रेजी शासन का विरोध किया। बहादूर शाह जफर मुगल शासक उसी समय नेता बने। एक बार जब कम्पनी द्वारा विद्रोह को दवा दिया गया, उन्हें साम्राज्य को छोड़ने के लिए विवश किया गया, उनके पुत्रों की हत्या कर दी गयी।

अनुमति से करना पड़ता था। सभी विभागों में अंग्रेजों द्वारा चयित ICS (भारतीय नागरिक सेवाएँ) अधिकारियों की भर्ती की गई। इस प्रकार निजाम राज्य पर अंग्रेजों ने पूर्ण अधिकार जमा लिया। वे पूरी तरह से अन्य ब्रिटिश राज्यों में लागू व्यवस्थाओं और योजनाओं को अपनाने के लिए बाध्य करते थे।

यदि आप हैदराबाद जाएगे तो आप सालारजंग म्यूजियम देखेगे जहाँ हैदराबाद के दिवान सालारजंग की विभिन्न वस्तुएँ संग्रहित की गई ही। उसने कई सुधारों को लागू किया और हैदराबाद राज्य के आर्थिक विकास के लिए योगदान दिया। उसने प्राचीन देशमुखों को हटा कर साम्राज्य को सुबो और जिलों में विभाजित किया।उसने कृषि पद्धति पर लगान को समाप्त किया और उसके स्थान पर किसानों से सीधे जिला अधिकारियों को कर वसूल करने का अधिकार दिया। सर्वोच्च न्यायालय, उच्च नायायालय और जिला अदालतों द्वारा न्यायपालिका में सुधार लाया। दिवानी और फैजदारी अदालतों को अलग स्थापित किया गया। यतायात विकास के लिए सालारजग ने सड़क एवं रेल मार्ग का विकास किया। महत्वपूर्ण रेलमार्ग हैदराबाद से वाड़ी, मद्रास से सोलापूर और मद्रास से मुम्बई थे। १८५५ में चादरघाट में दर-उल-उल्म अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय, सिटी कालेज, १८७० में दक्कन इंजीनीयरिंग कालेज और मदरसा-आई-आलिया भी स्थापित किए। इन सभी सुधारों के कारण ही हैदराबाद देश के अन्य राज्यों के साथ आधुनिक कतार में आ सका।

मुख्य शब्द

1. रॉयल आदेश
2. सुबेदार
3. पूर्ण
4. माँग
5. जागीर
6. उपमण्ड़ल
7. उपनिवेश
8. मौलवी

हमने क्या सीखा ?

1. यूरोपीय व्यापारी कम्पनियों ने भारत में सेना क्यों रखी? कम्पनी के व्यापार में इन सेनाओं ने कौन–सी भूमिका निभाई? (AS_1)
2. 1700 और 1800 में यूरोपीय सेना ने भारतीय सेना को किस प्रकार हराया? (AS_1)
3. 1857 में विद्रोह की जानकारी प्राप्त कीजिए और तालिका में भरिए। (AS_3)

क्र.सं.	विद्रोह में भाग लेने वाले व्यक्ति	विद्रोह से अलग रहनेवाले व्यक्ति

4. 1857 के विद्रोह में किन सिपाहियों ने अनुभव किया कि उनके धार्मिक विचारों को ठेस पहुँची है और क्यों? (AS_1)
5. 1857 में लोगों ने अंग्रेजों का विरोध कैसे किया? (AS_1)
6. 1857 में विद्रोह करने वाले लोग क्या चाहते थे। (AS_1)
7. 1858 के घोषणा पत्र में रानी विक्टोरिया क्रान्तिकारियों की कौनसी शिकायते रखती है – उसे समझाइए।(AS_1)
8. भारत में आने वाले मुगल एवं अंग्रेजी के शक्तियाँ को बीच क्या समानताएँ एवं भिन्नताएँ थी ? (AS_1)
9. मानचित्र में वास्कोड़िगामा के पुर्तगाल से भारत तक के समुद्री मार्ग का बताइए। (AS_5)
10. विदेशी अन्वेषकों को एक जुट होकर कैसे निकाल सकते है ? संक्षिप्त टिप्पणा लिखिए। (AS_6)
11. अंग्रेजों के शासन के विरुद्ध अपने असंतोषजनक विचारों को प्रकट कीजिए। (AS_1)

SCERT TELANGANA

अध्याय 16

विधानसभा में कानून निर्माण
(Making of Laws in State Assembly)

हमने अब तक इस बारे में पढ़ा है कि जनता किस प्रकार अपना सार्वजनिक कार्य करती थी, कैसे उन्होंने शासन किया या उन पर कैसे शासन किया गया। हमने पढ़ा कि कम जनसंख्या वाले जन जाति समाज सभाओं में एक दूसरे की राय से सार्वजनिक मामले हल करते थे और उनका एक प्रधान होता था जो निर्णय लेता था। राज्य और साम्राज्य में हमने देखा कि राजा और उसके अधिकारी सभी मामलों में निर्णय लेते थे, अधिक भूमि और जनता पर अधिकार पाने के लिए किस प्रकार आपस में लड़ते थे। हमने यह भी देखा कि किस प्रकार प्रमुख और योद्धा लोगो के जीवन पर अधिकार रखते थे, इच्छानुसार उन पर भारी कर लगाते थे और उस धन का उपयोग स्वयं के लिए बड़े महल बनवाने, युद्ध करने और कुछ जन उपयोगी साधन जैसे तालाब, नहर और मन्दिर या मस्जिद बनवाने में खर्च करते थे। हमने यह भी देखा कि किस प्रकार अंग्रेजो ने अपना शासन स्थापित कर हमारे देश के प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट किया और उसका विद्रोह हमारे लोगों ने कैसे किया।

आज हम पर शासन करने के लिए कोई राजा या योद्धा नहीं है। हम लगभग 70 वर्ष पहले अंग्रेज़ी शासन से मुक्त हो चुके हैं। तो अब हम कैसे स्वयं पर शासन कैसे करेंगे? आप जानते ही होंगे की सांसद(MPs) विधायक (MLA),मंत्री, मुख्यमंत्री और उच्च अधिकारी होते हैं। क्या वे पुराने जमाने के राजाओं के समान है?क्या वे इच्छा से काम कर सकते है? नहीं। आधुनिक सरकार कानून के आधार पर कार्य करती है। कोई भी कानून से बड़ा नहीं है और सभी मंत्रियों और अधिकारियों को कानून के अनुसार काम करना पड़ता है। परन्तु कानून कौन बनाता है? कैसे कानून बनते हैं? क्या वे शासकों की मर्जी से बनाए जाते हैं? नहीं। कानून विधान सभाओं और संसद द्वारा बनाए जाते है। संविधान में कानून बनाने की जानकारी दी गई है। उसी तरीके से वे कानून बनाते है। इस अध्याय में हम विधान सभा में कानून का निर्माण किस प्रकार किया जाता है इसके बारे में विस्तार से जानेंगे।

चित्र *16.1* तेलंगा**णा** विधानसभा

SCERT TELANGANA

यहाँ एक समाचार है-उसे समझने की कोशिश करेंगे इसमें आन्ध्र प्रदेश के बारे में क्या कहा गया है, यह समझने का प्रयास करेंगे। धूम्रपान और सुरक्षा अधिनियम-२००२

सार्वजनिक ध्रुमपान प्रतिबंध के लिए पारित बिल

(Bill for Ban on Public Smoking Passed)

हैद्राबाद मार्च 27.

हमारे विशेष संवाददाता

बुधवार के दिन आन्ध्र प्रदेश की विधान में सार्वजनिक स्थलों पर या जनता द्वारा उपयोगी स्थलों पर और सार्वजनिक सेवा वाहन द्वारा धुएँ पर प्रतिबन्ध का प्रस्ताव पारित किया गया। इसमें यह भी बताया गया कि जो भी इस व्यवस्था का भंग करेगा उस पर बिना किसी हस्तक्षेप के 100 रु से1000रु तक का जुर्माना लगाया जाएगा।

कुछ विपक्षी सदस्यों ने इस संदर्भ में यह प्रस्तुत किया कि शिक्षण संस्थाओं से100कि.मी.की दूरी के आस-पास सिगरेट बेचने पर रोक लगा दी जाए। जहाँ 18वर्ष से कम उम्र के बच्चे पढ़ते है और सिगरेट के विज्ञापन पर रोक लगा दें। कुछ लोगों ने तम्बाकू से किसानों और पान के दुकानदारों की जीविका पर भी होने वाले प्रभाव के बारे में कहा। मंत्रियों ने उनके विचारों को शान्त किया।

मंत्रियों ने कहा कि ध्रुमपान से जनता के स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभाव के लिए कानून बनाना आवश्यक है तथा सर्वोच्च न्यायालय ने भी 2नवम्बर2001को इस बारे मे अपनी अनुमति दे दी है। प्रतिबन्ध के मामले में विभाग5, 6और10 के अनुसार सार्वजनिक स्थलों और जन सेवा वाहनों और No smoking के बोर्ड लगाने पर 100रु से अधिक जुर्माना लगाया जा सकता है तथा दूसरी बार या लगातार गलती दोहराई जाने पर 200रु जुर्माना जो 500रु तक भी बढ़ाया जा सकता है का आदेश निकाला।

दि हिन्दू मार्च ***27-02*** से लिया गया अंश।

- अक्सर यह सोचा जाता है कि समाचार पत्र केवल व्यस्क व्यक्तियों द्वारा ही पढ़े जाते हैं। इसीलिए सबसे पहले हम इन शब्द का अर्थ पता करेंगें-हस्तक्षेप, दमन करना, विचार और निष्पादन, उल्लंघन, लागू।
- उपरोक्त समाचार विषय के अधार पर रिक्त स्थान भरिए :

1) सार्वजनिक स्थलों पर ध्रुमपान के रोक के लिए _______ पारित किया गया।

(प्रस्ताव, रिवाज, कानून, नियम).

2) ध्रुमपान पर प्रतिबन्ध_________ स्थल पर लगाया नहीं गया।(कार्यस्थल, सार्वजनिक वाहन, निजी बगीचे, बस स्टैण्ड)

3) सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश ___________ करने के लिए कानून था। (मौन, दंडित, अनुसरण, भंग).

4) प्रस्ताव _______ में पारित किया गया।(सर्वोच्य न्यायालय, मंत्रालय, जिलाधीश कार्यालय, सभा).

- क्या समाचार पत्र के लेख यह सुझाते हैं कि इस प्रस्ताव पर सभी के विचार एक जैसे हैं ?
- समाचार पत्र में किस प्रकार के जुर्माने की प्रणाली के बारे में बताया गया?

संविधान प्रत्येक राज्य के लिए एक विधान मंडल उपलब्ध कराता है। प्रत्येक प्रदेश में विधान मंडल में राज्यपाल तथा एक या दो सदन होते हैं। प्रदेश में यह विधान मंडल द्विसदनी(दो सदन का एक होना),

SCERT TELANGANA

या एक सदनी(एक सदन) होती है। निचला सदन विधान सभा और उच्च सदन विधान परिषद कहलाता है। वर्तमान में बहुत ही कम प्रदेशों में द्विसदनी विधानमण्डल है।

विधान सभा (Legislative Assembly)

प्रदेश में कानून बनाने के लिए यह महत्वपूर्ण सदन है। राज्य की सरकार कानून बनाने तथा लागू करने के लिए उत्तरदायी होती है और प्रदेश के लिए कल्याण कारी योजनाएँ तैयार करती है, उस सभा में अनेक सदस्यों का समावेश होता है। हमारे प्रदेश की सभा में 119 सदस्य(विधायक)होते हैं जो कि जनता द्वारा चुने जाते है ठीक वैसे ही जैसे पंचायत के सदस्य चुने जाते है।.

साधारणतः प्रत्येक विधान सभा का कार्यकाल ५ वर्ष का होता है, लेकिन कभी-कभी राज्यपाल द्वारा इसे समय से पूर्व भी भंग कर दिया जा सकता है। इसी प्रकार जब कभी देश में आपातकालीन स्थिति होती है तो संसद द्वारा इसके कार्यकाल में एक वर्ष बढ़ाया भी जा सकता है।

प्रदेश में विधान मण्डल वर्ष में दो बार बैठके बुलाता है और दोनों बैठको के बीच में छः महीने से अधिक का समय नहीं होना चाहिए।

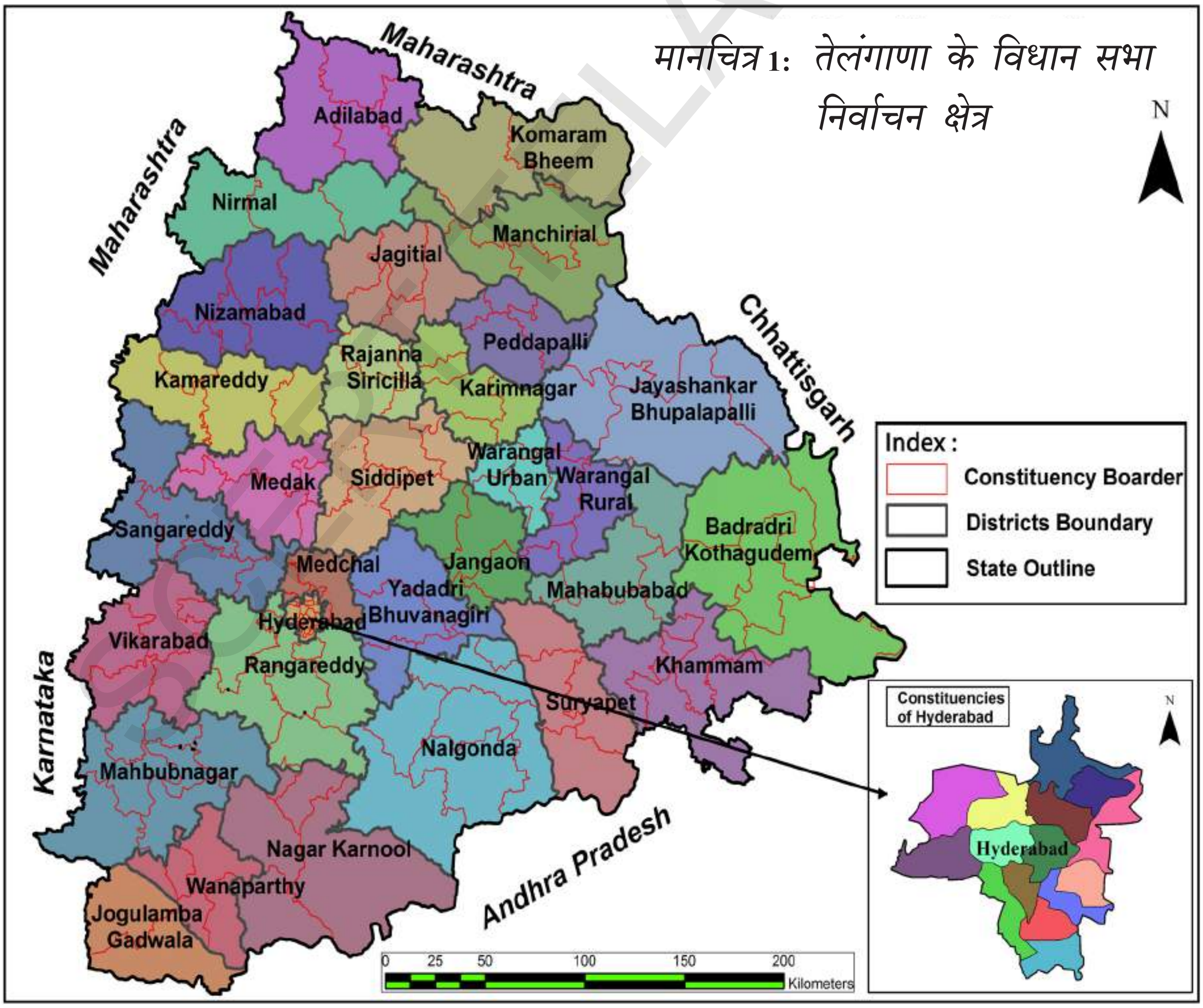

मानचित्र 1: तेलंगाणा के विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र

SCERT TELANGANA

तेलंगाना में विधान मंड़ल द्वारा कानून बनाया जाता है जिसके दो सदन है।		
सदन	सदस्य	संक्षिप्त रूप
विधान सभा	विधान सभा के सदस्य	MLA
विधान परिषद	विधान परिषद के सदस्य	MLC

विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में

119 सदस्य में से हर सदस्य निर्वाचन क्षेत्र से चुनी जाता है। प्रदेश में चुनावी क्षेत्र की संख्या उसकी जनसंख्या पर आधारित होती है। इस प्रकार प्रदेश में 119 चुनावी क्षेत्र है। तेलंगाना के निर्वाचन क्षेत्र में लगभग 1,70,000 मतदाता है। आपको याद होगा 18वर्ष या उससे अधिक उम्र के स्त्री या पुरुष दोनों को मत देने का अधिकार है। उन्हें अपना नाम अपने क्षेत्र में मतदाता के रूप में लिखवाना पड़ता है, जहाँ वे रहते है। एक निर्वाचन क्षेत्र से सभी मतदाता एक सदस्य को सभा के लिए चुनते हैं।

प्रत्येक चुनावी क्षेत्र में कई गाँव, शहर और नगर होते हैं। बड़े शहर जैसे हैदरबाद को तेरह चुनावी क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। तेलंगाना के मानचित्र को देखिए। आप देख सकते हैं कि वे जिले जहाँ अधिक जनसंख्या होती हैं, वहाँ अधिक निर्वाचन क्षेत्र होते हैं और कम जनसंख्या वाले क्षेत्र में कम निर्वाचन क्षेत्र होते हैं।

MLA(विधायक) का चुनाव

सामान्यत: चुनाव आयोग प्रादेशिक विधान मंड़ल में चुनाव का आयोजन पाँच वर्ष में एक बार करता है। जो व्यक्ति विधायक बनना चाहता है चुनाव में खड़ा होता है। विभिन्न राजनैतिक दल अपने उम्मीदवारों के नाम लिखवाते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जो चुनाव लड़ते हैं किंतु किसी राजनैतिक दल से संबंधित नहीं होते। वे "स्वतंत्र उम्मीदवार". कहलाते हैं। चुनाव लड़ने के लिए व्यक्ति को भारतीय नागरिक होना चाहिए और जो 25 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो। वह प्रदेश से या केन्द्रीय सरकार से कोई लाभ प्राप्ति नहीं करता हो और कानून द्वारा निर्धारित अन्य योग्यताओं का भी अर्जन कर चुका हो।

चुनाव में राजनैतिक दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी राजनैतिक दल और उम्मीदवार चुनावी घोषणा पत्र के साथ बाहर आते हैं। इन पत्रों में वे अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रम की जानकारी देते हैं जो स्थानीय संदर्भ से संबंधित होती है। उम्मीदवार और उनके सहायक सभा का आयोजन कर और मतदाताओं के घरों पर जाकर चुनाव का प्रचार करते हैं।

- आपके क्षेत्र के सक्रिय राजनैतिक दलों के नाम की सूची बनाइए और उनके चुनाव चिहन् बताइए।
- अगर आप जिले से चुनाव लड़ना चाहे हैं तो चुनावी घोषणा पत्र तैयार कीजिए। चुनावी क्षेत्र के लोगों से अपने वायदे बताइए।
- कुछ लोग समझते हैं कि चुनाव में अधिक धन खर्च होता है और वह केवल धनी लोगों के सामर्थ्य में है। क्या आप इससे सहमत हैं?
- अगर केवल अमीर लोग ही चुनाव लड़ सकते तो सभा में लिये जाने वाले निर्णयों पर इसका असर कैसे होता?

SCERT TELANGANA

Fig 16.2

- चुनाव आयोग द्वारा प्रकाशित कैलेंडर से कुछ चित्र (16.2) में प्रस्तुत किये गये हैं। ये विभिन्न समय में हमारे देश में होने वाले चुनाव की विभिन्न छवियों और समय को दर्शा रहे हैं। इन चित्र एवंआकृतियों के आधार पर अपने अध्यापक और बुजुर्गों से इस पर चर्चा कीजिए कि पिछले कुछ वर्षों में क्या परिवर्तन देख गए हैं।

मतदान के दिन लोग एक के बाद एक मत देते है। मतदान केन्द्र पर उपस्थित अधिकारी मतदाता की पहचान करने के उत्तरदायी होता है। अधिकतर मामलों में चुनाव आयोग सभी मतदाताओं को चुनाव पहचान कार्ड़ देता है। इस कार्ड को अधिकारी को दिखाना पड़ता है। मतदाता अपने द्वारा दिए गए मत को गुप्त रखते है। चुनाव आयोग मतदान की प्रक्रिया में बैलेट बॉक्स या इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का उपयोग करता है।

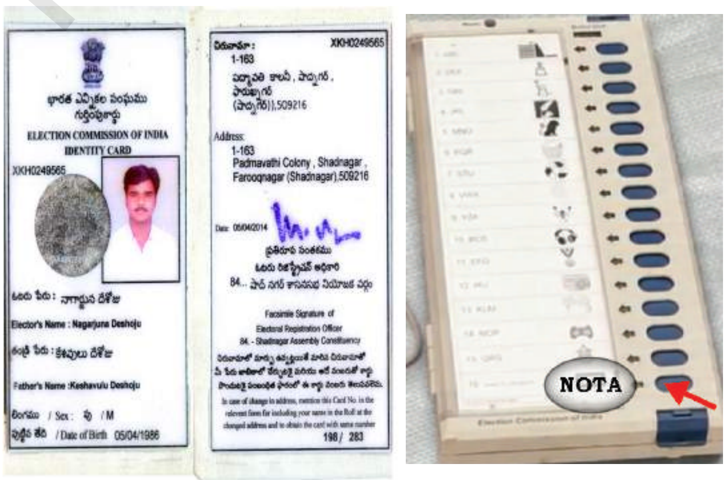

चित्र *16.3*

- आपको ऐसा क्यों लगता है कि इसे गुप्त रखा जाना चाहिए ?
- अपने अभिभावकों के फोटो पहचान कार्ड का परीक्षण कीजिए और अपने लिए सभी जानकारियों काल्पनिक पहचान कार्ड के साथ बनाइए।

SCERT TELANGANA

मतदान के बाद सभी मतों की गिनती निर्धारित दिनांक को की जाती है और जिस उम्मीदार को अधिक मत मिलते हैं वह विजयी घोषित किया जाता है।

- मान लीजिए एक चुनावी क्षेत्र में 1,50,000 मतदाता है, नीचे विभिन्न उम्मीदवारों को प्राप्त मतों की संख्या है। इनमें से आप के विचार से कौन निर्वाचित घोषित किया गया होगा?

एलम्मा	45,000
राघवुलु	44,000
नरसिम्हा	16,000
गुलाम मुहम्मद	20,000
बट्टेय्या	15,000
पूजा	10,000

- आपके विचार में विजयी उम्मीदवार अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों के विचारों और आवश्यकताओं का वास्तविक प्रतिनिधित्व किस स्तर तक करेंगे ?

आपके अध्यापक की मदद से पता कीजिए:-

- आपके चुनावी क्षेत्र का नाम ____________
- आपके जिले के तीन अन्य निर्वाचन क्षेत्रों को पहचानिए __________ ______________________________
- MLAका नाम ____________ ______________________________
- आपके जिले के आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र पहचानिए ____________________
- आपके परिवार के सदस्यों के नाम लिखिए जिन्होंने पिछले चुनाव में वोट दिया था।

सरकार का गठनः- (Formation of Government)

तालिका 1को देखिए। ये विधासभा के चुनाव के बाद के परिणाम दिखाती हैं।.

हमने देखा कि राजनैतिक दल A के 75 उम्मीदवार विजयी रहे। जिस दल ने आधे से अधिक स्थानों को प्राप्त किया है वह बहुमत वाला दल कहलाता है। अगर कोई कानून बनाना हो तो वे सरलता से इसे पारित किया जा सकता है क्योंकि आधे से अधिक सदस्य उसे समर्थन देते है।

बहुमत प्राप्त दल में से वे एक व्यक्ति का चुनते हैं और उसे नेता बनाते हैं। महिला या पुरूष को राज्यपाल द्वारा प्रदेश के लिए मुख्यमंत्री बनाया जाता है। मुख्यमंत्री उनमें से मंत्रियों के रूप में MLA को चुनते हैं। सभी को मिलाकर वह कैबिनेट(मंत्रालय) कहलाता है। प्रसिद्ध शब्दों में कैबिनेट को 'सरकार' भी कहते है। विकासशील योजनाओं को लागू करने और ऩए कानून बनाने तथा पारित करने और सभा के लिए कल्याणकारी योजनाएँ बनाने के लिए कैबिनेट उत्तरदायी होती है।

तालिका 1	राजनीतिक दल	चुने हुए उम्मीदवारों की संख्या
1	राजनीतिक दल - A	75
2	राजनीतिक दल - B	17
3	राजनीतिक दल - C	10
4	राजनीतिक दल - D	7
5	राजनीतिक दल - E	6
6	राजनीतिक दल - F	4
	कुल	**119**

SCERT TELANGANA

- तालकि **1** देखिए जो 119 निर्वाचित क्षेत्रों वाले अन्य राज्य के विधान सभा चुनाव के परिणाम दर्शाती है, किस दल ने सरकार का निर्माण किया होगा?

तालिका 2	राजनीतिक दल	निर्वाचन उम्मीदवारों की संख्या
1	राजनीतिक दल- P	202
2	राजनीतिक दल - Q	50
3	राजनीतिक दल - R	11
4	राजनीतिक दल- S	11
5	राजनीतिक दल - T	8
6	राजनीतिक दल - U	6
7	राजनीतिक दल - V	2
	कुल	**290**

- तालकि **3** में बनाये अनुसार यदि चुनाव में सीटों का बंटवारा विभिन्न दलों में किया जाता है तो अपने समूह में चर्चा कीजिए और पता लगाइए कि नई सरकार की स्थापना कैसे की जाएगी?

तालिका 3	राजनैतिक दल	निर्वाचन उम्मीदवारों की संख्या
1	राजनीतिक दल - Abcd	45
2	राजनैतिक दल - Mnop	33
3	राजनैतिक दल - Wxyz	26
4	राजनैतिक दल - Stuv	15
	कुल	**119**

अगर किसी भी एक दल को आधे से अधिक मत नहीं मिलते हैं, तो दो या उससे अधिक राजनैतिक दल एक साथ मिल जाते हैं और सरकार की स्थापना करते हैं। इसे संयक्त सरकार (Coalition Governemnt) कहते हैं।

मंत्रियों की परिषद (Council of Ministers)

मुख्य मंत्री कैबिनेट के मंत्रियों को विभिन्न मंत्रालय सौंपते हैं। वह किसी को वित्त मंत्री, शिक्षा मंत्री या गृह मंत्री या अन्य मंत्री बनाता है। मंत्री अपने विभाग की योजना का निर्देश देते हैं। विभाग के अधिकारियों द्वारा इन योजनाओ को कानून के अनुसार लागू किया जाता है। इन पद्धतियों और योजनाओं को सभा में सहमति के लिए प्रस्तुत करने का उत्तरदायित्व मंत्रालय का होता है। सभा की सहमति के पश्चात मंत्रालय इसे लागू करने के लिए कानून और पद्धतियाँ बनाते हैं।

प्रत्येक मंत्रालय स्वतंत्र रूप से कार्य करता है, बड़ी पद्धतियों आदि पर पूरे कैबिनेट के द्वारा निर्णय लिया जाता है। इसीलिए यदि कोई चीज गलत हो जाए तो सारा कैबिनेट और मुख्य मंत्री इसके लिए उत्तरदायी होता हैं। अच्छे काम के लिए सारे कैबिनेट को श्रेय भी मिलता है।

राज्य विधान सभा (The State Assembly)

सभी विधायक मिल कर एक अध्यक्ष (Speaker) को चुनते हैं। अध्यक्ष सभाओं का आयोजन करते हैं, निर्णय लेते हैं कि किन विषयों पर चर्चा की जाए, कब और कौन किस तरीके से बोलेगा आदि। अगर कोई इसका उल्लंघन करता है तो, अध्यक्ष को उसे दंडित करने का अधिकार होता है।

उपरोक्त कथन के अनुसार सभा को सभी कानूनों को स्वीकृति, नीतियों को और सरकार द्वारा लगाये जाने वाले कर लगाने का अधिकार होता है। सहमति देने के पहले सदस्य ध्यानपूर्वक उस पर चर्चा करते है और विभिन्न दृष्टियों से विचारों को प्रस्तुत करते हैं। इसलिए इसके अच्छे और बुरे परिणाम पर गहराई से विचार किया जाता है। इसीलिए इन मापदंडों के लाभों और कुप्रभावों की विस्तारपूर्वक चर्चा की जाती है। समाचार

SCERT TELANGANA

पत्रों और दूरदर्शन द्वारा इसे जनता के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

MLA भी अपने निर्वाचन क्षेत्र में विकास कार्य करते हैं और समय-समय पर सभा में लोगों की समस्याओं को प्रस्तुत करते है। उस विभाग के मंत्रियों को इसका पता लगाना होता है और सभी प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। मंत्री व्यक्तिगत रूप से और मुख्यमंत्री के साथ संपूर्ण कैबिनेट सभा के लिए उत्तरदायी होते है। इसीलिए किसी भी मंत्री को सदस्यों द्वारा पूछे जाने वाले किसी भी प्रश्न के उत्तर देने के लिए तैयार रहना पड़ता है। अगर उत्तर सन्तोषजनक न हो तो सदस्य उसे त्याग पत्र देने पर विवश कर सकते हैं।

कानून निर्माण:- (The Making of Laws)

सभा में कानून कैसे बनते हैं ? अधिकतर कानून का प्रारूप सत्ता दल करता है क्योंकि उसका अकेले का सहयोग सभा में कानून पारित करने में अधिक होता है। किन्ही विशेष विषयों पर सदस्य कानून का प्रस्ताव भी रख सकते है और बहुमत द्वारा इसे अपनाया भी जा सकता है। विस्तार से कानून बनाने की विधि को देखिए।

कानून पारित होने के पहले, प्रस्तावित कानून बिल कहलाता है। दोनों सदनों द्वारा पारित होने पर और राज्यपाल के समर्थन के बाद यह कानून बनता है और राज्य विधानमण्डल का अधिनियम कहलाता हैं।

तेलंगाना की विधान परिषद (Legislative Council of Telangana)

2014 तक तेलंगाना और आन्ध्रप्रदेश एक राज्य थे। आन्ध्रप्रदेश में दो सदन है। दूसरे सदन को विधान परिषद कहते है। इसका आरम्भ दो सत्रों में हुआ 1958-1985 और 2007 से अब तक। यह स्थाई सदन है। तेलंगाना विधान परिषद में 40 सदस्य है। ये सदस्य MLCs कहलाते है जो 6 वर्ष के लिए चुने जाते है। प्रति दो वर्ष के पश्चात इसके 1/3 सदस्य सेवानिवृत्त हो जाते है। इसके चुनाव में लड़ने के लिए व्यक्ति को भारतीय नागरिक होना पड़ेगा और 30 वर्ष से अधिक आयु वाला हो। उसे प्रादेशिक या केन्द्रीय सरकारी आय प्राप्त ना हो और संसद द्वारा निर्धारित सभी योग्यताओं से युक्त हो। इसकी संरचना इस प्रकार है।

संरचना (Composition) :–

- 14 सदस्य (1/3) MLA’s के द्वारा निर्वाचन।
- 34 सदस्य (1/3) स्थानीय संस्थाओं जैसे पंचायत और नगरपालिकाओं द्वारा निर्वाचित
- 3 सदस्य (1/12) स्नातकों द्वारा निर्वाचित
- 3 सदस्य (1/12) अध्यापको द्वारा निर्वाचित
- 6 सदस्य(1/6) राज्यपाल द्वारा मनोनीत

प्रदेश में कानून बनाने के लिए, दोनों सदनों का समर्थन आवश्यक है।

राज्यपाल:- भारत के राष्ट्रपति द्वारा राज्यपाल की नियुक्ति होती है। उनका कार्य यह होता है कि वे इस बात का ध्यान रखे कि भारतीय संविधान द्वारा प्रादेशिक सरकार कार्य करे। राज्यपाल मुख्यमंत्री और अन्य परिषदों के अन्य **मंत्रियों की नियुक्ति करते हैं। प्रादेशिक सरकार में संविधान के राज्यपाल को सभी विधान मण्डलीय अधिकार दिए गये है।**

तेलंगाना के राज्यपाल कौन हैं? पता लगाइए।

SCERT TELANGANA

आरक्षण की प्रणाली

चुनाव में लड़ना और जीतना दलित या आदिवासी जैसे कमजोर वर्ग, के लिए बड़ा कठिन कार्य है। इसलिए उनमें से बहुत ही कम विधानसभा के लिए चुने जाते हैं। इसीलिए भारतीय संविधान ने सभाओं में अनिवार्य रूप से उन्हें लाने के लिए अनुसूचित जाति और जन जाति लोगों के लिए स्थान आरक्षित किए हैं।

तेलंगाना प्रदेश में प्रादेशिक विधान सभा में आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र:

कुल निर्वाचन क्षेत्र	119
अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित क्षेत्र	19
जनजाति के लिए आरक्षित क्षेत्र	12
एंग्लो इण्ड़ियन समुदाय	01

- कई लोग सोचते हैं कि इसी प्रकार महिलाओं के लिए भी सीटें आरक्षित होनी चाहिए आप क्या अनुभव करते हैं ?

जो मंत्री बिल लाता है, उसे नए कानून को सभा में प्रस्तुत करने के पहले विस्तार से उसके विषय में कारण बताने पड़ते हैं उस पर बहुत अधिक चर्चा की जाती है और विभिन्न MLAs के द्वारा इसका विरोध भी किया जाता है। बिल में विकास के लिए सुझाव भी प्रस्तुत किए जाते हैं। एक छोटी समिति जिसमें सत्ता दल और विरोधी सदस्य दोनों मिल कर सुझाव पर चर्चा करते हैं। इन सभी विधियों के बाद तथा आवश्यक परिवर्तन के बाद इसे पहले कैबिनेट में समर्थन के लिए प्रस्तुत किया जाता है। फिर इसे सभा में मत के लिए प्रस्तुत किया जाता है। अगर विधान सभा के आधे से अधिक सदस्यों का बहुमत बिल को मिल जाता है तो उसके बाद उसे विधान परिषद में प्रस्तुत करते है। अगर विधान परिषद में यह पारित हो जाता है तो राज्यपाल के पास सहमति के लिए भेजा जाता है। उनके समर्थन के पश्चात बिल को अधिनियम कहा जाता है और इसे सरकारी समाचार पत्र (Gazettee) में छापा जाता है।

विधानसभा में चर्चाएँ:- (Disussion in the Assembly)

चलिए विधान सभा में होने वाली चर्चा का काल्पनिक उदाहरण पढ़ेंगे।

MLA (1) : माननीय अध्यक्ष, पिछले तीन वर्षों से वर्षा की कमी के कारण मेरे निर्वाचित क्षेत्र में भूमिगत जल का स्तर बहुत नीचे चला गया है । इस सम्बन्ध में सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया है। यहाँ बोरवेल की मात्रा में वृद्धि हुई है। मैं जानना चाहूँगा कि माननीय मंत्री ने भूमिगत जल और जल संरक्षण के संदर्भ में क्या कदम उठाया है।

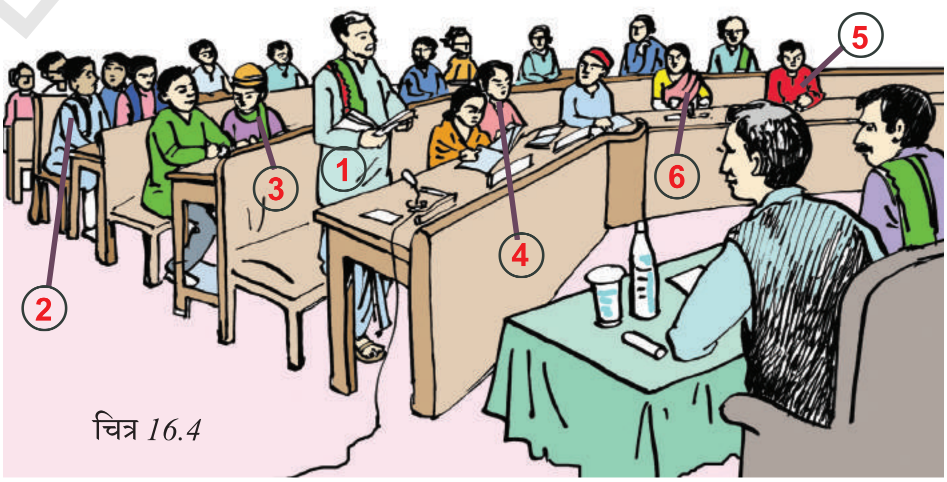

चित्र *16.4*

SCERT TELANGANA

MLA (2): माननीय अध्यक्ष, यह सच है। मेरे निर्वाचन क्षेत्र की स्थिति भी अच्छी नहीं है। अधिकारियों का काम सन्तोष जनक नहीं है। लोगों को पीने के पानी लाने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है ।

MLA (3): माननीय अध्यक्ष, सरकार द्वारा तालाब बनाने के लिए पैसा देना चाहिए, जमी हुई मिट्टी को निकालने और वर्षा के पानी को संचित करने के लिए वर्षा ऋतु में अनुरूप कदम उठाए जाने चाहिए। तालाब के किनारे ज्यादा-से -ज्यादा वृक्ष लगाए जाने चाहिए।

MLA (4): माननीय अध्यक्ष, सरकार इस स्थिति से अवगत है। इस हानि को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। भूमिगत जल के अभाव से ग्रसित मण्डलों को पहचाना गया है।

MLA (5) : माननीय अध्यक्ष, विपक्षी दलों को उठाए गए कदम की प्रशंसा करनी चाहिए और रचनात्मक सुझाव देना चाहिए । उन्हें व्यर्थ में सरकार की निन्दा नहीं करनी चाहिए। मेरे निर्वाचन क्षेत्र में पहाड़ी ढलाऊ क्षेत्र में जलाशय का निर्माण किया गया है और इसका परिणाम यह हुआ है कि भूमिगत जल के स्तर में विकास आया है। सरकारी अधिकारी जनता की पहुँच में है।

MLA (6): माननीय अध्यक्ष, क्षेत्र के औद्योगिक संघ प्रदूषित जल को नदियों में प्रवाहित कर रहे हैं और इसका बुरा असर लोगों के स्वास्थ्य पर हो रहा है। मैं यह जानना चाहूँगा कि सरकार इस विषय में क्या कदम उठा रही है। मेरे निर्वाचन क्षेत्र में पीने के पानी की गम्भीर समस्या है।

मंत्री: माननीय अध्यक्ष, सरकार लोगों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक है। इसने सभी प्रकार के आवश्यक सुरक्षित उपाय मण्डल के सूखा अधिकृत भाग के लिए उठाए हैं, जैसे तालाबों का विकास, पेड़ लगाना और रेत की खदानें बनाना, आदि। सरकार सभी मानवीय सदस्यों के सुझावों पर ध्यान देगी और कार्यक्रम को सफलता पूर्वक लागू करने के लिए सहायता करेगी।

- अगर आप MLA होते तो आप उपरोक्त विषय पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होती ?
- सत्ता दल MLA और विरोधी दल के MLAकी पात्रता में क्या अन्तर है ?

मुख्य शब्द :

1. चुनावी घोषणा पत्र
2. कैबिनेट
3. अध्यक्ष

मेरी सुरक्षा :

लैंगिक अपराधों से बच्चों की सुरक्षा (अधिनियम)

बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने एक विशेष क़ानून बनाया है। इस क़ानून को 'लैंगिक अपराधों से बच्चों की सुरक्षा का अधिनियम-२०१२ () ' कहते हैं। बच्चों की सुरक्षा भंग होने पर यह क़ानून उनके अभिभावकों को क़ानूनन विशेष अदालतों के द्वारा सुरक्षा प्राप्त करने का अक्सर प्रदान करता है। बच्चों की सुरक्षा भंग करने वाले क़ानून की दृष्टि में दोषी समझे जाएंगे। विशेष अदालत के जज बच्चों के बयान को ही मान्य मानकर किसी गवाह और प्रमाण के बिना भी सजा सुनाएंगे। यह क़ानून बाल मित्र है और बच्चों को सुविधा एवं सुरक्षा प्रदान करेगा।

हमने क्या सीखा ?

1. सामान्य लोगों के जीवन से संबंधित उन क्षेत्रों के नाम बताइए जिन पर कानून बनाये गये हैं ? (AS_1)
2. आपका विद्यालय स्कूल शिक्षा विभाग से सम्बन्धित है। कुछ कानूनों का पता लगाइये जो आपके विद्यालय पर लागू होते हैं(विद्यार्थी, अध्यापक,मास्टर, प्रिंसिपल) (AS_4)
3. यह कानून है कि 6-14 वर्ष की आयु के कोई भी बच्चे विद्यालय से अछूते न रहें, इस कानून को लागू करने के लिए कौनसे कदम उठाए जाने चाहिए? आपके अध्यापक की सहायता से आपस में चर्चा कीजिए।(AS_4)
4. कानून निर्माण अनुच्छेद को पढ़िए और निम्न प्रश्न का उत्तर दीजिए। (AS_4)

   यदि आप तेलंगाना विधान सभा के सदस्य हैं, आप कानून बनाने के लिए किस विषय को उठाएगे और क्यों? उदाहरण के साथ समझाइए।
5. मान लीजिए 368 MLA की सीटों के साथ पूरबगढ़ एक प्रदेश का चित्र है। चुनाव के बाद विभिन्न राजनैतिक दल को इतनी सीटें मिली हैः- (AS_3)

दल A	=	89
दल B	=	91
दल C	=	70
दल D	=	84
अन्य	=	34
कुल	=	368

उपरोक्त तालिका को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए

a) प्रदेश में सरकार बनाने के लिए 368सीटों में से कितनी सीटों पर जीत प्राप्त करना होगा?

b) इस चुनाव के बाद कौनसा दल बड़ा है?

c) क्या एक अकेला बड़ा दल सरकार बना सकता है ? यदि नहीं तो इसका दूसरा क्या उपाय है?

d) एक दलीय सरकार से संयुक्त दल की सरकार किस प्रकार भिन्न है?

6. वर्तमान काल में हमारे देश में द्विसदनी सभा बहुत ही कम प्रदेशों में है। क्या आप नाम बता सकते हैं? (AS_1)
7. आपके जिलों के मानचित्र में विधानसभा चुनावी क्षेत्र को अंकित कीजिए। (मानचित्र 1 की सहायता लिजिए।) (AS_5)

SCERT TELANGANA

अध्याय

17 जिला स्तर पर कानून का कार्यान्वयन (Implementation of Laws in the District)

आपने पिछले अध्याय में कानून किस तरह बनते हैं, कल्याणकारी कार्य एवं प्रगति की योजनाएँ किस तरह बनती हैं उसकी जानकारी प्राप्त की है। ये कानून किस तरह लागू किए जाते हैं ? क्या आप सोचते हैं कि जो ये कानून बनाता है वह भी निर्वाचित होता है ? क्या कानून बनते ही लोग अपने आप उन्हें लागू करने लगते हैं। इस अध्याय द्वारा आप जानेंगे कि यह सब किस तरह से होता है।

i. बाँध एवं नहरों का निर्माण

ii. घरों तक बिजली पहुँचाना

iii. राशन की दुकानें चलाना

iv. रेल की व्यवस्था करना

v. नोट छापना

vi. जनता से कर प्राप्त करना

vii. बाल-मजदूरी को रोकना एवं सभी बच्चों को शिक्षा

viii. देश की सीमाओं की रक्षा करना

ix. गरीबी रेखा से नीचे के लोगों की पहचाना करना और उनके लिए लाभदायक योजनाओं को लागू करना।

x. लोगों को दूसरों के घरों से चोरी करने से रोकना।

- आपने कई सरकारी कार्यों के विषय में सुना होगा। क्या आप उनमें से कुछ नाम बता सकते हैं और चर्चा कर सकते हैं कि वे क्या कार्य करते है ?

हमने पिछले अध्याय में देखा है विभिन्न कार्यो के लिए सरकार के कई सारे विभाग होते है । ये विभाग मंत्रियों के नियंत्रण में होते हैं। लेकिन इसमें कई अफसर सरकारी आदेश का पालन करते हैं। इन में से कुछ अधिकारी राज्य की राजधानी हैदराबाद में नियुक्त हैं जहाँ से वे राज्य के हर भाग में कानून लागू (implementation) करते हैं। साथ ही राज्य को कई जिलों में बाँटा जाता है और अधिकतर विभागों के कार्यालय उन्ही जिलों में होते है ताकि सरकारी कानून एवं योजना को लागू किया जा सके। तेलंगाना में 31 जिले है।

- आपके जिले का नाम क्या है और उसका मुख्यालय कहाँ पर है ?

SCERT TELANGANA

हर जिले में एक जिलाधीश एवं मजिस्ट्रेट होते है जो जिले के सभी विभागों का कार्य देखते हैं। उनके कार्य के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

नल्लावरम के जिलाधीश एवं मजिस्ट्रेट (The District Collector of Megistrate of Nallavaram)

यहाँ पर एक काल्पनिक जिला नल्लवरम है। इस जिले के मण्डल इस प्रकार हैः-गारिपल्ली, मल्लेपल्ली, नरसापेट,गुरुथुर। नल्लावरम के जिला मेजिस्ट्रेट का कार्यालय, नल्लावरम शहर में हैं।

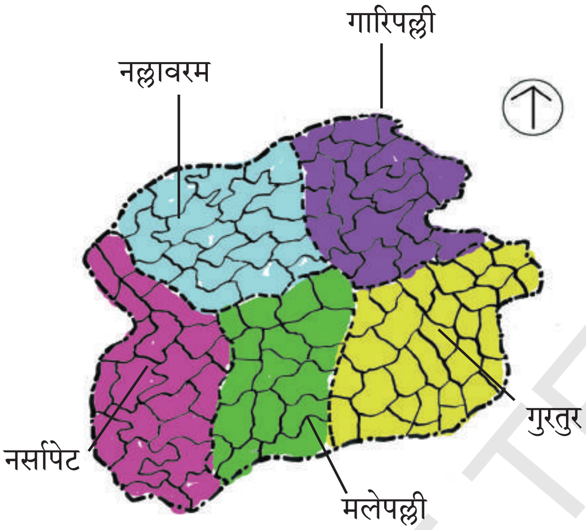

चित्र 17.1 नल्लारम जिला

जिला मजिस्ट्रेट मनीषा नागले प्रति दिन सवेरे 10:30 तक अपने कार्यालय पहुँच जाती है। आज 11:30 बजे विभागों के अफसरों की एक सभा है। सभी विभागों के मुख्य इस में पधारे हैं। जिलाधीश इन सभी से पिछले महीने उनके विभाग में क्या प्रगति हुई है उसके विषय में जानकारी प्राप्त करती हैं। वह अपने कार्यालय में किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं इसकी जानकारी भी प्राप्त करती हैं। यह सभा दोपहर के लगभग 2 बजे तक चलती रही।

सभा समाप्त होने के बाद मनीषा नागले सभी फाइलों की जाँच करती है। फाइलों का ढेर लगा है । हर फाइल में अलग-अलग विभाग के कार्यो की जानकारी है। वह सभी फाइलें पढ़ती हैं और उन पर अपनी टिप्पणी या आदेश लिखती है। दोपहर 3.00 बजे तक वह ये कार्य पूरा कर लेती है। 3.00 बजे से 4.30 बजे तक वह जिले के लोगों से मिलती हैं । जिले के हर मण्डल से लोग अपनी समस्याएँ लेकर उनके पास आते हैं।

मल्लेपल्ली गाँव के कुछ किसान उनके गाँव में सिंचाई की कमी के विषय में उनसे बात करते हैं। उनके गाँव में लगभग 2 वर्ष से तालाब सूखे पड़े हैं। इस वर्ष फसलें भी नहीं हुई है। वे जानना चाहते है कि क्या उनका ऋण माफ कर दिया जाएगा, या फिर तालाबों के तट पर कुछ मरम्मत की जा सकती है। पड़ोस के गाँवों में जलाशय के बांधो की मरम्मत हुई हैं। वे चाहते है कि ऐसा कार्य उनके गाँव में भी हो।

मनीषा नागले ने उन्हें बताया है कि चूँकि उनका गाँव राज्य के सूखाग्रस्त क्षेत्र में नहीं आता, इसीलिए उनके ऋण माफ नहीं किए जा सकते । जिलाधीश ने उन्हें राय दी है कि वे अपने गाँव के MLA से मिले और अपनी समस्या उन्हें बताएँ। उन्होंने गाँव के लोगों को वचन दिया है कि वे सिंचाई विभाग से उनके जलाशय की समस्या को निपटाने के लिए कहेंगी।

अगले दिन सवेरे5.00 बजे जिलाधीश को नरसापेट मण्डल से फोन आता है कि वहाँ के कपास मिल में कल रात आग लग गई है। आग बुझाने वाले वहाँ पहुँच चुके हैं। यह आवश्यक था कि आग पड़ोसी स्थानों में न फैले। नागले तुरन्त ही नरसापेट के लिए निकल पड़ती है। उन्होंने पुलिस अधिकारी तथा डॉक्टर से भी फोन पर वहाँ पहुंचने के लिए कहा।

जिलाधीश 7.00 बजे तक नरसापेट पहुँच गई। वे सीधे कपास की मिल में गई। बहुत सारी कपास जल कर बरबाद हो चुकी है । लेकिन आग पर काबू कर लिया गया था। पुलिस अफसर एवं नगर निगम के अध्यक्ष भी

चित्र 17.2 कपास की मिल में जिलाध्यक्ष

वहाँ पहुँच चुके हैं। जिलाधीश ने उनसे नुकसान की जानकारी प्राप्त की। नगर निगम अध्यक्ष ने उनसे कहा है कि दो श्रमिक काफी जल गए हैं और इन्हें पास के अस्पताल में भर्ती किया गया है। पास के कुछ घर भी जल गए हैं।

नागले ने उन परिवारों को दस हजार रूपए देने की घोषणा की और आग किस तरह फैली इसके विषय में भी जाँच के आदेश दिये। उसके बाद वह आग में जले श्रमिकों को देखने अस्पताल पहुँची। उन्होंने वहाँ पर इन श्रमिकों को 20 हजार रु प्रति व्यक्ति देने की घोषणा की।

वापसी में वे नगर निगम के कार्यालय पहुँची। वहाँ उन्हें पता चला कि शहर के कई स्थानों में अतिक्रमण के कारण फायर इंजन देर से पहुँचा। सड़क के दोनों ओर दुकान वालों ने कब्जा कर लिया। कई बिल्डिंगों।और घरों ने भी गैरकानूनी तरीके से सीमा से आगे अपनी घर की दीवारें बाँध ली हैं। इससे शहर के कई स्थानों में ट्राफिक जाम हो रहा है। मनीषा नागले ने नगर निगम के अफसरों से बात की और उन्हें आदेश दिया कि वह इसके विरोध में कुछ कठोर कदम उठाए और अगली सभा में उसकी जानकारी दे। नागले अंधेरा होने के बाद ही गाँव पहुँच सकी।

नल्लावरम एक काल्पनिक गाँव है। लेकिन यहाँ पर आपने जिलाध्यक्ष को जो कार्य करते देखा है ऐसा ही हर जिलाध्यक्ष को हर जिले में करना चाहिए।

- जिलाध्यक्ष ने ऋण न माफ करने का किसानों को क्या कारण बताया?
- आग दुर्घटना में और किन अधिकारियों के नाम हैं?
- इस दुर्घटना में और किन व्यक्तियों के विषयों में बताया गया है?

तहसीलदार(MRO) एवं ग्राम राजस्व अधिकारी (Tahasildar (MRO) and Village Revenue Officer)

आपने देखा है कि नल्लावरम जिले को मण्डलों में बाँटा गया है। हर मण्डल में अनेक गाँव हैं। नीचे दिए गए मान चित्र में आप देख सकते हैं कि नल्लावरम को कई मण्डलों में विभाजित किया गया है। कई गाँवों को मिलकर एक मण्डल बनता है। जिला मुख्यालय की तरह ही मण्डल में भी कई विभाग होते हैं। यह विकास मण्डल अधिकारी, राजस्व, शिक्षा, कृषि और अन्य अधिकारी होते है।

- जिला मानचित्र में अपने मण्डल का नाम पता कीजिए।
- अपने जिले के मानचित्र में कुछ मण्डलों के नाम ज्ञात कीजिए।

SCERT TELANGANA

रेवन्यू आफिसर अपने पास भूमि का लेखा-जोखा भी रखते हैं। अगर आप गाँव में, या अपनी भूमि पर रहते है, तो आपको पता होगा कि आपने माता-पिता के पास उनके पास जितनी भी भूमि है उसका विवरण होता है। पूरे देश की भूमि को नापा जाता है और इसकी जानकारी इन कार्यालयों में रखी जाती है। इनके पास विभिन्न लोगों के पास की भूमि, कृषि, जलाशय, निकास, कुएँ, पडोस की भूमि, सड़क, पहाड़ इत्यादि के मानचित्र भी होते हैं। यह सभी पत्र अत्यन्त उपयोगी होते हैं। अगर किन्हीं दो गुटों में भूमि की सीमा को लेकर विवाद हो तो यह प्रमाण-पत्र एवं मानचित्र समस्या को निपटाने में काफी सहायक होते हैं। यदि कोई भूमि खरीदता है या बेचता है तब इस सूचना को इस कार्यालय में लिखवाना आवश्यक होता है। इन मानचित्रों में चरवाह वन या गैर उपजाऊ भूमि की भी सूचना होती है इसीलिए अगर कोई इस ज़मीन का अतिक्रमण करे तो उसे खाली किया जा सकता है।

चित्र 17.3 गाँव के लोग सी सेवा केन्द्र से भूमि लेखा जोखा की जानकारी प्राप्त करते हुए।

गाँव के राजस्व शाखा अधिकारी एवं मण्डल राजस्व शाखा अधिकारी की यह जिम्मेदारी है कि वे इस का लेखा-जोखा रखे। उनकी यह भी जिम्मेदारी है कि वो सभी को राशन कार्ड भी उपलब्ध कराएँ। और उसका नवीनीकरण करे इसके लिए ***मी सेवा केन्द्र*** का उपयोग किया जा रहा है और इन केन्द्रों से विभिन्न प्रकार के प्रमाण पत्र का दिए जाते है।

कानून किस तरह लागू किए जाते हैं: (How Laws are implemented)

इसे समझने के लिए, हमें पहले यह पता करना चाहिए कि असल में कानून क्या होता है? पिछले अध्याय में आप पढ़ चुके हैं कि भू-गर्भ जल का क्या महत्व है? और किस तरह ये ऐतिहासिक रूप से कृषि की प्रगति में महत्वपूर्ण है। हमारे पास बारह-मासी नदियाँ भी हैं और वन आच्छादित क्षेत्र भी हैं। फिर भी हम देखते हैं कि तेलंगाना के कई स्थानों में लगभग 1,500 फीट की गहराई तक बोर-वेल खोदे जाते हैं। इस तरह हम आगे भविष्य में सिंचाई नहीं कर पाएगें और पेयजल की भी कमी हो जाएगी।

आन्ध्र प्रदेश जल भूमि एवं पेड़ सुरक्षा आधिनियम-2002

आने वाली पीढ़ी के लाभ एवं उनके जीवित रहने के लिए इन साधनों की सुरक्षा करना महत्वपूर्ण है। इस के लिए आन्ध्र प्रदेश सरकार ने जल, भूमि और वृक्षों की सुरक्षा के लिए अधिनियम - 2002 को लागू किया है। इसे19-04-2002 से लागू किया गया है। इस अधिनियम की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार है:

a. बोर-वेल खुदवाने के लिए मण्डल रेवेन्यू आफिसर की अनुमति आवश्यक है।
b. कुओं के बीच की दूरी एवं गहराई नियम के अनुसार होनी चाहिए जिससे कोई मतभेद न हो।

c. वर्षा के जल को व्यर्थ न होने दे।

d. उद्योगों में व्यर्थ जल को उपयोगी बनाने की व्यवस्था हो।

e. पेय-जल की सुरक्षा।

f. उन क्षेत्रों में जहाँ पर भू-गर्भ जल कम हो. नदी के किनारों से रेत खोदने पर निषेध लगा दिया जाए।

g. सामाजिक वन व्यवस्था का विस्तार किया जाए।

h. बिना आज्ञा के पेड़ नहीं काटे जाए। अगर कोई पेड़ काटा जाए तो उस स्थान पर दो पेड़ लगाए जाए।

इस कानून को पारित करने के बाद सरकार ने एक अधिकारी संस्था बनाई। जो इस कानून को लागू कर सके। इसे जल,भूमि एवं पेड़ सुरक्षा संस्था WALTA के नाम से जाना गया। अगर आप ध्यान से देखेंगे तो पता चलता है कि किसी कानून को लागू करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न सरकारी विभाग मिलजुलकर काम करें। आप ध्यान दे कि वन विभाग को इसमें रखा गया है क्योंकि वन जल की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। और औद्योगिक सरकारी संस्था भी ताकि वह यह देखे कि फैक्टरी जल प्रदूषण न फैलाएँ।

अब हम एक तालिका बना सकते हैं यह दर्शाने के लिए कि कैसे विभिन्न सरकारी व्यक्ति इस कानून को लागू करने के लिए उत्तरदायी है:

विभाग	**विषय**
भू-गर्भ जल विभाग	बोर-वेल एवं नदी किनारे से रेत खोदने के लिए आज्ञा लेना, जल के विभिन्न स्रोतों का विभाजन आदि।
नगर निगम प्रशासन एवं शहरी विकास विभाग	वर्षा द्वार प्राप्त जल को संग्रह करके उपयोगी बनाना, पेड़ लगाना, नई इमारत बनाने के लिए अनुमति लेना।
खान एवं भू-गर्भ शास्त्र विभाग	जल-विभागों के पास रेत की खुदाई पर नज़र रखना।
वन-विभाग	उच्च प्रदेश में पेड़ लगाने की अनुमति देना।

अब अगर कानून ठीक ढंग से लागू किया जाए तो इसका क्या अर्थ है? अगर ऐसा हो जाए तो इन समस्याओं को देखकर क्या आप बता सकते हैं कि कौन-सा विभाग अपनी उत्तरदायित्व किस तरह निभाएगा ? यदि इसका मूल्यांकन करे तो क्या एक से अधिक विभाग ये कार्य देखते हैं?

- सत्यवती एक किसान है जो एक नया बोर-वेल खुदवाना चाहती है। उसके पडोस की भूमि में एक और बोर-वेल है। उसे कौन से नियम अपनाने चाहिए ?
- पद्मानाभम अपना नया घर बनवाना चाहता है और नदी की सतह से रेत इकठ्ठा करना चाहता है। इसके लिए उसे किससे अनुमति लेनी होगी?
- आप्पराव एक कान्ट्रेक्टर है जो वन के समीप, पत्थरों की खुदवाई करवाना चाहता है। उसे किस विभाग से अनुमति लेनी होगी?

भारत जैसे प्रजातांत्रिक राज्य में जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि एवं दूसरे सरकारी अफसर विभिन्न पात्र निभाते हैं। यह प्राचीन समय में राजाओं द्वारा एक पुजारियों द्वारा किए गए शासन से काफी भिन्न है। इसका अर्थ यह नहीं हम यह नहीं बता सकते है कि समाज से असमानताएँ और भेदभाव पूरी तरह से मिट चुका है। लेकिन हम इसे प्राप्त करने के प्रयत्न कर सकते हैं।

मुख्य शब्द :-

1. मेजिस्ट्रेट
2. तहसीलदार
3. कानून को लागू करना
4. वी आर ओ (VRO)
5. गिनिंग (कपास से बिनौला निकालने की मशीन)

हमने क्या सीखा ?

1. जिलाध्यक्ष द्वारा किए गए कार्यक्रम की एक सूची बनाइए। (AS_1)
2. नीचे दिए वाक्यों को सुधार कर लिखिए : (AS_1)

   a. कानून निर्वाचित सदस्यों द्वारा लागू किया जाता है।

   b. कलेक्टर मण्डल के इन्चार्ज होते हैं। जिलाधीश होते है।

   c. लोग पूरे जिले की समस्याओं को निपटाने के लिए मण्डल अफिसर से मिलते हैं।

   d. भूमि राजस्व का रिकार्ड तहसीलदार (MRO) रखते हैं।
3. पृ. १६० के पहले दो अनुच्छेद पढ़िए तहसीलदार और ग्राम राजस्व अधिकारी पढ़िए और निम्म प्रश्न का उत्तर दीजिए। (AS_2)

   आप ऐसा क्यों सोचते है कि भूमि का लेखा जोखा गाँव एवं मण्डल स्तर पर रखा जाना चाहिए।
4. पिछले दो अध्यायों में कानून कैसे बनता है और उसे कौन लागू करता है इस विषय में हम पढ़ चुके हैं। नीचे दी गई तालिका में उनके पात्रों की तुलना कीजिए: (AS_1)

   a) चुनाव लड़ना पड़ता है b) विभिन्न सरकारी विभागों के अंश हैं।

   c) कानून बनाने के जिम्मेदार d) कानून लागू करने के जिम्मेदार

   e) 5 वर्ष के लिए चुने जाते हैं f) उद्योगों में नियुक्ति की जाती है

विधान सभा के सदस्य	शासन कार्य के सदस्य

SCERT TELANGANA

5. यहाँ पर मनीषा नागले का एक और संक्षिप्त विवरण है। इसे ध्यान से पढ़िए और इसकी तुलना अध्याय 14 में दिए गए "मनसबदार" और "जागीरदार" एवं 13 वे अध्याय में दिए गए केप्टेन आफ द ट्रप्स-द अमरनायकास से कीजिए और नीचे दी गई सारिणी में भरिए। (AS_3)

मनीषा नागले पिछले 5 महिनो से नल्लावरम की जिलाध्यक्ष रह चुकी है। जिलाध्यक्ष बनने से पूर्व वह जन स्वास्थ्य विभाग मंत्रालय में उप -सचिव के रूप में राज्य की राजधानी में कार्य कर चुकी है। यह सम्भव है कि उनकी बदली किसी और जिले के जिलाध्यक्ष के रूप में हो सकती है या वह वापस सचिवालय जा सकती है। वह भारतीय सरकार की एक कर्मचारी है। कई बार इन लोगों को दिल्ली जाकर केन्द्र-सरकार के लिए कार्य करना पड़ता हैं। इन सभी की नियुक्ति सरकार द्वारा निर्वाहित परीक्षा में चुने जाने के बाद होती है।

विषय-वस्तु	सरकारी सेवक	अमर नायक	मनसबदार
चुनाव की प्रक्रिया			
इनके द्वारा वेतन प्राप्त होता है।			

6. आपके जिला मानचित्र में आपके मण्डल के आस-पास के क्षेत्र में रंग भरिए। (AS_5)

चर्चा :

विद्यार्थी के साथ राजस्व अधिकारी (तहसीलदार/मण्डल राजस्व इन्सपेक्टर/ग्राम राजस्व कार्यालय) वार्तालाप कार्यक्रम आयोजित कीजिए। कानून का निष्पादन।

परियोजना कार्य :

1. अपने अध्यापक या अन्य सरकारी विद्यालय के अधिकारी का साक्षात्कार कीजिए और निम्न संदर्भ में जानकारी प्राप्त कीजिए :

   उनकी नियुक्ति कैसे हुई?

   उन्हें किस विभाग में रिर्पोट करना पड़ता है?

   क्या अध्यापक को स्थानान्तरित किया जाता है?

   उन्हें कैसे प्रोत्साहित या दण्डित किया जाता है? उनके वेतन के जिम्मेदार कौन होते है?

   यदि उन्हें अपनी कार्य परिस्थिति में कोई शिकायत हो तो किसे रिपोर्ट करें?

2. नए कार्यक्रम लागू करने जैसे बच्चे का दाखिला, मध्यान्ह भोजन या अन्य कार्यक्रम पर उनका क्या अनुभव होता है? अपनी प्राप्त जानकारी को कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 18

जातिगत भेदभाव और समानता के लिए संघर्ष

(Caste Discrimination and the stuggle for equalities)

हमारे देश में असमानता के मुख्य कारणों में से एक जाति प्रथा भी है। सदियों से मानव इस कुरीति के प्रति लडता आया है और हमारा संविधान भी इसे खत्म करने के प्रयास (संघर्ष) करता रहा है। जातिगत भेदभाव को समाप्त करना ही हमारी सरकार का मुख्य उद्देश्य रहा है। आइए पढ़ते हैं कि जाति प्रथा कैसे काम करती है और जातीय असमानता को समाप्त करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं।

हमारे देश में बड़ी संख्या में लोग अपने बारे में सोचते हैं, कि वे किस जाति के अंतर्गत आते हैं। वे अपने नाम के साथ-साथ जाति का नाम भी जोड़ लेते हैं। सामान्यतः एक जाति के लोग कुछ समान्य रिवाज, किसी विशेष देवता की पूजा इत्यादि को मानते हैं। अधिकतर लोग जो जाति के नियमों का पालन करते हैं, वे अपनी जाति के भीतर ही विवाह करते हैं। पुराने समय में एक जाति के लोग एक समान पेशा या काम भी किया करते थे, हालांकि ये आज के दौर में तेज़ी से बदल रहा है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जातिप्रथा लोगों के विशेष समूहों में कुछ बंधनों को उत्पन्न करता हैं और उन्हें दूसरे समूह के लोगों से अलग करती हैं।

- क्या आप अपनी कक्षा में इस विषय पर चर्चा कर सकते हैं,कि आपके इलाके में यह किस हद तक रही है और किस हद तक इनमें बदलाव आया है।

हालांकि जाति प्रथा ने हमारे समाज में काफी असमानता और भेदभाव भी उत्पन्न कर रखा है। आइए देखते हैं ये कैसे होता है?

लोग जीवनव्यापन के लिए शिक्षण, बढ़ईगीरी, मिट्टी के बर्तनों का काम, सिलाई, मछली पकड़ना जैसे विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए हैं। हालांकि इस तरह के कामों के दूसरे कामों से ज्यादा महत्व दिया जाता है। सफाई, धुलाई, बाल काटना, गंदगी ढ़ोना, जैसे कामों को कम महत्व वाला माना जाता है और जो इस काम को करते हैं उन्हें हीन भाव से देखा जाता है। यह जाति प्रथा को जन्म देती है। विभिन्न लोगों के समुदाय/समूह के रूप में रखा गया है, जहाँ हर जाति एक दूसरे से ऊपर है या नीचे। जो स्वयं को इस सीढ़ी का ऊपरी हिस्से बताते थे वे स्वयं को उच्च जाति का कहते थे और स्वयं को श्रेष्ठ रूप में देखते थे। वह वर्ग जो इस सीढ़ी के सबसे नीचे होता था, उन्हें अयोग्य ओर अस्पृ श्य माना जाता था। जाति नियम इस तरह से बनाए गए थे कि अस्पृश्य कहे जाने वाले लोगों को उनकी जाति वाला काम छोड़कर दूसरा काम करने की अनुमति नहीं दी जाती थी। उदाहरण के लिए, कुछ समूहों को केवल कचड़ा या गंदगी उठाने और मृत पशुओं को गाँव से बाहर ले जाने की अनुमति होती थी, लेकिन उन्हें उच्च जाति के लोगों के घरों में प्रवेश करने या गाँव के कुँए से पानी भरने या मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं होती थी। उनके बच्चे विद्यालय में अन्य जाति के

SCERT TELANGANA

बच्चों के साथ नहीं बैठ सकते थे। उच्च जाति के लोग 'अस्पृश्यों' को वे अधिकार नहीं देते थे, जिनका वे अपने लिए प्रयोग करते थे।

- आपके विचार से किन मायनों में जाति प्रथा लोगों में असमानता को बढ़ावा देती है?

जब कुछ लोगों को उनकी इच्छा के मुताबिक काम करने नहीं दिया जाता –जैसे शिक्षा हासिल करना या अपनी पसंद की नौकरी करना, इत्यादि, तब ये कहा जा सकता है कि वे जातीय असमानता का सामना कर रहे हैं। भारत के महान नेता डॉ.भीम राव अम्बेडकर ने1901 में मात्र 9 वर्ष की आयु में जाति आधारित असमानता का पहली बार अनुभव किया था। वे अपने भाई के साथ पिताजी से मिलने के लिए कोरेगाँव गए, जो अब महाराष्ट्र में है।

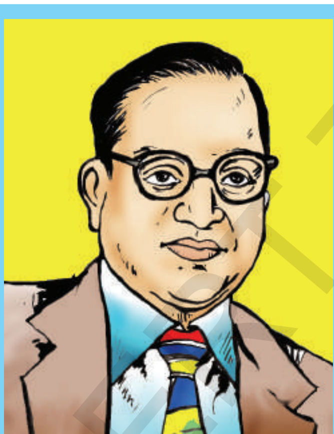

डॉ. भीम राव अंबेडकर
(1891- 1956)

भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने वाली समिति के अध्यक्ष और पहले केंद्रीय मंत्री।

"हमने काफी लम्बा इंतजार किया, लेकिन कोई भी नहीं आया। एक घंटा गुज़र गया और स्टेशन मास्टर पूछताछ के लिए आया। उसने हमसे हमारे टिकट के बारे में पूछा। हमने उसे टिकट दिखाया। उसने हमसे पूछा कि हम रुके हुए क्यों हैं। हमने उसे बताया कि हमें कोरेगाँव जाना है और हम अपने पिता या नौकर के लिए इंतजार कर रहे हैं, लेकिन कोई भी नहीं आया और हमें पता नहीं है कि कोरेगाँव तक कैसे पहुंचा जाय। हम अच्छे कपड़े पहने हुए थे हमारी पोशाक और बातों से कोई भी नहीं कह सकता था कि हम अछूत के बच्चे हैं। दरसअल स्टेशन मास्टर को यकीन था कि हम ब्राह्मण के बच्चे हैं और उसने हमें छुआ भी। सामान्य हिंदुओं की तरह स्टेशन मास्टर ने हम से पूछा कि हम कौन हैं? एक क्षण सोचे बिना ही मैने कह दिया कि हम महार हैं (महार को मुंबई प्रेसीडेंसी में एक अछूत समुदाय माना जाता है)। वह दंग रह गया। उसके चेहरे में अचानक परिवर्तन आया। हम देख सकते थे कि उसके भीतर प्रतिकर्षण का एक अजीब एहसास उत्पन्न हो गया था। जैसे ही उसने मेरा जवाब सुना, वह दूर अपने कमरे में चला गया और हम वहीं खड़े रहे।

पंद्रह से 20 मिनट गुज़र गए। सूर्य लगभग अस्त हो रहा था। न ही हमारे पिता आए और न ही उन्होंने अपने नौकर को भेजा और अब स्टेशन मास्टर भी हमें छोड़कर जा चुका था। हम काफी घबराए हुए थे और यात्रा की शुरूआत में जो खुशी और आनंद हमने अनुभव किया था वह गहरी उदासी में बदल गया।

आधे घंटे के बाद स्टेशनमास्टर फिर लौटा और हमसे पूछा कि हम क्या करना चाहते हैं। हमने कहा कि अगर हमें भाड़े पर बैलगाड़ी मिलती है तो हम कोरेगाँव जा सकते हैं, और अगर वह दूर नहीं है तो हम फौरन जाना चाहेंगे। वहाँ बहुत सी बैलगाड़ियाँ भाड़े पर जाने के लिए तैयार थीं, लेकिन स्टेशन

SCERT TELANGANA

मास्टर को दिया गया मेरा जवाब, कि हम महार हैं, सभी बैलगाड़ी चालकों के पास पहुँच चुका था और उनमें से कोई भी नहीं चाहता था कि उसका सफर गंदा हो और उसे अछूत यात्रियों के साथ जाने का अपमान सहना पड़े। हम दुगना किराया देने के लिए तैयार थे, लेकिन हमने पाया कि पैसे से कुछ नहीं होने वाला। हमारी ओर से बातचीत करने वाला स्टेशन मास्टर चुप खड़ा हो गया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।

स्रोत: डॉ.बी.आर.अम्बेडकर, लेखन और भाषण, वॉल्यूम- 12, संपादित बसंत मून, मुंबई शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार।

- बच्चों द्वारा पैसे देने की पेशकश के बावजूद बैलगाड़ी वालों ने मना कर दिया। क्यों?
- स्टेशन पर डॉ.अम्बेडकर और उसके भाइयों के प्रति लोगों ने भेदभाव का कैसा व्यवहार किया ?
- आपके विचार में एक बच्चे के रूप में डॉ.अम्बेडकर पर क्या बीती होगी, जब उसने अपनी जाति महार बताने पर स्टेशनमास्टर की प्रतिक्रिया देखा होगी ?
- क्या आपने कभी इस प्रकार के प्रतिकूल प्रभाव का अनुभव किया है या भेदभाव की घटना देखी है?
- इससे आप कैसा अनुभव करते हैं?

कल्पना कीजिए कितना कठिन होता होगा, जब लोग आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जा पाते होंगे, लोगों को ले जाने, उनको छूने या जिस स्रोत से वे पानी पीते हैं उसी पानी को पीने से मना करने पर कितना दुखद और अपमानजनक लगता होगा।

यह छोटी सी घटना दर्शाती है कि बैलगाड़ी में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने का आसान काम पैसे देने पर भी बच्चों के लिए उपलब्ध नहीं था। स्टेशन पर सभी बैलगाड़ी चालकों ने बच्चों को ले जाने से इन्कार कर दिया। उन्होंने भेदभाव का बर्ताव किया। तो यह कहानी हमें स्पष्ट बताती है कि सिर्फ जाति पर आधारित भेदभाव दलितों को कुछ आर्थिक गतिविधियों के काम से रोकने तक सीमित नहीं है, बल्कि ये उन्हें अन्यों को दिए जाने वाले सम्मान और गरिमा से भी वंचित रखता है।

स्कूलों में भेदभाव का एक उदाहरण

ओमप्रकाश वाल्मिकी एक प्रसिद्ध दलित लेखक हैं। अपनी आत्मकथा, 'जूठन', में उन्होंने लिखा है, "मुझे कक्षा में दूसरों से अलग बैठना पड़ता था, और वह भी ज़मीन पर। दरी मेरे बैठने के स्थान से पहले ही खत्म हो जाती थी। कभी-कभी मुझे सभी से बहुत दूर दरवाज़े के पास बैठना पड़ता था। कभी-कभी वे बिना किसी कारण के मेरी पिटाई करते थे।" जब वह चौथी कक्षा में था, तब प्रधानाध्यापक ने उन्हें स्कूल और मैदान को झाड़ू से साफ करने के लिए कहा। वे लिखते हैं, खेल मैदान बहुत विशाल था मैं बहुत छोटा था इसीलिए सफाई करने में मेरी पीठ में दर्द शुरू हो गया । मेरा चेहरा धूल से भर गया था। मेरे मुँह में धुल गई। मेरी कक्षा के अन्य विद्यार्थी पढ़ाई कर रहे थे और मैं मैदान सफाई कर रहा था। हेडमास्टर अपने कमरे में बैठकर मुझे देख रहे थे। मुझे पानी पीने तक की अनुमति नहीं थी। मैंने पूरे दिन झाड़ू लगाया....स्कूल के कमरों के दरवाज़ों और खिडकियों से अध्यापकों और लड़कों ने यह नज़ारा देखा।"ओमप्रकाश को अगले कुछ दिनों तक भी स्कूल और मैदान की सफाई करनी पड़ी और यह सिलसिला तब रुका, जब उसके पिता, जो स्कूल के पास से गुजर रहे थे, ने अपने

SCERT TELANGANA

पुत्र को झाडू लगाते हुए देखा। वे अध्यापक के सम्मुख गए और फिर ओमप्रकाश का हाथ पकड़कर सभी को ये सुनाते हुए स्कूल से चले गए, "आप एक अध्यापक हैं...इसीलिए मैं अभी जा रहा हूँ, लेकिन मास्टर इतना याद रखना..(वह) यहीं पढ़ाई करेगा, इसी स्कूल में... और ये ही नहीं इसके बाद और भी यहाँ आएंगे।"

- आप को क्यों लगता है कि ओमप्रकाश वाल्मिकी के साथ उसके अध्यापक और सहपाठी भेदभाव करते थे ?
- कल्पना करें कि आप ओमप्रकाश वाल्मिकी हैं और ऐसी परिस्थिति होने पर कैसा महसूस करेंगे? इसके बारे में चार पंक्तियाँ लिखें।

जब किसी व्यक्ति के साथ भेद-भाव किया जाता है तो उसकी गरिमा पर गहरा आघात लगता है। जिस तरह का व्यवहार ओमप्रकाश वाल्मिकी के साथ किया गया उससे उनकी गरिमा को नुकसान पहुँचा। उनकी जाति की वजह से उन्हें उठाया और स्कूल में झाडू लगाने पर मजबूर किया गया ओमप्रकाश वाल्मिकी के सहपाठी और अध्यापक ने उसकी गरिमा को बुरी तरह से आघात पहुँचाया और उन्हें यह अनुभव करने पर बाध्य किया कि वह स्कूल के अन्य विद्यार्थियों से कम है। एक बच्चा होने के कारण वह इस परिस्थिति से बच सकता था। वह तो उसके पिता ने अपने बेटे को झाडू लगाते देख लिया था और उन्हें भेदभाव के वजह से उन्हें गुस्सा आया और उन्होंने अध्यापकों का सामना किया।

क्या जाति-प्रथा हमेशा से ही थी?

नहीं । एक समय था, जब कोई जाति-प्रथा नहीं थी। हमने शिकारी और कबीले के लोगों का जीवन देखा है। उनके पास कोई जाति-प्रथा नहीं थी। वर्ण-प्रथा वैदिक समय में शुरू हुई, जहाँ चार मुख्य वर्ण समूह -ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र का वर्णन किया जाता है। बाद में अस्पृश्यता और विवाह, साथ में भोजन करने पर प्रतिबन्ध आदि, सामने आए। कहा जाता था कि निचली जाति वालों को ऊँची जाति के लोगों की सेवा करनी और आज्ञा माननी चाहिए। यह विचार रजवाड़ों के समय, जो आप अध्याय13 और 14 में पढ़ चुके हैं, तेलंगाना सहित सारे देश में फैल गया। जैसे-जैसे यह विचार फैलने लगा, कई लोगों ने इसकी आलोचना की। बुद्ध, महावीर, रामानुज, बासवा, कबीर, वेमना आदि जैसे चिंतको ने कुछ लोगों के जन्म से उच्च होने की बात की आलोचना की और उन्होंने अनुभव किया कि सभी लोग उनके निम्न जन्म या व्यवसाय के होते हुए भी अच्छे कर्म कर सकते हैं और मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। आप इस विषय में विस्तार से अगले अध्यायों में पढ़ेंगे।

समानता के लिए संघर्ष

आपने अंग्रेज़ी राज की स्थापना और उसके विरुद्ध संघर्ष के बारे में पढ़ा होगा। अंग्रेज़ी साम्राज्य के खिलाफ आज़ादी की लड़ाई में ऐसे समूहों का संघर्ष भी शामिल है, जिन्होंने न सिर्फ ब्रिटिश शासन के खिलाफ, बल्कि समानता की लड़ाई भी लड़ी। दलितों, महिलाओं, आदिवासियों और किसानों ने अपने जीवन में अनुभव किए गये भेद-भाव के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में कई समाज सुधारकों ने आज़ादी, समानता, भाईचारा, मानवीय गरिमा और आर्थिक न्याय के आधार पर नयी सामाजिक प्रणाली लाने के लिए संघर्ष किया। इनमें, ज्योतिराव गोविंदराव फूले, सावित्री बाई फूले,पेरियार, ई.वी.रामसामी नाईकर, श्री नारायण गुरू और अयंकाली शामिल हैं। इनके बारे में हम आठवीं कक्षा में पढ़ेंगे।

उपनिवेशी काल में तेलंगाना में भी सामाजिक भावना का संचार हुआ। इसमें जुड़ने वाले कुछ महान व्यक्ति थे - पी.वेंकटस्वामी, ईश्वरी बाई, टी.एन.सदालक्ष्मी, सी.एस. एथीराजन, अरीगे रामस्वामी, एम.वेंकट स्वामी, बी.एस. वेकंटराव आदि। इनमें से किसी एक द्वारा किए गए संघर्ष को देखेंगे।

SCERT TELANGANA

बी.एस.वेंकटराव (१८९६–१९५३)

बाथुल्ला वेंकटराव का जन्म हैदराबाद की घॉसमण्डी में हुआ। वह राव साहेब के नाम से प्रसिद्ध थे। उनके पिताजी बाथुल्ला सत्यना यूरोपीयों के घरेलु नौकर थे। वेंकटराव ने नवीं कक्षा तक पढ़ाई की। वे तेलुगु के साथ–साथ, अंग्रेजी, उर्दू, ईरानी और मराठी भाषा भी जानते थे। निजाम सरकार के जन कार्य विभाग में कार्य करने के पहले उन्होंने पूना में शिल्पी का काम किया। स्वतंत्रता के पहले उन्होंने निजाम सरकार में उच्च पद प्राप्त कर लिया था।

उन्होंने अस्पृश्यता का प्रभाव जब दलित वर्ग पर देखा तो इसे मिटाने का दृढ़ निश्चय किया। एम.गोविन्दराजु और वेंकटराजु जैसे व्यक्तियों के साथ मिलकर १९२२ में इसी लक्ष्य में आदि द्राविड़ संगम की स्थापना की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य था देवदासी प्रथा को समाप्त करना और दलितों में एकता लाना था। बाद में अप्रैल १९२७ में आदि हिन्दु महासभा का गठन किया।

दस वर्षों पश्चात पूना में प्रभावकारी चर्चा के पश्चात उन्होंने अम्बेदकरी युवा संघ की स्थापना की गई। इसका मुख्य उद्देश्य था जाति के आधार पर किए गए शोषण के प्रति उन्हें शिक्षित एवं जागृत करना। बाद में इसका दूसरा नाम हैदराबाद स्टेट डिप्रेसड क्लासेस एसोसिएशन रखा गया।

इस संस्था के लोगों ने एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर सभाओं का आयोजन किया ताकि लोगों को जाति भेद के प्रति जागृत कर सके, सारे देश में इनके लिए मुक्ति आन्दोलन चला और अपने आप को बचाने की आवश्यकता भी आन्दोलन का अंश था। इनमें में से कुछ ने धार्मिक सुधार को भी आगे बढ़ाया ताकि दलित जातिवादी अंधविश्वासों से मुक्त हो सके।

उन्होंने घासमण्डी में घर एवं पुस्तकालय बनाए जिसका नाम औदी नगर रखा गया। हैदराबाद के बाहर उन्होंने दलितों के लिए 18 मन्दिर भी बनवाए। दलितों के सुधार के लिए बी.एस.वेकंटराव के योगदान की जानकारी डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर को हुई। उन्होंने उन्हें 1936 में मुम्बई प्रेसीड़ेन्सी महार कान्फ्रेंस का नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित किया। इस सभा में 10,000 लोग आए और डॉ.बी.आर.अम्बेड़कर द्वारा चलाए गए आन्दोलन का समर्थन दिया।

1 अप्रैल 1947 को हैदराबाद में पलयम पिल्लै द्वारा पारित प्रस्ताव जिसमें राज्य के दलित वर्ग को उठाने के लिए बीस लाख रूपये की माँग प्रेसिडेन्ट–इन–कौंसिल में रखीं थी। श्री वेंकटराव ने इस प्रस्ताव में संशोधन कर एक करोड़ रू. की माँग की। सभा ने प्रधान मंत्रीसे सिफारिश कर १ करोड़ दिलाने की स्वीकृति दी। इसी प्रकार निजाम ने दलित वर्ग कल्याणकारी फंड का निर्माण किया और उसके वर्ग के लिए एक करोड़ रू की राशिप्रदान की। निजाम ने उन्हें खुसरू–ए–दक्कन उपाधि से सम्मानित किया।

1952 में वे राज्य विधानसभा के सदस्य चयनित हुए।

स्वतन्त्रता के पश्चात समानता

1947 में जब भारत स्वतंत्र देश बना हमारे नेता भी विभिन्न प्रकार की असमानता को लेकर चिंतित थे। जिन लोगों ने भारत का संविधान लिखा था, (संविधान एक दस्तावेज़ जो ऐसे नियमों को दर्शाता है जिसके द्वारा राष्ट्र कार्य करेगा।) जानते थे कि हमारे समाज में किस तरह से भेदभाव किया जाता था और किस प्रकार से लोग इससे जूझते रहे हैं। इनमें से कई नेताओं ने संघर्ष किया, जैसे डॉ.अंबेडकर तथा दलितों के अधिकारों के लिए भी लडाई लड़ी।

SCERT TELANGANA

तो इन नेताओं ने संविधान में एक दृष्टिकोण और लक्ष्य निर्धारित किया ताकि सभी लोगों को समान नज़रिए से देखा जाए। सभी लोगों में यह समानता हमें एकजुट रखने के लिए महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखी जाने लगी। सभी को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हैं। अस्पृश्यता को एक अपराध के रूप में देखा जाने लगा और कानूनी तौर पर इसे समाप्त कर दिया गया। लोगों को उनकी इच्छानुसार काम चुनने की स्वतंत्रता मिली। सरकारी नौकरियाँ सभी लोगों के लिए खुल गईं । इसके अलावा संविधान में सरकार पर गरीबों और इस प्रकार के सीमांत समुदायों के लिए समानता के अधिकारों की जिम्मेदारी रखी।

संविधान में सुनिश्चित समानता की सरकार द्वारा दो तरीकों से कर लागू करने का प्रयास किया गया पहला कानून के माध्यम से और दूसरा सरकारी कार्यक्रम और योजनाओं के माध्यम से वंचित समुदायों की सहायता करना। भारत में कई कानून हैं, जो समानता पाने वाले हर व्यक्ति के समानता के अधिकारों की रक्षा करते हैं। कानून के अतिरिक्त सदियों से असमानता का शिकार होते आए व्यक्तियों और समुदायों के जीवन में सुधार लाने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ बनाई हैं। इन योजनाओं के द्वारा लोगों को ऐसे अवसर मिलने लगे, जिनसे पहले वे वंचित रह जाते थे।

सरकार द्वारा उठाए गए ऐसे कदमों में से एक है मध्याह्न भोजन (मिड डे मील) योजना है। बच्चों को दोपहर में बना हुआ भोजन उपलब्ध करने के लिए यह कार्यक्रम प्रत्येक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में आरम्भ किया गया। तमिलनाडु इस योजनाको लागू करने वाला पहला राज्य था और 2001 में सर्वोच्च न्यायलय ने सभी राज्य सरकारों को इस योजना को उनके राज्यों में छह महीने के भीतर लागू करने का आदेश दिया। इस क्रार्यक्रम के कई सकारात्मक प्रभाव पड़े। इसका प्रभाव यह पड़ा कि गरीब घरों के कई बच्चे विद्यालय आने लगे। अध्यापक का कहना था कि बच्चे अधिकतर दोपहर के भोजन के लिए घर चले जाते थे और वापस नहीं लौटते थे, लेकिन अब मिड डे मील स्कूल में मिलने के कारण उनकी उपस्थिति में विकास आया है । उनकी माताएँ, जिन्हें दोपहर को अपना सारा काम छोड़कर बच्चों को खाना खिलाने आना पड़ता था, अब उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी। इस कार्यक्रम ने जातिगत भेद-भाव को भी काफी कम किया, क्योंकि निचले और उच्च दोनों वर्गों के बच्चे इस भोजन को विद्यालय में एक साथ बैठकर खाते थे। तेलंगाना में सभी ग्रामीण स्कूलों में मिड-डे मील स्वयं सेवक समूह की महिलाओं द्वारा बनाया जाता है, जो निरपवाद रूप से वंचित वर्गों से होती हैं कई स्थानों पर तो दलित महिलाओं को भोजन बनाने के लिए रखा जाता है। मिड-डे मील उन विद्यार्थियों के लिए मददगार होता है जो भोजन के अभाव में स्कूल तो आते हैं पर भूखे रहने के कारण पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते।

- क्या आप मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के तीन लाभ बता सकते हैं ?
- आप के विचार में यह कार्यक्रम किस तरह से समानता को बढ़ावा देगा ?

जबकि सरकारी कार्यक्रम अवसर की समानता को बढ़ाने में एक मुख्य भूमिका निभा कर रहे हैं, अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। मिड-डे मील कार्यक्रम ने स्कूलों में गरीब बच्चों का नामांकन और उपस्थिति बढ़ाई है, फिर भी देश में ऐसे स्कूल, जिसमें अमीर जाते हैं और ऐसे स्कूल, जिसमें गरीब बच्चे जाते हैं, में काफी अंतर है। आज भी देश में ऐसे कई स्कूल हैं, जहाँ ओमप्रकाश वाल्मिकी जैसे दलित बच्चों के साथ असमानता और हीनता का व्यवहार देखा जाता है। इन बच्चों को असमानता की परिस्थिति में ले जाया जाता है, जिसमें उनकी गरिमा को सम्मान नहीं मिलता। यह इसीलिए होता है कि क्योंकि लोग उनके समान उन्हें मानने से मना करते हैं, जबकि कानून के अनुसार इसकी आवश्यकता है।

इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि व्यवहार में परिवर्तन बहुत धीरे-धीरे हो रहा है। भले ही प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि भेदभाव करना कानून के विरुद्ध है, फिर भी वे जाति,धर्म,अक्षमता, आर्थिक पक्ष और लिंग भेद के आधार पर लोगों को असमान रूप से देखते हैं। ये व्यवहार तभी बदल सकता है, जब प्रत्येक सोचने लगे कि कोई भी हीन नहीं है और प्रत्येक व्यक्ति के साथ गरिमापूर्ण व्यवहार किया जाय। लोकतांत्रिक समाज में समानता को स्थापित करना एक निरंतर रहने वाला संघर्ष है और इसमें प्रत्येक व्यक्ति तथा विभिन्न समुदायों को अपना योगदान देना होगा।

मुख्य शब्द :

1. अस्पृश्यता
2. योजना
3. संविधान
4. आत्मकथा

हमने क्या सीखा ?

1. गलती के लिए दी जाने वाली सज़ा और भेदभाव किये जाने में क्या अंतर है ? बाल अम्बेडकर को दंडित किया जा रहा था या भेदभाव किया जा रहा था ? (AS_1)
2. समाज में अनेक वर्ण होते हुए भी उनके बीच समानता की भावना आप कब देख सकते है? (AS_4)
3. हमारे संविधान में अस्पृश्यता को समाप्त कर दिया गया है और इसे अपराध घोषित कर दिया है। क्या आप विचार में यह पूरी तरह से समाप्त हो गया है ? (AS_4)
4. आपका विद्यालय किस प्रकार से जाति पर आधारित असमानता को समाप्त करने में सहयोगी हो सकता है ? (AS_6)
5. संविधान में सरकार द्वारा ....(पृष्ठ 170 के) संबंधित अनुच्छेद को पढ़िए और उस पर टिप्पणी लिखिए। (AS_2)

परियोजना कार्य :

1. अपने क्षेत्र में सरकारी योजना के बारे में पता लगाइए। ये योजना क्या करती है ? यह योजना किसे लाभ पहुँचाने के लिए बनाई गई हैं ?
2. अपने माता-पिता और दादा-दादी के साथ चर्चा कीजिए कि किस तरह उनके समय में जाति-प्रथा कार्य करती थी तथा पता कीजिए कि क्या बदलाव आए और क्या नहीं। एक रिपोर्ट बनाएँ और अपनी कक्षा में प्रस्तुत करें।

SCERT TELANGANA

अध्याय 19

शहरी मज़दूरों का जीवन और संघर्ष

(Livelihood and struggles of urban workers)

9 वें अध्याय में हमने कागज मिल श्रमिकों के बारे में बढ़ा है। अधिकतर कागज मिल श्रमिक आनंद की तरह थे– उन्हें ऊँचा वेतन, बोनस(कंपनी के लाभ में हिस्सा) भविष्य निधि(भविष्य के लिए बचत) और अन्य भत्ते मिला करते हैं। उन्हें स्वस्थ और आवास सुविधा भी मिलती है। इस तरह के श्रमिकों की संख्या देश के श्रमिकों की संख्या में बहुत कम होती हैं। हमने एक ही मिल में दूसरे श्रमिकों के बारे में भी पढ़ा है –उमर और पुष्पा जिन्हें कम वेतन मिलता है और अच्छे जीवन यापन के लिए कोई अन्य भत्ता या सुविधा नहीं मिलती थी। देश में अधिकतर श्रमिक उमर और पुष्पा की तरह ही होते हैं। इस अध्याय में हम पढ़ेंगे कि श्रमिक बेहतर जीवन के लिए अपने संस्थान और कानून के माध्यम से अपने मालिक से क्यों और कैसे समझौता करता है। हम एक संस्थान के बारे में भी जानेंगे, जो अपने दम पर काम करने वाले श्रमिकों के लिए काम करता है।

हमने पढ़ा है कि सरकार जनहित के लिए कानून बनाती है। इसी तरह खेतों, खानों,निजी और सरकारी कार्यालायों में काम करने वाले श्रमिकों के कल्याण की रक्षा के लिए कानून बनाए गए हैं। जो कारखाने सरकार के पास अच्छी तरह से पंजीकृत हैं उनसे कानून का पालन और श्रमिकों को अच्छे वेतन तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने की आशा की जाती है। सरकार के पास श्रम विभाग भी है,जिसकी जिम्मेदारी है कि कानून ठीक प्रकार से लागू किए गए हैं या नहीं। यदि कानून का पालन नहीं किया जा रहा है, तो श्रमिक न्यायालय में मुकदमा कर सकते हैं। कई बार कारखानों में श्रमिकों के एक वर्ग जिन्हें 'स्थाई श्रमिक' कहा जाता है, उनका ध्यान रखा जाता है और जो 'आकस्मिक' या 'अनुबंधित श्रमिक'कहलाते हैं, उनके कल्याण का ध्यान नहीं रखा जाता है।

हालांकि कई ऐसे कारखाने हैं जो सरकार के पास ठीक तरह से पंजीकृत नहीं हैं। आइए देखते है ऐसे कारखानों में श्रमिकों की स्थिति कैसी है?

कारखानों में 'स्थाई श्रमिक' के रूप में काम करना

नीचे दिए गए कोथूर के दो कारखानों के बारे में पढ़िए, जो हैदराबाद से 30 किलोमीटर दूर स्थित महबूबनगर जिले का एक नया औद्योगिक नगर है। यह 2002 में नामांकित किया गया है।

फाइब्रोटेक्स (इसका असली नाम नहीं है), बड़े पैमाने पर फाइबर ग्लास बनाने वाले एक कारखाने को *1976* में स्थापित किया गया। *2002* में *570* श्रमिकों में से, *140* स्थाई श्रमिक थे, *60* श्रमिक सामयिक *(casual)* आधार पर कार्यरत थे और उन्हें बदली श्रमिक कहा जाता था अर्थात् स्थाई श्रमिकों की अनुपस्थिति में वे उनके स्थान पर काम करते थे और लगभग *300* श्रमिक दैनिक अनुबंध के आधार पर काम करते थे।

SCERT TELANGANA

(स्थाई श्रमिक को उचित प्रक्रिया और मुआवज़े के भुगतान के बिना निकाला नहीं जा सकता, जबकि अन्य श्रमिकों को आसानी से निकाला जा सकता है)

इस कारखाने में ट्रेड यूनियन यानि श्रमिक संघ है। इसे कंपनी के प्रोत्साहन पर स्थापित किया गया, जो एक ऐसा संघ चाहती थी जो उसकी नीतियों से सहमत हो। श्रमिक संघ में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे जिससे संघ जल्द ही एक शक्तिशाली श्रमिक संगठन में विकसित हो गया। यह प्रबंधक के साथ वेतन निर्धारित करने के लिये बातचीत करता था।

यूनियन के साथ समझौते के माध्यम से सभी श्रमिकों को निर्धारित वेतन और राज्य कर्मचारी बीमें (ESI) के द्वारा चिकित्सा सुविधा तथा भविष्य निधि मिलने लगी। श्रमिक संघ ने अन्य लाभ भी प्राप्त किए जैसे –बड़े अस्पताल में स्वास्थ्य जाँच, बीमार पड़ने पर श्रमिक को छुट्टी, काम करने के स्थान पर सुरक्षा, कवच, कारखाने में सुरक्षित पेय जल, श्रमिकों के बच्चों के लिए पढ़ाई भत्ता, वाहन भत्ता और छुट्टियों के लिए यात्रा भत्ता भी। उन्हें आवश्यकता होने पर कंपनी से ऋण भी मिलता है। कंपनी ने उन्हें रहने के लिए मकान भी उपलब्ध कराए। कंपनी ने लंबे समय से कारखाने में काम करने वाले श्रमिकों को प्रशिक्षण देने, उत्पादन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए उन्हें विदेश भेजने में भी रुचि दिखाई। श्रमिक संघ ने अनुबंधित श्रमिकों को कुछ समय के बाद स्थाई करने के लिए कारखाने के मालिकों के साथ एक अनुबंध भी किया।

फाइब्रोटेक्स का श्रमिक संघ नगर में भी अच्छी तरह से सक्रिय है। इसे कई अन्य कारखानों के श्रमिक संघों को अपने मालिकों से समझौते की शक्ति पाने में सहायता मिली है।

श्रमिक संघ

श्रमिक संघ एक ऐसा संगठन है, जिसे श्रमिकों ने अपने हितों की रक्षा के लिए बनाया है। यदि प्रत्येक अकेला श्रमिक अपने मालिक से अलग-अलग मिलकर समझौता करता है तो वह इतनी मजबूत स्थिति में नहीं रहेगा, यदि सभी मिलकर समझौता करें तो उनकी स्थिति मज़बूत होगी। श्रमिक संघ श्रमिकों की ओर से सरकार और मालिकों से बातचीत करता है। वे अपने सदस्यों के लिए उचित मज़दूरी, अन्य लाभ और काम करने की अच्छी परिस्थितियाँ सुनिश्चित चाहते हैं। सामाजिक सुरक्षा लाभ, स्वास्थ्य सुविधा, मकान, भविष्य निधि और पेंशन पाने के लिए वे अपने सदस्य श्रमिकों के साथ भी काम करते हैं। यदि किसी श्रमिक को परेशान किया जाता है या उसे सहायता की आवश्यकता होती है, तो श्रमिक संघ उसका मामला अपने हाथ में ले लेता है। संघ विभिन्न प्रकार के उपाय अपनाता है, जैसे बातचीत, न्यायालय में मामला दर्ज करना और मालिकों पर दबाव बनाने के लिए यहाँ तक कि हड़ताल या काम बंद करना।

वर्षा (2002) में फाइब्रोटेक्स के श्रमिकों **के वेतन ब्यौरा इस प्रकार है -**

स्थाई श्रमिक	रु*4500 – 10,000* प्रति माह
बदली श्रमिक	रु*3000-4000*प्रति माह
अनुबंधित / सामयिक श्रमिक	रु*58* प्रति दिन *8* घंटे के लिए

SCERT TELANGANA

जैसे कि आपने देखा अधिकतर लाभ केवल *140* 'स्थाई श्रमिकों' को ही उपलब्ध है। जबकि बदली और अनुबंधित श्रमिक कहलाने वाले लगभग *360* अन्य श्रमिकों को कम वेतन मिलते हैं।

- स्थाई श्रमिक और बदली श्रमिक में क्या अंतर है ?
- स्थाई श्रमिक और आकास्मिक श्रमिक के मासिक वेतन में अंतर का पता लगाइए?
- अपनी कक्षा में एक-दो ऐसे श्रमिकों को बुलाइए जिन्हें ईएसआई और पीएफ सुविधा मिल रही हों और उनसे जानकारी प्राप्त कीजिए कि ये सुविधाएँ उनके लिए उपलब्ध कैसे करवाई गईं और इन्हें प्राप्त करने के लिए उन्हें क्या कदम उठाने पड़े। इस विषय पर बात करने के लिए आप अपनी कक्षा में अपने किसी सहपाठी के अभिभावक को भी बुला सकते हैं।

के.आर.एस. औषधि कारखाना

यह कंपनी (वास्तविक नाम नहीं) बड़ी कंपनियों के लिए दवाइयों को घोलती(मिक्स) और पैक करती है। इसमें *118* श्रमिक काम करते हैं, जिसमें से *104* श्रमिक दैनिक आकस्मिक श्रमिक के रूप में काम करते हैं। केवल *14* श्रमिक स्थाई हैं और इन्हें दवाई का पाउडर बनाने के लिए रसायन मिलाने के कुशल कार्य के लिए रखा गया है। इन्हें रु *1500* से रु *2500* प्रतिमाह वेतन मिलता है और इनकी नौकरी सुरक्षित है। इन्हें ईएसआई और पीएफ भी मिलता है। शेष *104* श्रमिकों, जो दैनिक आधार पर मुख्यत: पेकिंग लेबल चिपकाने का काम करते हैं इनमें *56* महिलाएँ हैं। इन दैनिक श्रमिकों को एक श्रम ठेकेदार द्वारा लगाया जाता है, जिसे मैनेजर निर्देश देता है कि कितने श्रमिकों की आवश्यकता है । ये श्रमिक अधिकतर पास के गाँव से आते हैं और आमतौर पर अनपढ़ होते हैं। इन महिला श्रमिकों को दिन में लगभग *12* घंटे काम करना पड़ता है और उन्हें केवल *30* रुपये दिये जाते हैं जबकि इतने ही घंटों के लिए पुरुष श्रमिक को *42* रुपये दिये जाते हैं। यह वेतन सरकार द्वारा इस तरह के कारखानों के लिए तय किए गए न्यूनतम वेतन से बहुत कम हैं। मैनेजर श्रमिकों को किसी तरह के श्रमिक संघ बनाने नहीं देता और उन्हें धमकाता है कि यदि यूनियन बनाई तो वे कारखाना बंद कर देंगे।

आजकल बड़ी संख्या में कंपनियाँ इसी तरह की नीतियों को अपना रही हैं। स्थाई श्रमिकों को कम करके उनके स्थान पर अनुबंधित तथा आकस्मिक(कैजुअल) श्रमिक को ले रही हैं।

के.आर.एस.

- केआरएस दवाई कारखाने में कोई श्रमिक संघ बनाने की अनुमति क्यों नहीं थी ?
- आपके विचार में स्थाई श्रमिकों के वर्ग के बजाय अनुबंधित श्रमिकों में अधिक महिलाएँ होती थी ?
- क्या आपको लगता है कि एक ही काम के लिए पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को कम वेतन देना उचित है ?
- क्या आपको लगता है यदि श्रमिक शिक्षित और साक्षर होते तो आज की परिस्थिति भिन्न होती।

SCERT TELANGANA

निर्माण स्थल पर काम और ईंट की भट्टियाँ

बिंधानी, उसका पति और दस साल की बेटी रंगारेड्डी जिले में एक ईंट की भट्टी पर काम करते हैं। वह ओडिशा(उड़ीसा) के एक गाँव से आती है, जहाँ उनका छोटा सा भूखंड (जमीन का टुकडा) है। उन्होंने बीस हज़ार रुपये उधार लिए थे, जिसे वे चुका नहीं सके और अपनी ज़मीन बेचने की कगार पर थे, तब एक ठेकेदार, जो तेलंगाना के ईंट भट्टी के लिए श्रमिकों की भर्ती कर रहा था, उनके पास आया। उसने उन्हें 10,000 हजार रुपये की पेशकश की, ताकि वे अपने उधार का आधा हिस्सा चुका सकें। उन्हें छ महीने ईंट की भट्टी में काम करना होगा और इसके लिए उन्हें अतिरिक्त मजदूरी भी मिलेगी और रहने के लिए एक झोपड़ी भी मिलेगी। काम दिसंबर में शुरू होगा और जून में समाप्त होगा, तब वे पुनः अपने घर लौट सकेंगे। इस तरह बिंधानी और उसका परिवार भट्टी में काम करने के लिए आए। वे इसमें अकेले नहीं हैं, ओडिशा से ऐसे करीब दो लाख श्रमिक तेलंगाना में इस तरह की ईंट भट्टी में काम करने के लिए आए हैं। यह आमतौर पर देखने को मिलता है कि तेलंगाना से हज़ारों श्रमिक परिवार दूसरे राज्य जैसे कर्नाटक और महाराष्ट्र की ईंट भट्टी में काम करने के लिए जाते हैं।

चित्र 19.1 ईंट बनाते हुए मज़दूर

बिंधानी सुबह चार बजे उठ जाती और कुछ कंजी बनाती है। उसका पति रात 2 बजे तक काम करने के कारण अभी तक सो रहा है। वह अपनी बेटी को उठाती है और दोनों काम पर जाने के लिए तैयार होते हैं। उन्हें पानी लाना पड़ता है और ईंट बनाने के लिए मिट्टी तैयार करनी होती है। वे अपना काम लगभग सुबह 5 बजे शुरु करते हैं और लगातार 9 बजे तक करते हैं, तब वे चाय पीने के लिए विश्राम लेते हैं। तब तक उसका पति भी उनके साथ काम पर लग जाता है। वह मिट्टी को सांचे में डालता है,एक बार मिट्टी आकार में आ जाती है तो बेटी उसे समतल करती है और ईंटों पर ईंट कंपनी का चिह्न अंकित करती है। इन्हें फिर सूखने दिया जाता है और फिर बैलगाड़ी में रखकर सेंकने के लिए भट्टी पर ले जाया जाता है। यह काम लगातार रात के 2 बजे तक चलता रहता है। बिंधानी और उसका पति दिन में लगभग 14 से 16 घंटे काम करते हैं। वे काम नहीं रोकना चाहते क्योंकि उन्हें ईंटों की संख्या के अनुसार

भुगतान किया जाता है। उन्हें *108* रुपये प्रति हजार ईंट भुगतान किया जाता है। साधारणतः वे एक दिन में हजार ईंट बना लेते हैं। यदि वे अस्वस्थ हो जाते हैं तो उनकी कमाई कुछ भी नहीं हो पाती। इस तरह से वे लगातार *6* महीने से दिन रात काम कर रहे हैं। कभी-कभी थकान या बीमारी के कारण वे काम नहीं कर पाते है। वे आमतौर पर टूटे चावल और दाल खाते हैं और कभी कुछ सब्जी। छह महीने के अंत मे वे पेशगी राशि का भुगतान ही कर पाते हैं और खाली हाथ लौटना पड़ता है। कभी-कभी वे चार-पाँच हज़ार रुपये लेकर घर वापस लौटने में सफल होते हैं।

- क्या आप गणना कर सकते हैं कि उन्हें सरदार(ठेकेदार) के 10,000 रुपये पेशगी चुकाने में कितने दिन लग सकते हैं ?
- इस काम में एक व्यक्ति का प्रति दिन औसत वेतन क्या है?
- ईंट भट्टी में कोई श्रमिक संघ क्यों नहीं है ?
- क्या आपको लगता है कि सरकार को ईंट भट्टी श्रमिकों के लिए श्रमिक संघ के गठन में सहायता करनी चाहिए ?
- सरकार किस तरह से ईंट भट्टी में काम करने वाले मजदूरों की कार्यस्थिति में सुधार ला सकती है?

चित्र 19.2 कपास चुनने वाले श्रमिक

देश के लाखों ईंट भट्टी मज़दूरों और अन्य व्यवसायों में काम करने वाले मज़दूरों की ऐसी ही कहानी है। उन्हें ठेकेदारों द्वारा पेशगी दी जाती है और वे दूर ऐसे राज्य में ले जाए जाते हैं, जहाँ की भाषा तक उन्हें नहीं आती, वे अपने परिवार और बच्चों सहित पाँच-छः महीनों तक दिन रात काम करते हैं और केवल ठेकेदार से ली गई पेशगी को ही चुकाने में सफल हो पाते हैं। कभी-कभी लोग काम से बुरी तरह थक जाते हैं, तो भी उन्हें ठेकेदारों द्वारा काम करने के लिए विवश किया जाता है। वे बंधुआ मज़दूरों की तरह रहते हैं। जब कभी ये श्रमिक सरकार को उनकी दुर्दशा के बारे में बताते हैं, सरकारी अधिकारी हस्तक्षेप करते हैं और उन्हें ईंट भट्टी तथा ठेकेदारों से मुक्त कराकर घर भेज देते हैं। चूंकि घर पर उनके पास रोजगार का कोई साधन नहीं होता है, वे फिर से ठेकेदार से पेशगी लेने और ईंट भट्टी पर लौटने पर विवश हो जाते हैं। इनके हितों के लिए लड़ने के लिए कोई भी श्रमिक संघ नहीं है, क्योंकि ये प्रवासी श्रमिक हैं और कई कार्य स्थलों पर फैले हुए हैं।

SCERT TELANGANA

- ईंट बनाने के लिए किस तरह की मशीन और उपकरण तथा विद्युत के स्रोत का उपयोग किया जाता है?
- इस प्रकार के काम के लिए किस तरह के कौशल की आवश्यकता है? ये किस प्रकार प्राप्त किये जाते हैं?
- आपके विचार में उनसे दूर राज्यों में काम क्यों कराया जाता है ?

मजदूरों के अधिकारों को सुनिश्चित करना– एक वैश्विक चिंतन

जब से औद्योगिक क्रांति हुई है, जिसके बारे में हमने10 वें अध्याय में पढ़ा है, दुनिया भर में श्रमिक एक सम्मानजनक जीवन और अपने उत्पाद की भागीदारी के लिए संघर्ष करते रहे हैं। उन्होंने कई प्रकार की सुरक्षा और अधिकारों की लड़ाई लड़ी है।

1. **लाभकारी और सुरक्षित रोज़गार के अधिकार:**ताकि प्रत्येक श्रमिक अपने कौशल और क्षमता के अनुसार काम कर सके तथा अपने स्वास्थ्य को जोखिम में डाले बिना सुरक्षित परिस्थिति में काम कर सकें।
2. **अवकाश और आराम करने का अधिकार:** ताकि उन्हें थकान भरे काम से आराम करने का समय मिले और सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेने के लिए भी समय मिल सके।
3. **रोज़गार सुरक्षा के अधिकार:** ताकि हर श्रमिक जान सके कि उसके पास ऐसा रोजगार है, जो उसकी अजीविका सुनिश्चित करेगा और मनमाने ढंग से नौकरी से नहीं निकाला जाएगा। यदि किसी कंपनी के लिए निकाला जाना अनिवार्य है, तो उस हानि के लिए पर्याप्त भत्ता दिया जाना चाहिए।
4. **सुरक्षित आय:** ताकि प्रत्येक श्रमिक के पास अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने, वृद्धावस्था में सम्मानजनक जीवन बिताने के लिए बचत करने के लिए पर्याप्त और नियमित आय हो।
5. **काम की सुरक्षा:** ताकि जब वे बीमार पड़े या दुर्घटना का शिकार हो, तो उनकी अच्छी तरह से देखभाल हो और उन्हें उचित भुगतान किया जाए।
6. **कौशल सुधार:** ताकि काम के समय वे अपनी कौशल एवं योग्यता को बढ़ा सके।
7. **सामूहिक आवाज़ का अधिकार :** ताकि वे बिना डरे अपनी समस्याओं और जरूरतों को व्यक्त करने और मालिकों से व्यक्तिगत बातचीत की बजाय समूह में बातचीत करने के लिए यूनियन

चित्र 19.3 चाकू तेज़ करने वाले

विश्व भर में पिछले दो सौ वर्षों से श्रमिकों ने इन अधिकारों की मान्यता प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया है, हालांकि ये प्रत्येक स्थान पर लागू नहीं किये जा सकते हैं। अधिकतर देशों में सरकार ने माना कि ये श्रमिकों की मूलभूत अवश्यकाएँ हैं और श्रमिकों के इन अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए कानून बनाया जाए।

पिछले अनुभाग को फिर से पढ़े और श्रमिकों को मिलने वाले अधिकारों तथा उपलब्ध लाभ को दिखाने के लिए बॉक्स (अगले पृष्ठ में) को रंग से भरें। यदि केवल श्रमिकों का एक भाग ही कवर किया जाता है, कवरेज के भाग के आधार पर बॉक्स के एक हिस्से को रंग (शेड) करें। अगर कोई अधिकार/लाभ उपलब्ध नहीं है तो बॉक्स में क्रॉस का निशान लगाएँ।

क्र.सं.	अधिकार	फाइब्रोटिक्स	के.आर.एस. दवाई कारखाना	ईंट भट्टा
1.	लाभकारी और सुरक्षित रोज़गार के अधिकार			
2.	अवकाश और आराम करने का अधिकार			
3.	रोजगार सुरक्षा के अधिकार			
4.	सुरक्षितआय			
5.	काम की सुरक्षा			
6.	कौशल सुधार			
7.	सामूहिक आवाज़ के अधिकार			

शहर में अनौपचारिक कार्य और श्रमिक

तेलंगाना और भारत के अन्य राज्यों में शहर और नगर बड़े होते जा रहे हैं। लोग तेजी से गाँव छोड़कर शहर में आ रहे हैं। लेकिन इनमें से कई लोगों को यहाँ पर्याप्त रोजगार नहीं मिल पाता और अंत में विभिन्न प्रकार की नौकरियाँ करते हैं। वे सब्जियाँ और अन्य सामान बेचते हैं, नाश्ता बनाते और बेचते हैं, चाय की दुकान और छोटे कारखानों में काम करते हैं, कपड़े सिलाई, बाज़ार में माल उतारने और चढ़ाने का काम और घरेलू नौकरानी के रूप में काम करते हैं। इनमें से कई घर में ही सामान तैयार करते हैं- कपड़े सिलाई करना, पापड़, अचार कढ़ाई करना, इत्यादि काम में पारिवारिक उत्पादन प्रणाली से जुड़े होते हैं। इनमें से अधिकतम गतिविधियाँ सरकार के साथ पंजीकृत नहीं होती। इस तरह के श्रमिक अनौपचारिक श्रमिक कहलाते हैं और इस तरह के काम अनौपचारिक कार्य कहलाते हैं।

चित्र 19.4 केवल बिछाते श्रमिक

रोजगार के इन सभी क्षेत्रों के बारे में समानता यह है कि इसमें बहुत कम लागत या कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन यह रोजगार अनियमित और बहुत कम भुगतान वाले होते हैं। ये श्रमिक बहुत दयनीय स्थिति में होते हैं। कारखानों और कार्यालयों में कार्यरत और नियमित वेतन पाने वाले कर्मचारियों के विपरीत ये श्रमिक दिन में कई काम करते हैं, प्रातः वे अखबार बाँटते हैं, दिन में चाय की दुकान पर काम करता है, रात में किसी घर में भोजन बनाते हैं। इससे ये बिना आराम के पूरे दिन व्यस्त रहते हैं। अधिकतर मामलों में बच्चों सहित इनके परिवार का हर सदस्य कमाने के लिए काम करते हैं। इसलिए बच्चे अधिकतर अशिक्षित रह जाते हैं। जब ये आर्थिक स्थिति से जूझते हैं, वे खर्चे को कम करने का प्रयास करते हैं -जैसे बच्चों को स्कूल से निकाल देना और खाने या दवाइयों के खर्चे को कटौती करना। इसके बाद भी वे अपनी आवश्यकता को पूरा नहीं कर पाते। वे अपने दोस्त या रिश्तेदार से ऋण लेने पर विवश हो जाते हैं और कभी-कभी साहूकार से। लगभग सभी इन साहूकारों के कर्जे तले दबे रहते हैं और उन्हें इसके लिए उनके पास काम भी करना पड़ता है।

चित्र 19.5 सड़क मरम्मत निर्माण

इनमें से अधिक लोगों के पास उनके हितों की रक्षा के लिए श्रमिक संघ नहीं होते, जैसा कि हमने पहले भी उल्लेख किया है, देश में ऐसे श्रमिकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इनकी संख्या केवल गाँव से यहाँ आने वाले लोगों के कारण नहीं बढ़ रही, बल्कि बड़े कारखानों और मिलों के बंद होने के कारण भी बढ़ रही है। इन कारखानों के श्रमिकों को यहाँ आकस्मिक श्रमिकों के समान काम करना है।

इन समस्याओं को देखते हुए गुजरात के कुछ श्रमिक संघ कर्ताओं ने जिस दुनिया के अनौपचारिक श्रमिकों का सबसे बड़ा श्रमिक संघ माना जाता है, अनौपचारिक श्रमिक संघ का गठन किया। आईए इसके बारे में और अधिक जानते हैं।

स्वरोज़गार महिला संघ (SEWA एस.ई.डब्ल्यु.ए.)

1971 में अहमदाबाद के कपड़ा बाज़ार (क्लोथ मार्केट) में गाड़ी खींचने वाली प्रवासी महिलाओं का एक छोटा सा ग्रुप अपने घर की सुविधाओं को बढ़ाने में सहायता के लिए कपड़ा श्रम संघ (टी.एल.ए.) के पास पहुँचा। यह एक प्राचीन और विशाल श्रमिक संघ है, जिससे महात्मा गांधी भी जुड़े थे। यूनियन ने 1971 में सेवा (एस.ई.डब्ल्यू.ए.) की महिलाओं की सहायती की जो 1972 में एक श्रमिक संघ बन गया।

तब से सेवा (एस.ई.डब्ल्यू.ए.) में लगातार प्रगति हुई है, जिसमें विभिन्न व्यवसायों की महिलाएँ सदस्य बन रही है। सेवा (एस.ई.डब्ल्यू.ए.) के सदस्य में कोई कर्मचारी और मालिक का निश्चित रिश्ता नहीं होता और वे अपने उत्तरजीविका के लिए स्वयं के श्रम पर निर्भर करते हैं। उनके पास मुश्किल

से कोई पूंजी या संपत्ति रहती है। कोई भी स्वरोजगार महिला 5 रुपए सदस्यता फीस दे कर सदस्य बन सकती हैं। सेवा (SEWA) स्वरोजगार महिलाओं की शिकायतों के समाधान, उनके कार्य संस्कृति में सुधार और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सहायता करता है। फेरीवालों, सब्जी, फल, मछली, अंडे और अन्य खाद्य सामग्री तथा नए और पुराने कपड़े के विक्रेता, बुनकरों, कुम्हार, बीड़ी और अगरबत्ती श्रमिक, पापड़ रोलर्स, तैयार वस्त्र श्रमिक, चित्रकार, मज़दूर, और कृषि श्रमिक, निर्माण मज़दूर, हाथगाड़ी खींचने वाले, सिर पर सामान ढोने वाले, घरेलू श्रमिक, गोद एकत्र करने वाले इत्यादि सेवा (SEWA) के सदस्य बन सकते हैं।

अब तक 9 राज्यों के लगभग 13 लाख श्रमिक सेवा (SEWA) के सदस्य बन गए हैं। सेवा (SEWA) अपने सदस्यों के लिए एक सहकारी बैंक भी चला रही है और स्वास्थ्य बीमा सुविधाएँ भी प्रदान करती है। सेवा उनके उत्पादों के वितरण(मार्केटिंग) और उचित मज़दूरी तय करने में भी सहायता करती है। क्या आपको लगता है कि इस तरह के संस्थान तेलंगाना में सड़कों, बाज़ार और कार्यालयों में सब्जियाँ बेचने वाली स्वरोजगार महिलाओं के लिए सहायक हो सकते हैं ?

मुख्य शब्द :

1. मुआवजा
2. भविष्य निधि
3. बादली श्रमिक
4. भत्ते
5. आकस्मिक/ सामयिक श्रमिक
6. ESI
7. स्थाई श्रमिक

हमने क्या सीखा?

1. ईंट भट्टी में काम करने वाले श्रमिक, स्थाई श्रमिक और अनुबंधित श्रमिक की स्थिति की तुलना कीजिए।(AS_1)
2. क्या आप अपने क्षेत्र में आकस्मिक(कैजुअल) और स्वरोजगार श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बना सकते हैं? (AS_3)
3. अध्याय में बताए गए विभिन्न प्रकार के संघों(यूनियनों) की सूची बनाइए। तालिका में भरें। (AS_3)

क्र.सं.	कंपनी जिसमें संघ काम कर रहा था	श्रम के प्रकार	मुख्य समस्या	समाधान का सुझाव
1.				
2.				
3.				

4. श्रमिक संघ के सदस्य (लीडर) से बात करें और उसे कक्षा में आमंत्रित करके उसके जीवन इतिहास के बारे में जाने। विशेष रूप से पता करें कि वह संघ से क्यों जुड़े। संघ के सदस्य के रूप में उनके क्या अधिकार हैं। संघ सदस्य के रूप में उनके क्या कर्तव्य हैं ? (AS_3)
5. आपके स्थानीय श्रमिक अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए जिसमें आपके मुहल्ले में कार्य करने वाले श्रमिकों की स्थिति का विवेचन हो।

अध्याय 20

लोक-धर्म
(Folk-Religion)

निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में अपनी कक्षा में चर्चा कीजिएः

1. आपके क्षेत्र में किस देवता/देवी की पूजा की जाती है?
3. किस संत, पीर और बाबा को आपका परिवार सम्मान देता है?
4. लोग किस पशु और वृक्ष की पूजा करते है?
5. क्या आप जानते हैं लोग कैसे पूजा करते हैं?
6. देवताओं की पूजा कैसे की जाती है और पूजा कौन करता है?
7. भक्तों द्वारा किस भाषा में देवताओं को संबोधित किया जाता है?

आपने निम्न प्रकार के संवाद सुने ही होंगेः

लक्ष्मीः कुछ महीनों से, मेरे बच्चे लगातार बीमार पड़ रहे हैं।

सम्मक्काः मेरे पति भी पिछले एक महीने से अस्वस्थ हैं।

येल्लम्माः मेरे विचार में हमारी देवी मुत्यालम्मा हमसे क्रोधित है। हमें उनको शांत करने के लिए विशेष पूजा करनी चाहिए। चलिए हम बोनालू लेकर चलते हैं और देवी को एक मुर्गा चढ़ाते हैं।

***

रामराजूः मेरी बेटी काफी कमजोर है और कुछ नहीं खाती नहीं।

सुरेशः तुम पीर बाबा की दरगाह पर क्यों नहीं जाते और मौलवी को तावीज़ बांधने को क्यों नहीं कहते ? वह ठीक हो जाएगी।

हमारे देश में कई लोग बड़े मंदिरों, मस्जिदों या चर्च में ईश्वर की आराधना करते हैं और अपनी श्रद्धा भेंट करते हैं। दूसरी ओर लोग ग्राम देवताओं की भी पूजते हैं। ये प्रसिद्ध देवता कौन हैं और इनकी पूजा कैसे, कब और किसके द्वारा की जाती है ?

ग्राम देवता अनेक होते हैं - इनमें से कुछ तो विशेष जाति या विशेष गाँव या किसी एक परिवार के लिए होते हैं। कुछ अधिक प्रचलित देवियाँ -

पोचम्माः तेलंगाणा में पोचम्मा सबसे लोकप्रिय देवी हैं। लगभग प्रत्येक गाँव में उनके लिए एक मंदिर समर्पित होता है। यह राम और शिव मंदिरों से अलग होता है। नीम के पेड़ के नीचे एक साधारण सा मंदिर और उसके भीतर एक पत्थर के रूप में देवी स्थापित की जाती है। आधुनिक नगर और शहरों में ये मंदिर कुछ शिल्पकला और पत्थर की मूर्ति के साथ बने होते हैं।

गाँव में विशेष अवसरों पर सभी जाति के लोग बोनालु के साथ मंदिर जाते हैं। वे मूर्ति को धोते हैं और मंदिर के प्रांगण को अच्छी तरह से साफ करते हैं। यहाँ कोई पुजारी नहीं होता और लोग अपनी भाषा में फूलों

SCERT TELANGANA

चित्र 20.1 और 20.2 पोचम्मा की दो प्रतिमाएँ

आदि के साथ अपने रिवाज़ और परंपराओं इत्यादि के अनुसार पूजा करते हैं, "माता, हमने बीज बो दिए हैं अब आपको अच्छी फसल सुनिश्चित करनी होगी।" "मेरी बेटी बीमार है आपको उसे अच्छा करना होगा।" "माता, हमारे परिवार से संक्रामक रोग और बुराइयों को दूर रखिए।" वे बोनम का एक हिस्सा भी चढ़ाते हैं और कभी-कभी मुर्गा या भेड़ चढ़ाते हैं।

मैसम्मा: ऐसा विश्वास है कि ये देवी पशुओं की रक्षा करती हैं। पशुओं के शेड के बीच एक आले को सफेदी लगाई जाती है और उसे "कुमकुम" से सजाया जाता है और इसे "मैसम्मा गुडु" कहा जाता है। कई स्थानों पर कट्टा -मैसम्मा को पानी की देवी के रूप में पूजा जाता है जो छोटे पत्थर के रूप में तालाब के किनारे पूजी जाती है। टैंक बंड पर पूजी जातीं हैं। लोगों की धारण है कि वें यह सुनिश्चित करेंगी कि टैंक पानी से भरी रहे। इस प्रकार उनके आशीर्वाद से फसले अच्छी होगी।

गंगम्मा: ये जल देवी हैं, जो समुद्र में जाने वाले मछुआरों की रक्षा करती हैं। यह धारणा है कि देवी गंगम्मा गरीब और अनाथों की रक्षा करती हैं।

येलम्मा: येलम्मा को पोलिमेरम्मा, 'मरिडम्मा', 'रेनुका' महांकाली, जोगम्मा, सोमालम्मा और कई अन्य नामों

चित्र 20.3 मैसम्मा

से भी बुलाया जाता है। यह मान्यता है कि देवी गाँव की सीमाओं की रक्षा करतीं हैं और संक्रामक रोग तथा बुराइयों को प्रवेश करने नहीं देतीं। लोग हमेशा उनकी आराधना हैजा जैसी घातक बीमारी से बचने के लिए करते हैं।

पोतराजू: तेलंगाणा के किसान का विश्वास है कि पोतराजू उनके खेतों और फसलों की देख-रेख करता है और फसलों को खतरनाक बीमारी, चोर और पशुओं से

चित्र 20.4 येलम्मा

चित्र 20.5 पोतराज

बचाता है। किसान खेत के कोने में एक पत्थर को सफेद रंग लगाकर रखता है। पोतराजू की पूजा बहुत आसान है। जब फसल कटाई का समय होता है तो देवताओं की आराधना की जाती है। इनकी अनेक बहनें हैं जिन्हें पेद्म्मा जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है।

बीरप्पा और काटम राजु: इन्हें ग्वाले और गडरिए समुदाय द्वारा पूजा जाता है। इन्हें पशुओं और भेड़ों के रक्षक के रूप में माना जाता है। क्या आपने बीरप्पा और अक्कामांकाली की कहानी सुनी है –कैसे बीरप्पा एक गरीब गड़रिये ने कमाराथी से विवाह करने के लिए संघर्ष किया और किस तरह से उसकी बहन ने उसकी मदद की? क्या आपने कातृम राजू की कहानी सुनी है, जिसने पशु चरवाहों के चराई के अधिकारों के लिए नेल्लूर के राजा के विरूद्ध लड़ाई लड़ी ?

- आपने इनमें से कई गाँव और समुदाय के देवताओं की पूजा में भाग लिया होगा और शिव तथा विष्णु के कुछ मंदिर भी गए होंगे। क्या आप तुलना कर सकते हैं कि इन स्थानों में पूजा कैसे की जाती है ? इनमें क्या समानताएँ और अंतर है ? कक्षा में इसकी चर्चा कीजिए।

पशुओं की बलि चढ़ाना लोक-उत्सव की सामान्य प्रथा है। इसके परिणामस्वरूप हज़ारों पशु मारे जाते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए तेलंगाना में किसी भी पशु या पक्षी की बलि पर रोक लगा दी गई है।

लोक देवताओं की सामुदायिक पूजा

अधिकतर लोक देवी और देवता वास्तव में स्थानीय नायक थे, जो या तो अपने लोगों की रक्षा के लिए लड़ते हुए शहीद हो गए या तो वे स्वयं अपने समय के शक्तिशाली लोगों द्वारा अपकृत का शिकार हुए। आम लोगों की यह धारणा है कि ऐसे व्यक्ति लोगों की मदद के लिए विशेष शक्ति पा लेते है और पूजा नहीं करने पर समस्या पैदा कर सकते हैं। साराक्का और समक्का ऐसी ही दो नायिका थीं, जिन्होंने आदिवासी लोगों के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, जिनके सम्मान में जात्रा निकाली जाती है।

समक्का, सारक्का(मेडारम) जात्रा:

वह वरंगल जिले में ताड़वाई मंडल के आदिवासी लोगों का एक उत्सव है। तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड के लोग इस यात्रा में भाग लेने के लिए इकट्ठा होते हैं। करीब एक करोड़ लोग इसमें शामिल होते हैं।

कहानी: 'मेदाराजू', एक आदिवासी मुखिया था, जो काकतिया राजा रुद्रदेव (प्रतापरूद्र-I) के अधीन था। उन्होंने पोलवासा राज्य जगत्याल जिले में स्थित है, पर शासन किया। उन्होंने उनकी बेटी समक्का का विवाह पागीदीदाराजु से किया, जो मेड़ारम का राजा था। उनके तीन बच्चे थे – सारलम्मा, नागुलम्मा और जमपन्ना। अपने राज्य के विस्तार के लिए रूद्रदेव ने मेड़ारम पर आक्रमण कर दिया। इस भीषण लड़ाई में मेदराजू और उसके पूरे परिवार ने अपने पागिदीदाराजु का पूरे परिवार, कबीले के स्त्री और पुरुष ने भीषण युद्ध में भाग लिया। लड़ाई में सभी लोग मारे गए। जंपन्ना ने भी काकतिया सेना को नदी पार करने से रोकने के लिए अपनी अंतिम सांस तक लड़ाई की और 'सम्पेंगा वागू' में वीरगति को प्राप्त हुआ। इसीलिए इसे 'जामपन्ना वागू' नाम दिया गया। समक्का और साराक्का ने सेना से लड़ाई की और अपने कबीले की सुरक्षा के लिए प्राणों का बलिदान दिया। इस

चित्र 20.7 मेडाराम जात्रा का चित्र

पूरे क्षेत्र के आदिवासी लोग इन्हें इनके साहस और बलिदान के लिए पूजते हैं और उनके सम्मान में इस दिन मेडाराम जात्रा मनाते हैं।

मेडारम यात्रा प्रति दो वर्ष में आयोजित की जाती है। यह जात्रा तीन दिनों तक चलती है। समक्का और सारक्का निराकार देवी हैं। इनके प्रतिनिधित्व करने वाले आकर्षक रूप से सजे हुए ताबूत जंगलों से व्यापक जुलूस में लाये जाते हैं और पेड़ के नीचे मंच पर रख दिए जाते हैं। उस समय पर लोग अनुभव करते हैं कि देवी ने उनमें प्रवेश कर लिया है। लोग देवी को सोना(बंगारम), गुड़ चढ़ाते हैं।

चित्र 20.6 मंच पर समक्का देवी की स्थापना

मोहर्रम(पीर्लु) और उरस

मुसलमान भी अपने उन नायकों को याद करते हैं, जिन्होंने बुराई के खिलाफ लड़ाई की। ऐसा ही एक पवित्र दिवस मोहरम के रूप में मनाया जाता है जो ईराक के कर्बला में धर्म की लड़ाई का प्रतीक हैं, जिसमें पैगम्बर मोहम्मद के पोते को शहीद किया गया था। सजे हुए ताजीया के साथ जुलूस(पीरी) निकाला जाता है, जिसमें सभी समुदाय के लोग हिस्सा लेते हैं। पीरी एक गुंबद के आकार में बाँस की पट्टियों से तैयार किया जाता है। इसे चमकीले कपड़ों से लपेटा जाता है। पीर को थामने के लिए गुंबद के साथ बॉस के पोल को जोड़ा जाता है और धातु का शीर्ष अर्ध चंद्राकार या हथेली के आकार का इसके साथ जोड़ दिया जाता है। अंतत:इसमें फूल और सूखे नारियल की माला लगाई जाती है।

चित्र 20.8 अजमेर दरगाह

चित्र 20.9 जहाँगीर पीर दरगाह

इसी तरह, उर्स मुसलिम महात्मा एवं सूफी संत, जिन्हें राज्य के विभिन्न स्थानों में दफनाया गया था, की वर्षगांठ के रूप में मनाया जाने वाला उत्सव है। बड़ी संख्या में लोग दरगाहों में जाते हैं, कब्र पर फूल तथा चादर चढ़ाते हैं और कव्वालियाँ सुनते हैं। उनका मानना है कि इस तरह से उन्हें पीर बाबा या संत का आशीर्वाद या बरकत प्राप्त होगी। जो लोग बच्चे और नौकरी जैसे विशेष आशीर्वाद चाहते हैं, दरगाह में आते हैं और प्रार्थना करते हैं।

दरगाह सूफी संतों के मकबरों पर बनी होती हैं, जिन्होंने सूफी मत कशा प्रचार कियो सूफी संतों के मकबरे या दरगाह तीर्थ स्थान बन जाते है, जिसमें विभिन्न आस्थाओं वाले हजारों लोग आते हैं। अधिकतर लोग सूफी मास्टर को चमत्कारी शक्ति(करामात) वाला मानते हैं, जो दूसरों को उनकी बीमारी और मुसीबतों से राहत दिलाते हैं।

जहाँगीर पीर दरगाह – धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक

जहाँगीर पीर दरगाह रंगारेड्डी जिले के कोत्तुर मण्डल में स्थित है। कहा जाता है कि *15* वीं शताब्दी में ईराक से दो भाई-सय्यद गौसुद्दीन और सय्यद बुरानुद्दीन यहाँ आए थे, जब यह वन भाग था, यहाँ दैव्यशक्ति के रूप में कुछ वर्ष बिताये और यहीं उनकी मृत्यु हो गई। उनके कुछ अनुयायियों ने उनकी कब्र पर दरगाह बनाई 17 वीं शताब्दी में जब औरंगजब इस दरगाह में गए, तब उन्हें वहाँ की पवित्रता की जानकारी मिली और उन्होंने इब्राहिम को दरगाह का काज़ी नियुक्त किया। काज़ी ने इस क्षेत्र को तीर्थ स्थल के रूप में विकसित किया।

प्रतिदिन हैदराबाद के आस-पास रहने वाले कई लोग दरगाह जाते है। अन्य प्रदेशों के भक्त गुरुवार और रविवार को अधिक आते है क्योंकि इस दिन विशेष पूजा होती है। उर्स प्रतिवर्ष संक्रान्ति त्योहार के पश्चात आने वाले गुरूवार से तीन दिन के लिए मनाया जाता है। पहले दिन चन्दन (गन्धपु पूजा), दूसरे दिन दीपक पूजा (दिपार्दना) और तीसरे दिन कव्वाली का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। उर्स में भाग लेने वाले लोग केवल भारत के विभिन्न भागों से ही नहीं आते बल्कि विदेशों से भी आते है। हजारों हिन्दू और मुसलमान पुष्प, मिठाई और चादर चढ़ाते है। यह दरगाह धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक बन गई है।

बोनालु

बोनालु तेलंगाणा क्षेत्र का एक प्रसिद्ध लोक त्योहार है। इसमें भोजन अर्पित करते हुए देवी की पूजा की जाती है, जिसे बाद में परिवार के सदस्य बाँटकर खाते हैं।

महिलाएँ इसमें अपने सिरों पर फूलों से सुसज्जित मटके या 'घटम' लिए हुए भाग लेती हैं। श्रद्धालु महिलाएँ

SCERT TELANGANA

चित्र 22.10 बोनालु

पके हुए चावलों से भरे व नीम के पत्ते से सजे पीतल या मिट्टी के बर्तन लेकर भी जाती है। उनके साथ चलने वाले पुरुष नृतक पोतराजू कहलाते हैं, जो चाबुक चलाते हुए नीम की पत्तियाँ लेकर जलसे का नेतृत्व करते हैं।

- यदि आपने ऐसी किसी जातरा, उर्स या बोनालु में भाग लिया है, तो उसका वर्णन अपनी कक्षा में करें और उनकी मुख्य विशेषताओं के बारे में चर्चा कीजिए।
- ग्राम देवताओं की पूजा या बड़े मंदिरों में पूजा या मस्जिद में नमाज, ये त्योहार अन्य से अलग कैसे है?

लोक परंपरा की पुरातनता

कई ऐतिहासिक पुस्तकें हमें बताती हैं कि ऐसे लोक देवताओं की पूजा बहुत प्राचीन समय में भी की जाती थी। हमने 2500 वर्ष पूर्व होने वाली नाग,पेड़ों यक्ष और यक्षणियों की पूजा के बारे में जाना है। लगभग 1450 ई. में लिखी गई, श्रीनाथ द्वारा पाल्नाटी वीरुला कथा में पोथराजू की पूजा के बारे में बताया गया है। इसके बदले में वल्लभरायुडु की क्रिडाभिरामम लगभग इसी समय लिखी गई थी, जिसमें वरंगल में मैलारा और कई देवियों की पूजा के बारे में विस्तार से जानकारी है।

आपने ध्यान दिया होगा कि किस तरह लोक देवताओं की पूजा बड़े मंदिरों, मस्जिदों और चर्चों से बिल्कुल अगल होती है।

अधिकतर इन देवताओं की पूजा अधिकतर सभी लोग अपनी जाति, धर्म या आर्थिक स्तर को भुलाकर समान रूप से करते हैं। उदाहरण के लिए, मुसलमान भी यहाँ तक कि वे ग्राम देवता की कई रीतियों में भाग लेते हैं। इसी प्रकार सभी धर्म के लोग पीर की दरगाह जाते है और वे वहाँ के पेड़ों या दीवारों पर धागे बाँधते हैं और कुछ समस्याओं के समाधान होने पर फिर दर्शन के लिए लौटने का वचन देते हैं। वे अपने को बुरी शक्तियों से बचाये रखने के लिए परीजादों से तावीज़ बनाने का अनुग्रह करते हैं।

ग्राम देवताओं और उच्च धार्मिक परंपराओं का आन्तरिक मिश्रण

भारत में विभिन्न प्रकार के लोगों में बातचीत की निरंतर प्रक्रिया होती है और उनका धर्म अंतरमिश्रण की परंपरा की ओर बढ़ रहा है। लोक पूजा और लोक ज्ञान में आरंभ हुई इस धार्मिक सोच को उच्च धर्मों ने अपनाया और उच्च धर्मों के धार्मिक विश्वासो को इन लोक धर्मों ने अपनाया है।

इसीलिए उच्च धार्मिक परंपरा में भी पीपल के वृक्ष, सांप और देवी माता की पूजा की जाती है। इसी तरह वर्तमान में सांप, पेड़, पशु, और पक्षियों के एकीकरण ने वर्तमान में पौराणिक धर्म में स्थान लिया है । ग्राम देवता जैसे बुद्ध, शिव या विष्णु या दुर्गा पूजा का भाग बन गए। आप देख सकते हैं कि साँप, नदी और पेड़, उनकी आराधना के रूप में पूजे जाते हैं।

इस्लाम के मामले में यह अलग है। इस्लाम का उच्च धर्म एकेश्वर में विश्वास रखता है या सिर्फ एक भगवान–अल्लाह की आराधना करता है। हालांकि, इस्लाम के लोक अनुयायियों ने सूफी संतों को मानना शुरू कर

SCERT TELANGANA

दिया और उनका विश्वास था कि उनकी दरगाह में पूजा करने से उनकी सभी समस्याएँ दूर हो जाएंगी। इसी प्रकार दरगाह और उर्स के लिए श्रद्धालुओं की एक मजबूत परंपरा बनी और सभी धर्मों के लोगों ने इसमें भाग लिया।

लोक ज्ञान और उच्च धर्म

कई संत जैसे कबीर, योगी वेमना और कई सूफी संत, जो आम लोगों के बीच से आए थे, ने अपने गहन धार्मिक विचार रखे। उन्होंने उच्च धर्म के उपदेशों को आम लोगों के विचारों से मिलाया। योगी वेमना के निम्नलिखित विचारों को पढ़िए, जो 300 वर्ष पहले के है और जिन्होंने तेलुगु में कई ज्ञान वर्धक कविताएँ लिखीं।

"व्यक्तिगत अनुभव के बिना, शास्त्र की पुनरावृत्ति मात्र से भय दूर नहीं होगा। जिस तरह से मात्र चित्रित लौ से अंधेरे दूर नहीं किए जा सकते।"

"छह स्वाद अलग हो सकते हैं, लेकिन स्वाद एक ही रहता है, सच्चाई के बारे में विभिन्न धर्म हैं, लेकिन सच्चाई एक है, और संत आपस में अलग हो सकते हैं, लेकिन वे जिसका ध्यान करते हैं वह एक है।"

"मुंडे सिर, उलझे बाल, भद्दी राख, गायन, धार्मिक पोशाक! कोई आदमी संत नहीं है, जो दिल से साफ नहीं है।"

इस तरह के विचार और कहावतें आम लोगों के विचारों का हिस्सा बन गए हैं।

मुख्य शब्द :

1. लोक देवता 2. जातरा 3. उर्स 4. पीरी 5. बोनम

हमने क्या सीखा?

1. अधिकतर ग्राम देवताओं की पूजा में क्या समानताएँ होती हैं? बताइए। (AS_1)
2. जब लोग गाँव से शहर जाकर बस जाते हैं, तो क्या वे वहाँ अपने पुराने ग्राम देवताओं की पूजा जारी रखते हैं? वे इसे कैसे करते हैं? (AS_1)
3. क्या लोगों की ग्राम देवता की पूजा अब बदल रही है? आप किस तरह के बदलाव देखते हैं? (AS_4)
4. तेलंगाना मानचित्र में जात्रा और उर्स के महत्वपूर्ण स्थानों को अंकित कीजिए। (AS_5)
5. 186 पृष्ठ का चौथा अनुच्छेद पढ़िए और टिप्पणी लिखिए। (AS_2)
6. आपके क्षेत्र के विभिन्न धर्म के लोगों से मिलकर विषयों की जानकारी लिजिए। (AS_3)

क्र.सं.	नाम	उनके द्वारा माना जाने वाला धर्म	उनके द्वारा पूजे जाने वाले भगवान	उनके द्वारा मनाया जाने वाला त्यौहार

परियोजना कार्य :

1. अपने दादा-दादी से अपने क्षेत्र की किसी भी जात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त करें। एक रिपोर्ट बनाएँ।
2. अपने क्षेत्र के किसी लोक देवता के बारे में कहानियाँ एकत्रित करें और इसकी एक छोटी सी किताब बनाएँ।

SCERT TELANGANA

अध्याय

21 आध्यात्मिकता की ओर भक्तिमार्ग

(Devotional Paths to the Divine)

SCERT TELANGANA

आपने देखा कि लोग शास्त्र विधि द्वारा पूजा करते हैं, या भजन गाते हैं, कीर्तन या कव्वाली या मौन रूप से ईश्वर के नाम का जाप करते हैं, और कुछ आँसू भी बहाते हैं। तीव्र भक्ति और ईश्वर के प्रति समर्पित भावना और प्रेम ही भक्ति है और सूफी आन्दोलन जिसका विकास 8वीं शताब्दी में हुआ। आपने छठवीं कक्षा में अलवार और नयनार की कविताओं के बारे में पढ़ा था जो विष्णु और शिव के भक्त थे। राजाओं और सरदारों ने शीघ्र ही मन्दिरों का निर्माण किया और भूमि दान में दी और विभिन्न प्रकार की शास्त्रीय विधि को करने के लिए उपहार भी दिए। मंदिरों में पूजा का विस्तार कठिन और खर्चीला हो गया। विशेष प्रशिक्षित पुजारी ही पूजा पद्धतियों से परिचित थे। कुछ जाति के लोगों को मंदिर में प्रवेश भी करने नहीं दिया जाता था। जल्दी ही ऐसी पद्धतियों और असमानता के विरोध में प्रतिक्रिया की गई। ईश्वर भक्ति में नए विचार उभरने लगे– इस बारे में पढ़कर जानकरी प्राप्त कीजिए।

दर्शन और भक्ति

8वीं शताब्दी में केरल में एक प्रसिद्ध भारतीय दर्शन शास्त्री शंकर का जन्म हुआ। वह अद्वैत या व्यक्तिगत आत्मा की एकात्मकता सिद्धांत और सर्वोच्च ईश्वर की अंतिम वास्तविकता के समर्थक थे। उन्होंने ब्राह्मणों को सिखाया कि केवल निराकार और निर्गुण ईश्वर ही अंतिम वास्तविकता है। उन्होंने विश्व को समझने और मुक्ति पाने के लिए संसार का त्याग और ज्ञान के मार्ग का अनुसरण करने का उपदेश दिया। ब्राह्मण का वास्तविक स्वभाव होना चाहिए।

11वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में रामानुज का जन्म हुआ,वे अलवार से बहुत प्रभावित थे। उनके अनुसार मुक्ति पाने का सबसे अच्छा मार्ग विष्णु के प्रति संपूर्ण समर्पण भावना है। रामानुज ने भी निम्न जाति के लोगों के लिए मंदिर में प्रवेश की व्यवस्था की । उन्होंने विशिष्टाद्वैत या एकात्मकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसके द्वारा आत्मा परमात्मा में विलीन हो कर भी प्रथक रहेगी। रामानुज के सिद्धान्त ने नई भक्ति धारा के लोगों को प्रभावित किया जो उसी समय उत्तर भारत में विकसित हुई थी।

बसवन्ना का वीर शैवम्

हम मन्दिरों में भक्ति और भक्ति आन्दोलन के मध्य संबंध के बारे में जानते हैं । अब हम भक्ति आंदोलन का और एक रूप वीर शैवम् के बारे में जानेंगे। इसके मुख्य आरम्भ कर्ता बसवन्ना और उनके साथी आलमा प्रभु और अकामहादेवी थे। बारहवीं शताब्दी के मध्य में कर्नाटक में आन्दोलन आरम्भ हुआ। वीरशैवमत अनुयायियों ने सभी मनुष्यों में समानता और जाति के बारे में गंभीरता से विचार विमर्श किया तथा महिलाओं के साथ किए जाने वाले व्यवहार पर चिंता प्रकट की।

ये वचन बसवन्ना की विनय भावना को सूचित करते हैं:

अमीर,
शिव के लिए मंदिर बनायेंगे
मैं
एक गरीब व्यक्ति
क्या करूँ?
मेरे पैर स्तम्भ है,
मेरी देह मंदिर है।
सिर मंदिर का स्वर्ण शिखर है।
सुनो,
खड़ी चीज़े गिर सकती हैं,
किंतु गति हमेशा अटल रहती हैं।

- बसवन्ना द्वारा प्रस्तुत किए गये मुख्य विचार क्या है ?
- वह मंदिर क्या है जिसे बासवन्ना ईश्वर को भेंट देना चाह रहे हैं ?

महाराष्ट्र के सन्त

तेहरवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक महाराष्ट्र में महान संत एवं कवि हुए हैं जिनके सरल मराठी के गीत लोगों को आज तक प्रभावित करते हैं। ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम के साथ-साथ महिलाएँ जैसे सक्कु बाई और चोखामेला का परिवार प्रमुख है जो अस्पृश्य महर जाति के थे। ये क्षेत्रीय पारम्परिक भक्ति पंढ़रपुर में विठ्ठल(विष्णु का स्वरूप) मंदिर पर केंद्रित थी। के नाम से प्रचलित हुई। तथा उनके अभिप्राय में सभी लोगों के दिलों में वैयक्तिक ईश्वर निवास करते हैं।

चित्र 21.1 आग के आस-पास तपस्वियों का जमा होना

इन संत कवियों ने सभी धार्मिक क्रियाकर्मों का बहिष्कार किया। वास्तव में उन्होंने आत्म त्याग का भी विरोध किया तथा परिवार के साथ रहना, अन्य लोगों के समान जीविका चलाने के लिए कमाना, निर्धन लोगों की नम्रता से सेवा करना पसंद किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि दूसरों का दुख बाँटना ही भक्ति है। इससे एक नवीन मानवीय उपाय सामने आया। प्रसिद्ध गुजराती संत नरसिंह मेहता ने कहा “वैष्णव वही है जो दूसरों के दुख को समझे।”

यह तुकाराम का एक अभंग है(मराठी में भक्ति का श्लोक)

वह जो
टूटा-फूटा और परास्त
होने पर भी पहचाना जाता है। उसे संत कहो।
ईश्वर उसके साथ है
वह पकड़ता है
प्रत्येक त्यागी व्यक्ति को
उसके हृदय के समीप लेता है
वह
एक गुलाम के साथ
अपने पुत्र के समान
व्यवहार करता है।
तुका कहते हैं
वापस दोहराने के लिए
मैं थक्ता नहीं
ऐसा व्यक्ति
व्यक्ति के रूप में
ईश्वर है

- आप विचार में तुकाराम को गरीबों का मित्र और ईश्वर का सच्चा भक्त क्यों माना जाता था?

यहाँ चोखामेला के पुत्र के द्वारा रचित एक अभंग प्रस्तुत है:

आपने हमें निम्न जाति का बनाया,
आप उस सच्चाई का सामना क्यों नहीं करते है महान ईश्वर?
हमारा पूरा जीवन -बचा हुआ भोजन खाने पर निर्भर है।
इस पर आप लज्जित होंगे
आपने हमारे घरों में खाया है
आप कैसे इसे अस्वीकार कर सकते है?
चोखा का पुत्र करमामेला पूछता है
आपने मुझे जीवन क्यों दिया?

- इस निबंध में प्रस्तुत सामाजिक आदेशों से संबंधित विचारों पर चर्चा कीजिए।

नाथपंथी, सिद्ध और योगी

असंख्यधार्मिक समूहों का इस समय आविर्भाव हुअ जिन्होंने धार्मिक पद्धतियों और रूढिवाद और सामाजिक संस्कारों का साधारण तर्क द्वारा आलोचना की । उनमें नाथपंथी सिद्धाचार और योगी थे। उन्होंने संसार में विरक्ति की वकालत की। उनके लिए मोक्ष का मार्ग निराकार वास्तविकता और उसमें एकात्मकता का अनुभव करना है। इसे प्राप्त करने के लिए मस्तिष्क, एवं तन का उच्च स्तर पर प्रशिक्षण देना और योगदान, श्वास व्यायाम और ध्यान धारणा, आदि अनिवार्य है। निम्न जाति के लोगों में ये समूह अधिक प्रसिद्ध होने लगा। रूढ़िवादी धर्म की निन्दा ने उत्तर भारत में इसे प्रसिद्ध बनाने में मैदान तैयार किया।.

इस्लाम और सूफीमत

संत और सूफियों में बहुत अधिक समानताएँ थी, इसीलिए उन्होंने एक दूसरे के विचारों को अपनाया। सूफी रहस्यमयी मुसलमान थे। उन्होंने

SCERT TELANGANA

दिखावटी धार्मिकता का विरोध किया तथा ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति और सभी मानवों के प्रति दया को प्रतिपादित किया।

इस्लाम ने एक ईश्वर के समक्ष समर्पण का प्रचार किया। मूर्ति पूजा का बहिष्कार किया और सामूहिक प्रार्थनाओं द्वारा सरल उपासना अथवा इबादत अपनाने पर बल दिया। इसी समय मुसलमान विद्वानों ने एक कानून- **शिरियत** को विकसित किया। सूफी लोगों ने कठिन क्रियाक्रमों का बहिष्कार किया और मुसलमान धार्मिक विद्वानों ने अच्छे व्यवहार की माँग की । वे ईश्वर से मिलने के लिए ऐसे उत्सुक रहते थे जैसे एक प्रेमी सारे संसार से विमुख होकर प्रेमिका के लिए उत्सुक रहता है। संत कवियों के समान सूफियों ने भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कविताओं की रचनाएँ की तथा गद्य में साहित्य लिखा, जिसमें लघु कहानियाँ और कल्पित कथाएँ जोड़ी गई है। मध्य एशिया में प्रसिद्ध सूफी गज़ल, रूमानी और सादी थे। नाथपंथी, सिद्ध और योगी की तरह सूफी भी यह विश्वास करते थे कि विश्व को विभिन्न दृष्टियों से देखने के लिए हृदय को प्रशिक्षित किया जा सकता है। उन्होंने प्रशिक्षण की प्रणालियों जैसे जिक्र (नाम का जाप या पवित्र सूत्र),चिन्तन करना, (धार्मिक गीत गाना), नीतियों पर चर्चा, श्वास नियंत्रण आदि का पीर के नेतृत्व में का प्रस्तुत किया। इसी कारण सूफी महात्माओं के वंश के आधार पर निर्देशों और रीति रिवाज़ों के अभ्यासों में तनिक अंतर के साथ सिलसिला (सूफी संतों का वंशावली अध्ययन से) आरंभ हुआ।

11वी. से मध्य एशिया के कई सूफी संत हिन्दुस्तान मे बस गए। इस प्रक्रिया को दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद बल मिला, सारे उपमहाद्वीप में सूफी केन्द्रों को विकसित किया गया। इन में प्रसिद्ध प्रभावकारी चिश्ती सिलसिला था। इनमें कई महात्मा जैसे अजमेर के ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, पंजाब के बाबा फरीद, दिल्ली के रव्वाजा निजामुद्दीन औलिया और गुलबर्गा के बन्दा नवाज गिसुदराज़ थे।

चित्र 21.2 रहस्यमयी अति प्रसन्नता

सूफी गुरू खानखाह या सरायों में अपनी सभाएँ आयोजित करते थे। खानखाह में राजघराने, कुलीन और साधारण लोगों के समूह को भक्ति संबंधी और प्रार्थना के बारे में बताया जाता था। वे आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा करते, सांसारिक संकटों से मुक्ति पाने के लिए और संतो का आशीर्वाद लेने इन सभाओं में जाते थे।

अधिकतर लोग सूफी गुरूओं को चमत्कारिक शक्तिवाला मानने लगे जो दूसरों की बिमारियों

और समस्याओं को दूर कर सकते हैं। सूफी सन्तों का गुंबद या दरगाह तीर्थ स्थल बन गए जहाँ हज़ारों लोगों की भीड़ उमड़ने लगी।

- यदि आप कभी दरगाह गए हैं तो अपनी कक्षा में अपने मित्रों के समक्ष इसका वर्णन कीजिए। लोग पीर का आदर कैसे करते हैं और किस लिए वे प्रार्थना करते हैं?

भारत में नए धार्मिक विकास

तेरहवीं शताब्दी के बाद उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन में नई तरंग का युग आया। यह वह समय था जब इस्लाम, हिन्दु, सूफी, नाथपंथी सिद्ध और योगी एक दूसरे से प्रभावित हुए। हमने देखा कि कई नये शहर और साम्राज्य उभरे और लोग नए व्यवसाय अपनाने लगे और स्वयं के लिए नई पात्रता ढूँढ़ने लगे। ऐसे लोग विशेषकर कलाकार, किसान, व्यपारी और श्रमिक नए संतों को सुनने के लिए समूह में जाने लगे और उनके विचारों का प्रचार करने लगे। कबीर और बाबा गुरू नानक ने पारम्परिक रिवाजों और विश्वासों को मानने से इन्कार किया।

कवि जैसे बोमरा पोतन्ना, अन्नामाचार्य, चैतन्य महा प्रभु, तुलसीदास, और सूरदास प्रचलित विश्वासों और रिवाजों को मानते थे, परंतु सभी लोग इनके पास सरलता से पहुँच सके ऐसा चाहते थे।

पोतन्ना ने जिसने वरगंल के पास बोमरा गाँव में एक किसान का जीवन बिताया, महाभागवत की रचना तेलुगु में की। पोतना को सहज या स्वाभाविक कवि कहा जाता था। स्वाभाविक भक्तिमार्गीय विचारों को प्रकट करने के लिए उन्होंने कविताएँ लिखी।

थालपका अन्नामाचार्य(1408 – 1503) आन्ध्र प्रदेश के प्रसिद्ध कविता रचनाकार थे और उन्हें 'पद कविता पितामह' से सम्मति किया गया। अनमय्या ने अपना सारा जीवन तिरूपति के भगवान वेंकटेश्वर के वैभव संबंधी गीत लिखने और गाने में बिताया। उनकी रचनाएँ मुख्तयः प्रकृत भाषा में तात्कालीन युग के विभागो के आधार पर सशुंस्कृतिक(ग्रन्थिका) पद्धति से लिखी गई। "अन्नमाचार्या चरितम" में कहा गया है कि अन्नमय्या ने बत्तीस हजार कीर्तन बालाजी भगवान पर रचे थे।

उनके कीर्तनों में नैतिकता, धर्म और वास्तविकता की जानकारी होती थी। इस युग में वे सामाजिक बुराई, जाति-प्रथा और अस्पृश्यता के विरोधी थे। उनके संकीर्तनों में "ब्राह्मण एक है परब्रह्म एक है" और "एक कुलाजुदैनानेमी इवादैनेनी, उन्होंने सुंदर और शक्तिशाली शब्दों में बताया कि ईश्वर और मानव में लिंग, जाति और आर्थिक स्तर पर समानता है।

तन्दनाना आही-तन्दनानापुरे
तन्दनाना भला-तन्दनाना

ब्रह्मवोक्कटे परब्रह्मोक्कटे पर
ब्रह्मोक्कटे पर ब्रह्मोक्कटे ...

निन्डारा राजु निद्रन्चु निद्रयु नौकट्टे
आण्डनै ओन्टु नीद्र अदियो नोकट्टे ...
मैण्डने ब्राह्मनुढु-मेट्टभूमि योकट्टे
चण्डालु डुन्डेटि सरिभूमि योकट्टे ...

अन्नामाचार्य कीर्तन

SCERT TELANGANA

चैतन्य महाप्रभु (1486–1534) वैष्णव संत और पूर्वी भारत के समाज सुधारक (आज वर्तमान में बंगलादेश और पश्चिम बंगाल) थे। चैतन्य का भक्ति योग(कृष्ण/ईश्वर के प्रति असीम भक्ति) के वैष्णव स्कूल के प्रस्ताव में सम्मानीय नाम है, जो भागवत पुराण और भागवत गीता के दर्शन पर आधारित है। उन्होंने सामूहिक रूप से भजन गाकर और भक्तिमयी नृत्य का प्रचार किया। उन्होंने कृष्ण के स्वरूप की पूजा की और 'हरे कृष्ण' मंत्र के जाप को प्रसिद्ध किया।

कन्वेरला गोपन्ना (1620 - 1680), भक्त रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे 17 वीं शताब्दी के राम भक्त थे और कर्नाटक संगीतकार थे। वे प्रसिद्ध तेलुगु भाषा के वागेयाकार में से एक थे। (गीत रचने और गाने वाला एक ही व्यक्ति) वे भद्राचलम में श्रीराम के प्रसिद्ध मन्दिर के निर्माता के रूप में प्रख्यात हुए। उन्होंने श्रीराम के भक्तिमयी गीत रामदासु कीर्तनालु के नाम से प्रसिद्ध रचना लिखी। उन्होंने लगभग 108 कविताओं का संग्रह दाशरथी शतकमुं श्री राम को समर्पित किया।

एक तीरूग ननु दया चुचेदवे, इऩ वन्शोत्तमा रामा
ना तरमा भाव सागारमीदनों,नलीन दलेक्षण रामा
श्रीरघु नन्दन सीता रमणा श्रीतजन पोशाक रामा
कारूण्यलया भक्त वरद नीनु, कनदी कोनुपु रामा...

- रामदासु कीर्तन

- क्या आप कुछ वागेयकारें और उनके संकीर्तनों के नाम बता सकते है ?

श्रीराम तुलसीदास के ईश्वर थे। तुलसीदास की रचना रामचरितमानस अवधी भाषा (पूर्वी उत्तर प्रदेश में उपयोग में लाई जाने वाली भाषा) में लिखी गई, जो दो प्रकार से महत्वपूर्ण है–उनकी भक्ति के प्रस्तुतिकरण और साहित्यिक कार्य। आसाम के शंकदेव(पन्द्रहवीं शताब्दी का अन्तिम काल) उनके समकालीन थे, जिन्होंने विष्णु की भक्ति को प्रतिपादित किया, असमी भाषा में कविताएँ लिखी और नाटक की रचना भी की । उन्होंने नामघर या वे घर जहाँ कथाएँ या प्रार्थनाएँ की जाती हैं का प्रचलन आरम्भ किया जो आज तक चल रहा है।

चित्र 21.3 मीराबाई

इसी परम्परा में दादू दयाल, रविदास और मीराबाई जैसे संत हुए। मीराबाई राजपूत राजकुमारी थी। १६ वीं शताब्दी में मेवाड के राजघराने में मीराबाई का विवाह हुआ। मीराबाई रविदास की शिष्या बनी, जो कि अस्पृश्य जाति की थी वह कृष्ण की भक्त थीं और उसने कई भजन और पदों द्वारा अपनी भक्ति का प्रदर्शन किया। उनके गीतों ने उच्च वर्ग को स्पष्ट रूप से चुनौती दी और राजस्थान और गुजरात क्षेत्रों में प्रसिद्ध हए।

कई संतों की अनोखी विशेषता यह थी कि उनके कार्य स्थानीय भाषाओं में रचे गए और गाये गए। वह अधिक हुआ। और मौखिक रूप से उनका हस्तांतरण पीढ़ी से पीढ़ी प्रसिद्ध हुए। सामान्यतः गरीब, अधिक वंचित सम्प्रदाय और महिलाओं ने इन गीतों को अपनाया, अपने अनुभवों को भी जोड़ा। जो राजस्थान और गुजरात में प्रसिद्ध हुए।

SCERT TELANGANA

आज हमारे पास जो गीत हैं, संतों के द्वारा रचे गए और उन लोगों के द्वारा भी जिन लोगों ने इन्हें गाया है। वे आज हमारे जीवन की अमूल्य संस्कृति है। जो पीढ़ी-दर-पिढ़ी चले आ रहे है।

- क्या आपने मातृ भाषा में ऐसे कोई पुराने भजन सुने हैं? पता लगाइए उन्हें किसने रचा है। उनमें से कुछ को भजन लिखिए और कक्षा में उसके अर्थ पर चर्चा कीजिए।

कबीर पर एक दृष्टि

लगभग पन्द्रहवी-सोलहवीं शताब्दी में कबीर का जन्म हुआ, वे एक प्रभावकारी संत थे। इनका पालन-पोषण एक जुलाहे या बुनकर के घर में बनारस(वाराणसी) के पास एक शहर में हुआ। उनके जीवन के बारे में हमारे पास बहुत थोड़ी विश्वसनीय जानकारी है। इनके विचारों की जानकारी हमें साखी और पद से प्राप्त होती है। किसके बारे में कहा जाता है कि ये इनके द्‌वारा रचे गये थे किंतु ये घूमने वाले भजन गायकों द्‌वारा गाये जाते थे। इनमें से कुछ बाद में एकत्र किए गए और उन्हें गुरू ग्रंथ साहब और पंचवाणी और बीजक में संग्रहित किया गया।

21.4 कपड़े पर काम करते हुए कबीर का चित्र

कबीर के उपदेशों में पूरी तरह से गहराई होती है और वे कई धार्मिक परम्पराओं का विरोध करते हैं । उनकी वाणी ने हिन्दू और मुसलमान की बाह्य पूजा पद्धति, पुजारी वर्ग की व्यक्तिगत प्रसिद्धि और वर्ण व्यवस्था पर स्पष्ट व्यंग्य किया है। उनकी कविताओं की भाषा बोल चाल की हिन्दी थी जिसे साधारण व्यक्ति आसानी से समझ सकता था।

कबीर निराकार सर्वोच्च ईश्वर पर विश्वास करते थे और मोक्ष की प्राप्ति का एक ही मार्ग भक्ति का उपदेश देते थे। कबीर ने हिन्दू और मुस्लमानों दोनों में से अपने अनुयायी बनाए।

कबीर का एक रचना

ओ अल्लाह-राम प्रत्येक सजीव में रहते हैं
अपने दासो पर दया कीजिए, हे ईश्वर!
आपका सिर क्यों भूमि पर झुका हुआ है,
क्यों आपका तन जल से स्नान कर रहा है?
तुम मारते हो और स्वयं को "दयालु" कहते हो।
आपके द्वारा की गई हत्याओं को खुद छिपाते हो।
चौबीस बार ब्राह्मण एकादशी का व्रत रखते हैं।
काज़ी रमजान में रखते हैं। मुझे बताओ कि उसने ग्यारह महीने अलग क्यों रखे हैं।
ताकि बाहरवें महीने में आध्यात्मिक फल पा सके?
हरि पूर्व में रहता है, वे कहते हैं और
और अल्लाह पश्चिम में रहता है।
उसकी तलाश तुम्हारे हृदय में करो, हृदय में जो तुम्हारा हृदय है।
वहाँ रहते हैं, रहीम-राम।

गुरूनानक

हम कबीर से अधिक गुरूनानक (1469-1539 ई.) के बारे में जानते है। तलबंडी में इनका जन्म हुआ, (पाकिस्तान के नानाकाना साहिब) करतार पूर (डेरा बाबा नानक रवि नदी के पास) में केन्द्र स्थापित करने से पहले इन्होंने कई लम्बी यात्राएँ की। वंश, जाति या लिंग के भेदभाव के बिना इनके अनुयायी एक ही रसोईघर में मिलकर भोजन करते थे। गुरू नानक द्वारा स्थापित पवित्र स्थल को धर्मशाला कहते थे।

21.5युवक गुरूनानक महात्मा के साथ वार्तालाप करते हुए

सोलहवीं शताब्दी से इनके उत्तरधिकारियों की देख-रेख में इनके अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। वे अनेक जाति के थे, परन्तु व्यापारी, कृषक, कलाकार और चित्रकार प्रमुख स्थान रखते थे। गुरूनानक के बल दिए जाने पर कि उनके अनुयायी मकान मालिक हो और उत्पादिता तथा उपयोगी व्यवसाय में सलंग्न हो। वे अनुयायियों के लिए इनसे साधारण चन्दे की भी आशा करते थे।

गुरूनानक के विचारों का इस आन्दोलन पर आरम्भ से ही गहरा प्रभाव हुआ। उन्होंने एक ईश्वर की पूजा के मत को बल दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जाति, वंश या लिंग मुक्ति पाने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं करते। मुक्ति पाने के लिए आनन्दमयी स्थिति का होना अनिवार्य नहीं , परन्तु सामाजिक वचनबद्धता के साथ शक्तिशाली जीवन व्यतीत करना होता है। उन्होंने अपने उपदेश में नाम, दान और स्नान शब्दों का उपयोग किया, इसका वास्तविक अर्थ सही उपासना, दूसरों का कल्याण और चरित्र की शुद्धता है। आज उनकी शिक्षाएँ नाम जपना, कीर्तन करना और वन्द चखना, से याद की जाती है, इसके द्वारा सही विश्वास और पूजा, ईमानदारी का जीवन और दूसरों की मदद महत्वपूर्ण है। इसी कारण गुरूनानक का समानता का सिद्धान्त सामाजिक एवं राजनैतिक एकता को लागू करता है। आंशिक रूप से गुरू नानक के अनुयायियों के इतिहास और मध्य युग के अन्य धार्मिक संतों के अनुयायियों जैसे कबीर, रविदास और दादू जिनके विचार गुरू नानक के विचारों के समान हैं के बीच अंतर दर्शाता है।

मुख्य शब्द :

1. अद्वैत	2. मुक्ति
3. अलवार	4. नायनार
5. भक्ति	6. योगासन
7. बीजक	8. अभंग

हमने क्या सीखा ?

1. नामपंथी, सिद्ध और योगी के विश्वास और पद्धतियों का वर्णन कीजिए। (AS_1)
2. कबीर के द्वारा कौनसे प्रमुख विचार वर्णित किए गये? उन्होंने इसको कैसे प्रस्तुत किया? (AS_1)
3. सूफियों के प्रमुख विश्वास और पद्धतियाँ क्या थीं? (AS_1)
4. आपके विचार में कई शिक्षकों ने प्रचलित धार्मिक विश्वासों और पद्धतियों का बहिष्कार क्यों किया है?(AS_1)
5. बाबा गुरु नानक की प्रमुख शिक्षाएँ क्या थीं? (AS_1)
6. वीराशैव या महाराष्ट्र के संतों के जाति के प्रति प्रवृत्ति पर चर्चा कीजिए। (AS_1)
7. साधारण मनुष्य मीराबाई को आज भी क्यों याद करते है? (AS_6)
8. पृष्ठ २०२ के अनुच्छेद 'कबीर पर एक दृष्टि' पढ़िए और टिप्पणी कीजिए। (AS_2)
9. आपके क्षेत्र में लोगों द्वारा मनाए जाने वाले त्योहारों के बारे में लिखिए। (AS_6)

परियोजना कार्य :

1. पता लगाए कि क्या आपके पड़ोस में भक्ति परम्परा के संतों से संबंधित दरगाह गुरूद्वारा या मन्दिर जाइए और वहाँ आपने क्या देखा और सुना उसका वर्णन कीजिए।
2. इस अध्याय में वर्णित संतों कवियों पता लगाइए कि क्या ये गायी गई हैं, कैसे गायी जाती हैं, और कवियों ने उनके बारे में क्या लिखा है।

SCERT TELANGANA

अध्याय 22

शासक एवं भवन

चित्र 22.1 कुतुबमीनार की पहली मंजिल के बरामदे को दिखाता है। कुतबुद्दीन ऐबक ने 1199 ई. में इसका निर्माण करवाया था। इस बरामदे में धनुषाकार कमानों को देखा जा सकता है। इस बरामदे के नीचे स्थित दोनों कतारों के शिलालेखों को देखिए। वे अरबी भाषा में हैं। ये शिलालेख ऊपरी भाग में कोणाकार रूप में झुके हुए हैं। शिलालेखों को इस स्थान पर रखने के लिए अच्छी कारीगरी आवश्यक है। बहुत ही निपुण शिल्पकार ही ऐसा निर्माण कर सकता है। 800 वर्ष पूर्व कुछ ही इमारतें पत्थरों एवं ईंटों से निर्मित की गई थीं। तेरहवीं शताब्दी के पर्यटकों को कुतुबमीनार जैसी इमारतें किस प्रकार प्रभावित करती होंगी?

आठवीं से अठारहवीं ईसवी तक के राजाओं और उनके अधिकारियों ने दो प्रकार की इमारतों का निर्माण करवाया। प्रथम किले, महल और गुंबद आदि। अपनी सुरक्षा और आराम के लिए तैयार किये गयी इमारतें तथा दूसरा सामाजिक कल्याण हेतु, जैसे- मंदिर, मसजिद, तालाब, कुँए, सराय, बाजार आदि। विश्व में राजा लोग इन निर्माणों के द्वारा अपना नाम अमर बनाना चाहते थे। साथ ही साथ अपनी विचारधारा और संपत्ति की सुरक्षा बढ़ाते थे। निर्माण के कार्य अन्य लोगों जैसे व्यापारियों आदि द्वारा भी करवाये गये। उन्होंने भी मंदिर, मसजिद, तालाब, कुएँ, बाज़ार आदि का निर्माण करवाया। इनमें अद्भुत शिल्पकला के नमूने हैं-घरेलू शिल्पकला जैसे- व्यापारियों की हवेलियाँ, जिनका निर्माण अठारहवीं शताब्दी में हुआ था।

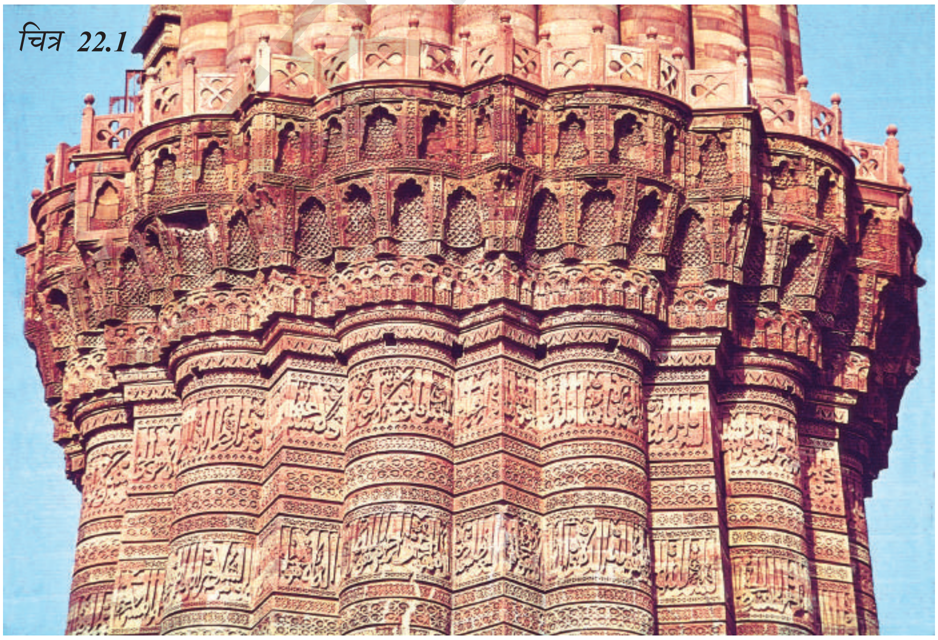

चित्र 22.1: कुतुबमीनार पाँच मंजिला इमारत है। आप पहले बरामदे के लिखे शिलालेखों को देख सकते हैं। पहली मंजिल का निर्माण कुतबुद्दीन ऐबक द्वारा करवाया गया था। बाद के मंजिलों का निर्माण इल्तुत्मिश ने 1229 में करवाया था। कई बार इस इमारत को भूकंप व आँधियों के कारण क्षति पहुँची, जिसकी मरम्मत बाद के राजाओं द्वारा करवायी गयी।

चित्र 22.2अ दिल्ली की कुव्वत-अल-इस्लाम मसजिद

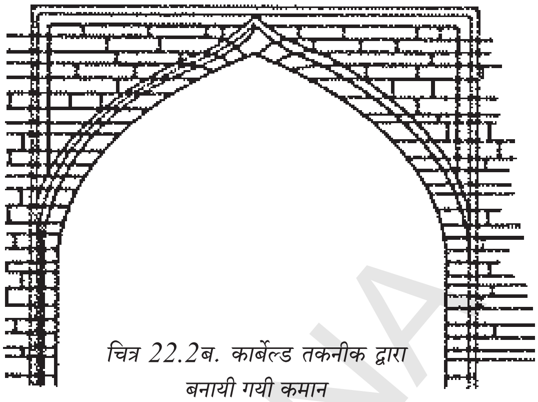

चित्र 22.2ब. कार्बेल्ड तकनीक द्वारा बनायी गयी कमान

भवन निर्माण एवं इंजीनियरी कौशल

ऐतिहासिक इमारतें उस समय की अभियांत्रिक कौशल दर्शाती हैं, साथ ही उस समय की तकनीक को भी। उदाहरण के लिए एक छत को लें। हम पत्थर एवं लकड़ी की बीम की सहायता से चारदीवारियों पर छत बना सकते हैं। किन्तु यदि छत बड़ी इमारत के लिए बनानी हो तो कठिनाई हो सकती है। इसलिए अधिक विशिष्ट तकनीक की ज़रूरत होगी।

सातवीं व दसवीं शताब्दी के मध्य भवनों में अधिक कमरे, दरवाजे, खिड़कियाँ बनाए जाने लगे। तब भी स्तंभों के बीच बीम के सहारे छत का निर्माण किया जाता था। इस प्रकार से निर्मित भवनों को "ट्रैबीट" या "कार्बेल्ड" कहा जाता था। आठवीं से तेरहवीं सदी के मध्य इस विधि के अंतर्गत मंदिरों, मसजिदों, समाधियों, भवनों व कुओं का निर्माण किया गया।

- अपने आसपास के मंदिर या मसजिद में जाइए और उसके निर्माण में ट्रैबीट विधि (वह विधि जिसमें छत का निर्माण बीम की सहायता से किया गया हो।) का उपयोग किया गया है या नहीं, पता लगाइए।

- इस विधि के द्वारा छत डालने के लिए स्तंभों को एक दूसरे के नजदीक लगाया जाता है। बड़े हॉलों के निर्माण में इस विधि का प्रयोग नहीं किया जा सकता। क्या आप बता सकते हैं क्यों?

ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में मंदिर निर्माण

999 ई. में चंदेल राजा दंगदेव ने कंदरीय शिवमंदिर का निर्माण करवाया था। यह मध्यप्रदेश के खजुराहो में है।

चित्र 22.3ब मंदिर की रूपरेखा चंदेल साम्राज्य के समय की है, को दर्शाता है। सुंदर सजावट से बनाया गया तोरण, प्रवेश द्वार, उसके बाद विशाल महामंडप है। जहाँ नृत्य किए जाते थे। खजराओं में श्रेष्ठ मन्दिर बनाए

चित्र 22.3 अ खजराओ का कन्दरीय महादेव मन्दिर

SCERT TELANGANA

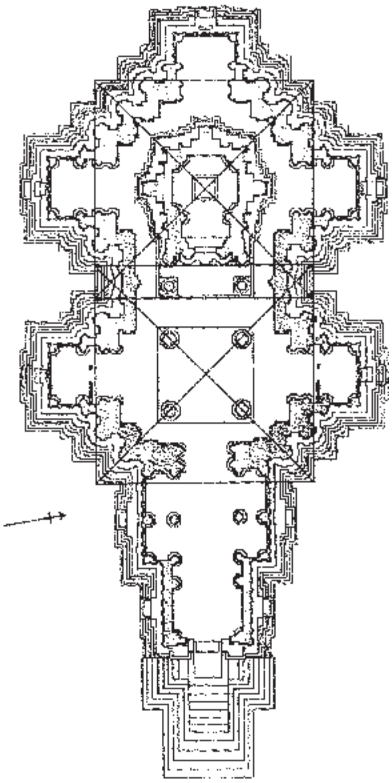

चित्र 22.3ब

गए थे, जहाँ इसके पीछे गर्भगृह में भगवान की मूर्ति प्रतिष्ठित है। इस गृह में केवल राजा और उसके परिवार के सदस्य, सगे-संबंधी, पुजारी आदि ही प्रवेश कर पूजा कर सकते थे।

तंजाउर का राजेश्वर मंदिर का शिखर अपने समय के मंदिरों के शिखरों में सर्वाधिक ऊँचा था। इस प्रकार का निर्माण उस समय इतना सरल नहीं था। क्योंकि उस समय क्रेन आदि यंत्र नहीं होते थे। लगभग 90 टन के पत्थर को मंदिर के शिखर तक मानव द्वारा पहुँचाना संभव न था। इसलिए पत्थर को शिखर तक पहुँचाने के लिए पहले एक मार्ग बनाया गया, तब उसपर दो पहियों की गाड़ी के सहारे इसे मंदिर के शिखर तक पहुँचाया गया। यह मार्ग चार किलोमीटर तक लंबा था। यह अधिक खड़ा मार्ग नहीं था। यदि वहाँ इस प्रकार का मार्ग नहीं बनाया जाता तो शिल्पयुक्त पत्थर वहाँ तक पहुँचाना कठिन होता। मन्दिर बनने के बाद इस मार्ग को नष्ट कर दिया गया।

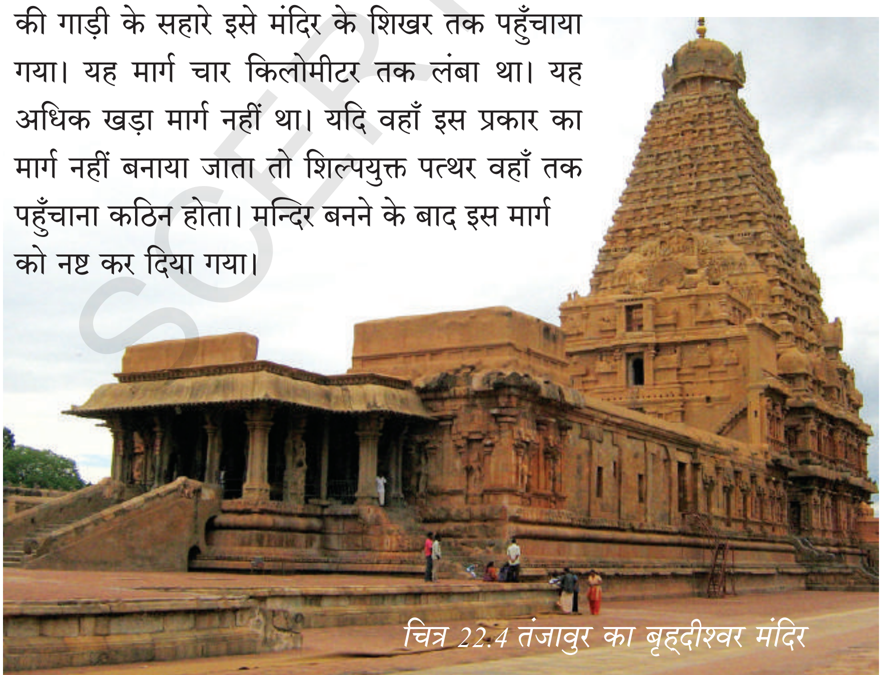

चित्र 22.4 तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर

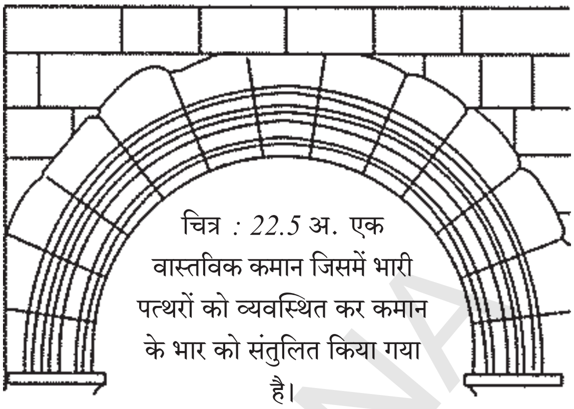

चित्र : 22.5 अ. एक वास्तविक कमान जिसमें भारी पत्थरों को व्यवस्थित कर कमान के भार को संतुलित किया गया है।

चित्र : 22.5 ब. एक वास्तविक कमान जिसे अलाई दरवाजे के नाम से जाना जाता है (चौदहवीं शताब्दी)। यह कुव्वत अल-इस्लाम मसजिद, दिल्ली

एक नवीन भवन निर्माण विधि

दो तकनीकी एवं कलापूर्ण विकास की शैलियों को बारहवीं शताब्दी में देखी जा सकता है।

(1) दरवाज़े, खिड़कियों और कमानों के ऊपर भी इस प्रकार भारी शिल्पकारी के पत्थर देखे जा सकते हैं। यह विधि सुरंगो, गुम्बदों आदि के छत निर्माण में भी उपयोगी हुई। इस प्रकार के निर्माण को 'आर्कुएट' (arcuate) कहा जाता है।

SCERT TELANGANA

- चित्र 22.2अ और 22.2ब के साथ 22.5अ और 22.5ब की तुलना कीजिए। .

(2) उस समय के निर्माण में चूनायुक्त सीमेंट का उपयोग अधिक होता था। इसमें कंकड़ मिला होने के कारण इसका निर्माण बहुत मज़बूत होता था। चाहे कितना भी बड़ा निर्माण कार्य क्यों न हो, इसी के द्वारा किया जाता था। चूने का मिश्रण कमान, गोलाकार छतों आदि के निर्माण के लिए होता था। 1190 ई. के बाद के भवनों के निर्माण में इसका अधिक उपयोग किया गया। आइए, इस प्रकार का निर्माण चित्र 22.6 को देखें

- चित्र में मज़दूर क्या कर रहे हैं? इसमें दिये गये औजार देखिए और पत्थर ढोने के साधन बताइए।

चित्र 22.6 अकबरनामा (1590-1595) का एक चित्र जिसमें आगरा के किले में वाटरगेट के निर्माण को दिखाया गया है ।

- ऐसे नवीन तकनीकी विधियों का उपयोग करके क्या कोई बड़े भवन बनाये गये हैं? बताइए।

मंदिर, मसजिद और तालाब निर्माण

मंदिरों और मसजिदों का निर्माण सौंदर्यपूर्ण ढंग से करवाया जाता था क्योंकि वे पवित्र स्थान माने जाते थे। वे उनकी शक्ति, समृद्धि और भक्ति के प्रतीक थे।राजराजेश्वर मंदिर इसका एक उदाहरण है। इस मंदिर का निर्माण राजराजदेव नामक राजा ने अपने कुल देवता राजराजेश्वर की पूजा करने के लिए करवाया था। ऐसा इनके शिलालेखों से पता चलता है। गौर करने वाली बात यह भी है कि यहाँ राजा एवं ईश्वर का नाम एक ही है। क्योंकि ईश्वर का नाम शुभप्रद होता है, इसलिए राजा का यह नाम रखा गया। साथ ही साथ वह ईश्वर के प्रतिरूप में भी स्वयं को देखना चाहता था। इस प्रकार वह मंदिर में राजराजदेव की पूजा के साथ अपनी भक्ति करवाकर वह भी राजराजेश्वर देव का सम्मान पाना चाहता था।

इसी प्रकार आपको याद होगा कि काकतीय राजधानी ओरुगल्लु के केन्द्र में स्वयंभू शिवालय का निर्माण करवाया गया था। वे दर्शाना चाहते थे कि काकतीय राजा एक स्वतंत्र शक्ति एवं अस्तित्व रखते हैं।

सभी विशालतम मंदिर राजाओं द्वारा बनवाए गए थे। मंदिरों में प्रतिष्ठित मुख्य व अन्य छोटी मूर्तियाँ राजपरिवार एवं सामंतों ने ही बनायी थीं। ये सभी मंदिर राजाओं और उनके सामंतों द्वारा किये गये शासन का लघुदर्शन कराते हैं। सब लोग एक साथ मिलकर जब पूजा करते थे तब ऐसा लगता था मानो ईश्वरीय सत्ता धरती पर आ रही है।

राजा और उच्च वर्ग के परिवार ईश्वर की पूजा के लिए रत्न, मणियाँ, स्वर्णाभूषण आदि दान में देते थे। ताकि ईश्वर की पूजा विशाल स्तर पर कर सके।

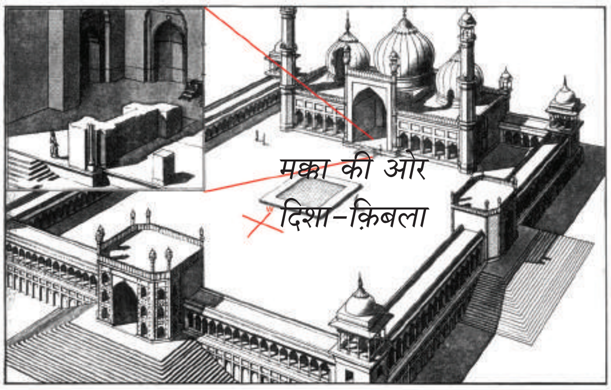

चित्र 22.7 शाहजहाँ की नयी राजधानी शाहजहानाबाद में शाहजहाँ द्वारा निर्मित जामा मसजिद का नक़्शा (1650-1656).

1200 ई. तक ये मंदिर बड़े-बड़े संस्थानों के रूप में अवतरित हुए। जिनके कारण सैकड़ों व्यावसायिक कलाकारों, नर्तकियों, संगीतज्ञों, पुजारियों, आयोजकों, सेवकों आदि को रोजगार उपलब्ध हुए। यह मंदिर कुछ संदर्भों में गाँवों में कर भी वसूल करते और व्यापारियों को वह धन ऋण के रूप में देते थे। कई मेलों, बाज़ारों व उत्सवों का आयोजन किया जाता था। यहाँ वस्तुओं का क्रय-विक्रय भी होता था। इन मंदिरों के आसपास कई शैव व वैष्णवों के मठ बनाये गये थे। ये मंदिर बाद में राजनैतिक एवं आर्थिक केन्द्रों के रूप में उभरे। राजा और शासक लोग अपने-अपने नाम को मंदिर से जोड़ने के लिए राज्याभिषेक जैसे कार्यक्रमों का आयोजन मंदिरों में करवाते थे। ढेर सारा दान भी करते थे। इस प्रकार मंदिरों के निर्माण एवं विकास में वे सहायक होते थे।

मुसलमान सुलतान और बादशाह ईश्वर के अवतारवाद को नहीं मानते थे। जबकि पारसी इतिहास से पता चलता है कि कुछ सुलतान ईश्वर के प्रतिरूप के रूप में माने जाते थे। दिल्ली की मसजिद के एक शिलालेख में इस प्रकार लिखा है- "ईश्वर ने ही अलाउद्दीन को राजा के रूप में नियुक्त किया, क्योंकि उनमें अतीत के महान न्यायवादी मूसा एवं सुलेमान के गुण थे। क्योंकि ईश्वर स्वयं महान न्यायकर्ता एवं निर्माता है। उन्होंने ही अव्यवस्था को मिटाते हुए एक अनुशासित व समानतापूर्ण विश्व का निर्माण किया।"

नये राजवंश के राजा अधिकार में आते ही अपना नैतिक आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास करते थे। नये प्रार्थना स्थलों का निर्माण कर वे यह बताना चाहते थे कि हम ईश्वर के साथ सहसंबंध रखते हैं, यदि आकस्मिक कोई राजनैतिक परिवर्तन होते तो मुख्य रूप से ऐसा कहा जाता था। शासक भी पंडितों व साधुओं को भूदान करके उनकी राजधानियों व नगरों को सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में स्थापित करते थे। जिससे उनको ख्याति प्राप्त होती थी।

जनता में ऐसा विश्वास था कि राजाओं के शासन व्यवस्था के प्रभाव से देश की सभी खनिज संपदाएँ समृद्ध रहती थी तथा समय पर वर्षा होती थी। उस समय तालाबों जलाशयों द्वारा शुद्ध जल की आपूर्ति को महान कार्य समझा जाता था। और देहली-इ कुहाना के पास एक बड़े जलाशय के निर्माण के कारण इल्तुत्मिश ने बहुत प्रशस्ति पायी। इसे हौज - ए -सुल्तानी या राजा के जलाशय के नाम से जाना जाता था।

शासकों ने सामान्य जनता के उपयोग हेतु छोटे-बड़े तालाब व जलाशयों का निर्माण करवाया था।

चित्र 22.8 अमृतसर में हरमदर साहिब(स्वर्ण मंदिर) साथ में पवित्र सरोवर

SCERT TELANGANA

- आप ने ग्रामदेवता व बड़े मंदिरों के बारे में पढ़ा है। वे सभी आपस में अलग हैं, क्यों?इसका क्या कारण हो सकता है?

मंदिरों को ध्वंस क्यों किया गया?

क्योंकि मंदिर राजाओं की भक्ति, समृद्धि, अधिकार का प्रतीक थे। इसलिए इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि जब कोई राजा दूसरे राज्यों पर आक्रमण करते तो इन भवनों को निशाना बनाते है। नवीं सदी के आरंभ में पांड्य राजा श्रीमर श्रीवल्लभ ने श्रीलंका पर आक्रमण कर सेन-I (831-851) नामक राजा को हराया था। बौद्ध संन्यासी व इतिहासकार धम्मकिति ने इस प्रकार लिखा है-"उसने सभी मूल्यवान वस्तुएँ लूटीं......रत्न भवन में स्थित बौद्ध की स्वर्ण मूर्तियाँ भी लूट कर ले गया।" इस प्रकार सिंहल के राजा सेन - II ने इसका बदला लेने के लिए पांड्य राजधानी मदुराई पर आक्रमण करने का आदेश दिया। यह आक्रमण केवल बौद्ध की स्वर्ण मूर्तियों को वापस लाने के लिए ही किया गया। ऐसा एक बौद्ध भिक्षु ने लिखा है।

इसी प्रकार ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में चोलराजा राजेन्द्र -I ने अपनी राजधानी में शिवालय का निर्माण करवाया और पराजित राजाओं के पास से लूटे धन और उपहारों से इसे भर दिया। इनमें चालुक्य राजाओं की सूर्यपीठिका, पूर्वी चालुक्यों से गणेश व दुर्गा की मूर्तियाँ तथा नंदी की प्रतिमा, उड़ीसा के कलिंग राजा से भैरव प्रतिमा (शिव का एक रूप), पश्चिम बंगाल के पाल शासकों से जीती गईं काली की मूर्तियाँ थीं।

गज़नी का सुलतान महमूद चोल राजा राजेन्द्र-I का समकालीन था। वह भारत पर आक्रमण कर हारे हुए राजाओं की संपति व उनकी संपत्तियों को लूट कर उनकी समृद्धि व आदर्श को नष्ट करना चाहता था। उस समय तक महमूद गज़नी कोई प्रसिद्ध शासक नहीं था। लेकिन मंदिरों के विध्वंस के कारण विशेष कर सोमनाथ मंदिर को ध्वंस कर वह इस्लाम के नायक बनना चाहता था। लगभग मध्य युग की यह राजनैतिक संस्कृति थी की सभी राजा अपनी राजनैतिक शक्ति और सैन्यबल की सफलता का प्रदर्शन कर हारने वाले राजाओं के पवित्र स्थलों पर अपना अधिकार करते थे।

- किस प्रकार से राजेन्द्र -I और महमुद गज़नी की नीतियाँ उस समय का उत्पाद थी। दोनों एक-दूसरे से किस प्रकार से भिन्न थीं?

विजयनगर साम्राज्य कालीन राजकीय शैली

संपूर्ण दक्षिण भारत में एक महत्वपूर्ण राजधानी विजयनगर शहर को विजयनगर साम्राज्य के राजाओं ने विकसित किया था। इन्होंने प्राचीन भवन निर्माण पद्धति को अपनाया था। इन्होंने विरुपक्षा, रामचंद्र, कृष्ण, विट्ठलेश्वर मंदिर तमिलनाडु में चोल व पांड्य राजाओं की कला को अपना कर इसका विकास किया था।

चित्र: 22.9 हम्पी में विरूपक्षा मंदिर

SCERT TELANGANA

चित्र 22.10a कमल मंदिर

चित्र 22.10b रानी का हमाम

इसमें विमान तथा गोपुरम भी निहित थे। उन राजाओं ने **गोपुरम** पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने इतनी ऊँचाई पर **गोपुरम** का निर्माण करवाया जो पहले कभी न किया गया था। पहली मंजिल काले ग्रेनाइट तथा अन्य मंजिले ईंट एवं चूनें से बनवायी गयी थी। राजमंदिरों के शिखर बहुत ऊँचे तथा गर्भगृह छोटे होते थे। ताकि दूर से भी मंदिर दिखाई दे सके। ये केवल उस साम्राज्य के ही प्रतीक नहीं हैं बल्कि अपने निर्माण में सहायक धन-संपदा एवं तकनीक को दर्शाते हैं। विशेष निर्माण कार्यों में मंडप एवं बरामदों को बहुत बड़े स्तंभों का आधार लेकर बनाया गया था। आइए विरुपक्षा मंदिर को पास से देखते हैं-

विरुपक्षा मंदिर कई शताब्दी पुराना है, वहाँ शिला लेखों पर लिखा है, इसमें पहली मूर्ति की स्थापना नवीं-दसवीं सदी में हुई, इनका विस्तार विजय नगर राजाओं के काल में हुआ। मूल मंदिर के सामने कृष्णदेवराय ने स्वयं संबोधित करने के लिए एक सभागार का निर्माण करवाया। इनकी सजावट अत्यंत बारीक शिल्पकलाकारी वाले स्तंभों से की गयी है। पूर्वी गोपुरम के निर्माण का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। इसे मंदिर के गर्भगृह के चारों ओर मुख्य मंडपों को मिलाते हुए बनाया गया है।

मंदिरों के इस सभागार का उपयोग विविध प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता था। इसके कुछ स्थानों पर देवताओं के चित्र, मूर्ति आदि को रखकर उनकी पूजा अर्चना की जाती थी या पूजा उत्सवों में संगीत, नृत्य, नाटक आदि का आयोजन किया जाता था। दूसरे सभागारों को देवताओं के विवाह आदि कार्यक्रमों के आयोजन के लिए काम में लाया जाता था। इनमें अन्य देवताओं की प्रतिमूर्तियों के छोटे गर्भगृह भी हैं, जिनमें अलग-अलग मूर्तियाँ रखी गयी हैं।

विजयनगर साम्राज्य के राजाओं द्वारा बनवाये गये ये मंदिर तमिलनाडु के मंदिरों के प्रतिरूपों पर आधारित थे। उन्होंने ऐसे भव्य भवनों का भी निर्माण करवाया जिनमें तत्कालीन आधुनिक तथा सुलतानी निर्माण शैली का भी प्रयोग किया गया था। प्रसिद्ध लोटस महल (ब्रिटिश पर्यटकों द्वारा नामांकित), रानियों के स्नानागार तथा हाथियों के रहने के स्थान इसके उदाहरण हैं। आप इन भवनों में कमानों एवं गुंबदों में प्रयोग की गई कला को भी देख सकते हैं। ये चूने से पलस्तर करके उभारे गये हैं। इनकी सजावट पुष्पों व पक्षियों के चित्र बनाकर की गयी है। इन भवनों से तत्कालीन राजाओं के वैभव का पता चलता है। जो उनके उच्च व शानदार रहन-सहन और

SCERT TELANGANA

उनकी सुख-समृद्धि संबंधी रुचि को दर्शाता है। फिर भी ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि ये भवन सल्तनती इमारतों की हुबहू नकल हैं। इनमें दक्षिण के मंदिरों की कमानें, गुंबद व सल्तनती शिल्पकारी का मिश्रण है। इसे भली-भाँति लोटस महल में देखा जा सकता है, जहाँ राजा अक्सर सभाएँ आयोजित किया करते थे।

चित्र 22.10c हाथियों का अस्तबल

विजयनगर राजाओं का सबसे प्रभावी निर्माण महानवमी डिब्बा नामक एक बहुत ऊँचा चबूतरा है, जो 55 फीट ऊँचे पाँच मंजिला भवन के बराबर है और 11000 फीट क्षेत्रफल घेरे हुए है। इसकी ऊँचाई दो सौ वर्षों में कम से कम तीन बार बढ़ायी गयी। इस चबूतरे की परत विविध प्रकार के पत्थरों से ढकी गयी है। इसके ऊपर पूर्ण भवन नहीं है। इस चबूतरे को कपड़े के शामियाने द्वारा लकड़ी के खंभों का उपयोग करके ढका गया था। इस चबूतरे पर विजयनगर राजा नवरात्रि पूजा करते थे। वहीं पर वे दशहरे की सभा का आयोजन करते थे जिसमें उनके सभी मुख्य लोग, नेता और अधिकारी भाग लेते थे। इसमें यूरोप के राजदूत, एवं सुलतानों के भाग लेने के प्रमाण भी मिलते हैं।

- बड़े साम्राज्यों के राजा भवनों का निर्माण करवाते समय विविध शैलियों का प्रयोग क्यों करते होंगे?

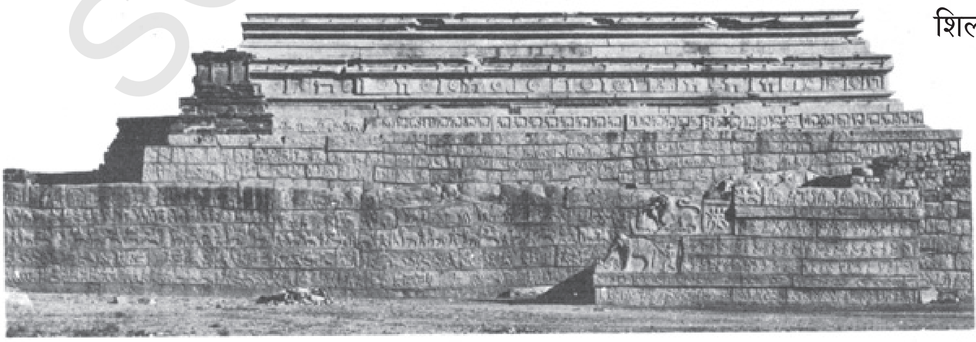

चित्र 22.10d महानवमी डिब्बा

बगीचे, समाधियाँ व किले

मुगलों के समय शिल्पकला अधिक जटिल थी। क्योंकि मुगल राजा व्यक्तिगत रूप से साहित्य, कला और शिल्प में विशेष रुचि दिखाते थे। बाबर ने अपनी आत्मकथा में बगीचों के प्रति अपनी रुचि दर्शायी है। इसमें बगीचों की योजना, निर्माण आदि की चर्चा है। यह बगीचा आयताकार दीवारो के भीतर थी। इसकी सिंचाई के लिए कृत्रिम नहर की व्यवस्था थी। यह बगीचा चार भागों में विभाजित था। इसके लिए चारदीवारी भी बनवाई गई थी।

इन बागों को चहार बाग के नाम पुकारा जाता था, क्योंकि ये चार सममीतिय भागों में विभाजित थे। अपने आरंभिक शासन काल में अकबर व जहाँगीर और शाहजहाँ ने कई सुंदर बाग बनवाये, जिनमें से कुछ काश्मीर, आगरा और दिल्ली में भी थे। (चित्र 22.11 में देखिए।)

अकबर के काल में कई सुंदर भवनों का निर्माण करवाया गया। अकबर द्वारा बनवाये गये भवनों व शिलालेखों में मध्य एशिया के वंशज के तैमूर के समाधियों के शिल्पकला भी दिखाई पड़ती हैं। मुगलों के निर्माण में मध्य शिखर गुबंद के ऊँचे-लंबे

SCERT TELANGANA

मुखद्वारों (Pishtaq) मुगल शिल्पकला के महत्वपूर्ण पहलू है। सर्वप्रथम हुमायुँ की समाधि में भी इसके दर्शन होते हैं। यह चहार बाग उद्यानों के मध्य में परंपरागत ढंग से बनवाया गया है। इसे आठ स्वर्ग (eight paradises or *hasht bihisht)* या हश्त बिहिश्त, क्योंकि इस सभागार जिसके मध्य सभागार के चारों ओर आठ कमरे हैं। इसके निर्माण में लालपत्थरों और कोनों के लिए संगमरमर के पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है।

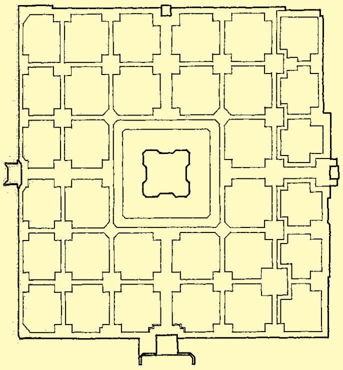

चित्र: 22.11
मुगल चहारबाग

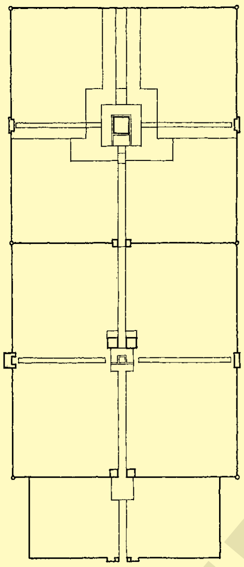

चित्र 22.11a हुमायूँ के मकबरे में चहारबाग दिल्ली

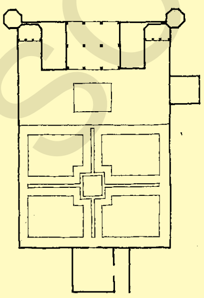

चित्र 22.11c शालीमार बाग कश्मीर में छत पर चहार बाग

चित्र: 22.12 A 1590 में काबुल में बाबर चहारबाग का निर्माण करते कर्मचारियों का निरीक्षण करते हुए, ध्यान दिजिए कि किस प्रकार नहरे चहार बाग की विशेषता को दर्शाती है।

चित्र: 22.13 क्या आप पानी की नहर देख सकते है ?

शाहजहाँ के काल में अनेक शिल्प, वास्तु शैलियों का मिश्रण करते हुए नवीन वास्तु शिल्पों का निर्माण किया गया। इस तरह के कार्य के लिए खर्च विशेषकर आगरा और दिल्ली के क्षेत्र में किया गया। इसमें दीवान-ए-खास की योजना निजी सभा के रूप में आम प्रजा को संबोधित करने के लिए की गयी। इस स्थान का वर्णन चिहिल सुतुन (*chihil sutun*) या चालीस खंभों के सभागार के रूप में किया जाता है, जो एक बड़े क्षेत्र में है।

शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया सभागार विशेषकर मसजिद की तरह है। राजगद्दी के नीचे स्थित स्तंभ को पवित्र किब्ला माना जाता है। क्योंकि मुसलमान लोग नमाज करते समय मक्का की ओर अपना मुँह रखते हैं, इसलिए इसमें इस बात का ध्यान रखा गया कि सभा संबोधन के समय सबका मुँह उसी दिशा में रहे। इस शिल्प में राजा को धरती पर ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में बताने का प्रयत्न किया गया।

दिल्ली लाल किले में शाहजहाँ द्वारा निर्मित न्यायालय राजा का शासन और न्याय से संबंध दर्शाता है। बरामदे में राजसिंहासन के पीछे स्थित दैवसंबंधी पित्र दुरा (*pietra dura*) शैली तथा ग्रीक भगवान आर्फियस का बाँसुरी बजाते हुए चित्र दर्शाया गया है। यह मान्यता है कि ऑर्फियस के संगीत को सुनकर खूँख्वार जानवर भी भेदभाव छोड़कर शांति से साथ रहने लगते हैं। शाहजहाँ द्वारा निर्मित सभागार अमीर-गरीब का भेद मिटाने व सबको समान न्याय देते हुए शांति के साथ रखने के उद्देश्य से बनवाया गया था।

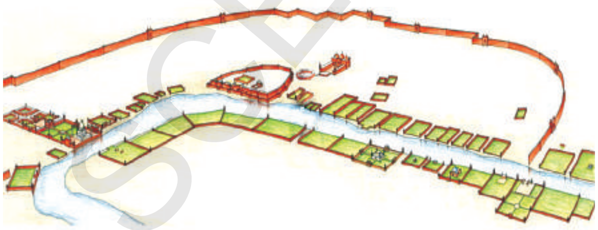

चित्र: 22.14 आगरा में स्थित नदीमुख के सामने बगीचे में मरम्मत की जा रही। नदी देखिए कि किस तरह प्रमुखों व्यक्तियों के महल बगीचे यमुना नदी के दोनों किनारों पर निर्मित किए गए इसी के बाएं ओर ताजमहल है

चित्र: 22.15 आगरा का ताजमहल

शाहजहाँ ने अपने शासन के आरंभिक काल में अपनी राजधानी आगरा में यमुना तट पर अपना भव्य आवास बनवाया। ये चहारबागों के मध्य में स्थित था। अनेक इतिहासकारों ने इस चहारबाग को नदी मुख उद्यान (river-front garden) का नाम दिया है। इसके आवासीय प्रांत चहारबाग के मध्य में न होते हुए नदी के किनारे व उद्यान के अंत में निर्मित किये गये हैं।

शाहजहाँ ने इस नदी-मुख उद्यान को अपने द्वारा विश्व प्रसिद्ध इमारत ताजमहल में स्थान दिया। यह बिल्कुल यमुना नदी के सम्मुख है। यहाँ नदी के पास ऊँचे सतह पर संगमरमर से भव्य समाधियों का निर्माण करवाया गया है। चहारबाग इसके दक्षिण में स्थित है। दिल्ली में शाहजहाँ द्वारा स्थापित नगर शाहजहाँबाद में बनवाया गया राजमहल भी नदी के किनारे है। इसका केवल यह

मतलब निकलता है कि उच्च वर्ग के राजा नदियों के किनारे महल बनाने में रुचि लेते थे। जैसा कि उसके बड़े बेटे दारा शिकोह ने भी किया था। दूसरे लोग अपना आवास यमुना नदी से दूर शहर में बनवाते थे।

- मान लो तुम शिल्पकलाकार हो और बाँस की लकड़ी से बने पटरे पर ज़मीन से पचास मीटर की ऊँचाई पर खड़े होकर काम कर रहे हो। यदि तुम्हें कुतुबमीनार की पहली मंजिल पर एक शिलालेख लगाना हो, तो तुम क्या करोगे?

मुख्य शब्द :

शिलालेख
स्मारक (स्मारक)
राजवंश
शिल्प
राज्याभिषेक

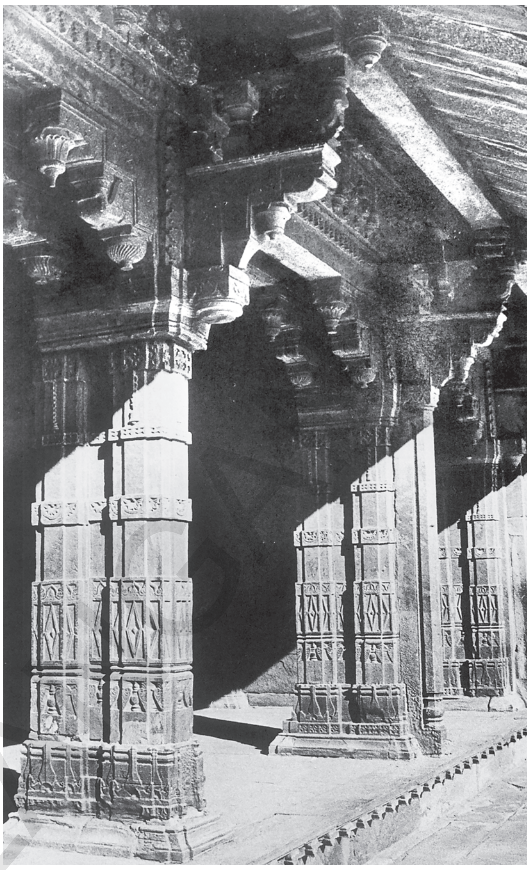

चित्र: 22.16 फतेहपुर सीकरी में जोधाबाई महल के अलंकृत स्तंभ जो बाहर निकले हुए छत को सहारा दिये हुए हैं ये गुजरात क्षेत्र की निर्माण कला का अनुकरण करते है।

हमने क्या सीखा?

1. किस प्रकार से ट्रिबेट शिल्प, अर्कुएट शिल्पकला से भिन्न था? (AS_1)
2. शिखर से क्या तात्पर्य है? (AS_1)
3. मुगलों के चहार बाग की क्या विशेषताएँ थीं? (AS_1)
4. मंदिर राजाओं के वैभव को किस प्रकार बताते हैं? (AS_1)
5. परिचय का दूसरा अनुच्छेद पढ़िए जो पृष्ठ १९५ पर है और टिप्पणी लिखिए।? (AS_2)
6. पता लगाइए कि क्या आपके गाँव या कस्बे में किसी महापुरुष की प्रतिमा या समाधि है? वह वहाँ क्यों स्थापित की गयी। इसका क्या उपयोग है? (AS_6)
7. अपने पास के किसी उद्यान या बगीचे में जाओ और बताओ कि यह किस प्रकार मुगलों के बागों से भिन्न है? (AS_1)
8. भारत के मानचित्र में निम्न स्थानों को अंकित किजिए। (AS_5)

   अ) दिल्ली आ) आगरा इ) अमृतसर ई) तंजाऊर उ) हम्पी ऊ) यमुना नदी

SCERT TELANGANA

शैक्षिक मापदंड (AS)

कक्षाकक्ष प्रक्रिया : इस समय का उपयोग उस क्रियाकलाप के लिए किया जाना चाहिए जिससे बच्चा प्रस्तुत विषयवस्तु समझ सके। विषयवस्तु के मध्य से प्रश्न पूछना, इस कार्य में सहायक हो सकता है। ये प्रश्न विविध प्रकार के होने चाहिए जिनमें विविध पहलुओं पर तार्किक विचार करने, कारण और प्रभाव बताने, सुव्यवस्थित करने, मनोचित्रण/भावचित्रण, निरीक्षण, विश्लेषण, चिन्तन एवं कल्पना, प्रतिक्रिया, व्याख्या करने के अवसर हों। प्रत्येक पाठ की विषयवस्तु के मुख्य भाव पर उसके उपसंकल्पनाओं सहित चर्चा होनी चाहिए। साथ ही उसमें दिये गये मुख्य शब्दों पर भी।

1) **भावगत बोध (AS1):** पूछताछ व चर्चा के माध्यम से भाव अंतर्बोध व सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उदाहरणतः सजीव उदाहरणों के माध्यम से संदर्भ समझने, उसकी व्याख्या करने, निरीक्षण करने आदि।

2) **विषयवस्तु पढ़ना, अर्थग्रहण और प्रतिक्रिया (AS2):** समय-समय पर बच्चों को संदर्भों जैसे-किसानों, मिल मज़दूरों, या चित्र जो पाठ में दिये गये हैं, जो सीधे-सीधे विषयों से संबंधित नहीं हैं, उनके बारे में चर्चा करवायें। छात्रों को विषयवस्तु संबंधित मुख्य भाव समझने और व्याख्या करने का समय दिया जाना चाहिए।

3) **सूचनाप्राप्ति कौशल (AS3):** पाठ्यपुस्तक में सामाजिक अध्ययन शिक्षण के प्रत्येक पहलू का समावेश संभव नहीं है। उदाहरणतः शहरी क्षेत्र के बालक को उनके क्षेत्र के चयनित प्रतिनिधि के बारे में तथा ग्रामीण प्रांत के बच्चों को सिंचाई के साधनों के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए कहा जा सकता है। अर्थात छात्रों के क्षेत्र के अनुसार बच्चों को कार्य दिये जा सकते हैं। उनके द्वारा प्राप्त तथ्य, पुस्तक के तथ्यों से भिन्न हैं कि नहीं अच्छी तरह देख परख लें। इन तथ्यों का परियोजना के माध्यम से संचय करना सूचनाप्राप्ति कौशल है, जिसका सामाजिक अध्ययन शिक्षण में विशेष महत्व है। उदाः तालाबों के बारे में जानकारी- वे इससे संबंधित चित्र या मानचित्र बना सकते हैं। अथवा संग्रहित तथ्यों को पोस्टर या चित्र के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। इस कौशल में संग्रहित सूचनाओं की तालिका बनाना या उनका विश्लेषण भी समाहित है।

4) **तात्कालिक विषयों पर कारण बताना एवं तर्क देना (AS4):** बच्चों को अपने रहन-सहन का दूसरे क्षेत्रों के लोगों के रहन-सहन के तरीकों की तुलना, अपने समय की परिस्थितियों से अतीत की परिस्थितियों की तुलना करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हो सकता है कि सबके उत्तर भिन्न हों, उन्हें कारण बताने, सूचना देने, उन्हें पुनर्व्यवस्थित करने व उनकी व्याख्या करने का मौका मिलना चाहिए।

5) **मानचित्र कौशल (AS5):** पाठ्यपुस्तक में विविध प्रकार के मानचित्र और चित्र दिये गये हैं। मानचित्र संबंधी प्रस्तुतीकरण में निपुणता एवं उसमें स्थान आदि पहचानना, दोनों ही महत्वपूर्ण है। मानचित्र कौशल के विकास के विविध स्तर हैं- कक्षा का मानचित्र बनाना और ऊँचाई, दूरी आदि मानचित्र में दर्शाना आदि। इसमें पाठों में दिये गये पोस्टरों व फोटोज का चित्रांकन भी करवाया जा सकता है। उपयोग में लाने वाले चित्र पाठों में भी हो सकते हैं, बाहर के भी। कभी-कभी चित्रों या शिल्पों को शीर्षक देने के काम भी दिये जा सकते हैं।

6) **प्रशंसा एवं संवेदनशीलता (AS6):** हमारा देश विविधताओं से भरा है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। अनेक धर्म और जातियाँ हैं। धनी, निर्धन, लिंग आदि की भिन्नता भी मौजूद है। सामाजिक अध्ययन को इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, छात्रों में इनके प्रति संवेदशीलता का भाव विकसित करते हुए सामाजिक जिम्मेदारी उठाने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जिससे ये विविधताएँ हमारे लिए समस्या न बनकर हमारे विकास का आधार बनें। अध्यापक कक्षा 6 एवं 7 की सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक द्वारा बच्चों को सामाजिक अध्ययन के विषयों का परिचय करवायें।

SCERT TELANGANA

परिशिष्ट (Appendix)

अतिरिक्ति जानकारी और मानचित्र (जहाँ कहीं आवश्यकता है) जोड़े जाए।

संसार का राजनैतिक मानचित्र

भारत का प्राकृतिक मानचित्र

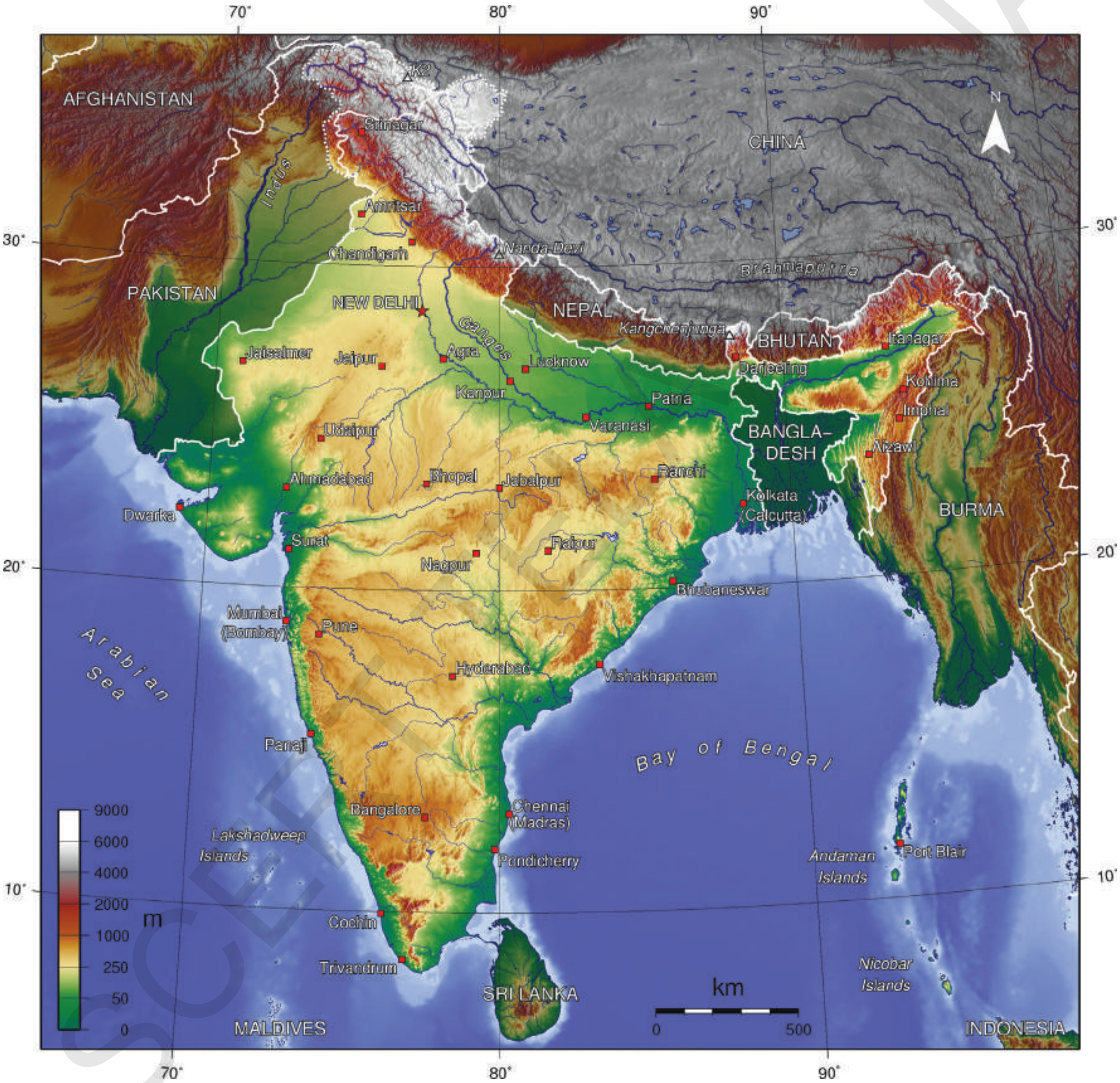

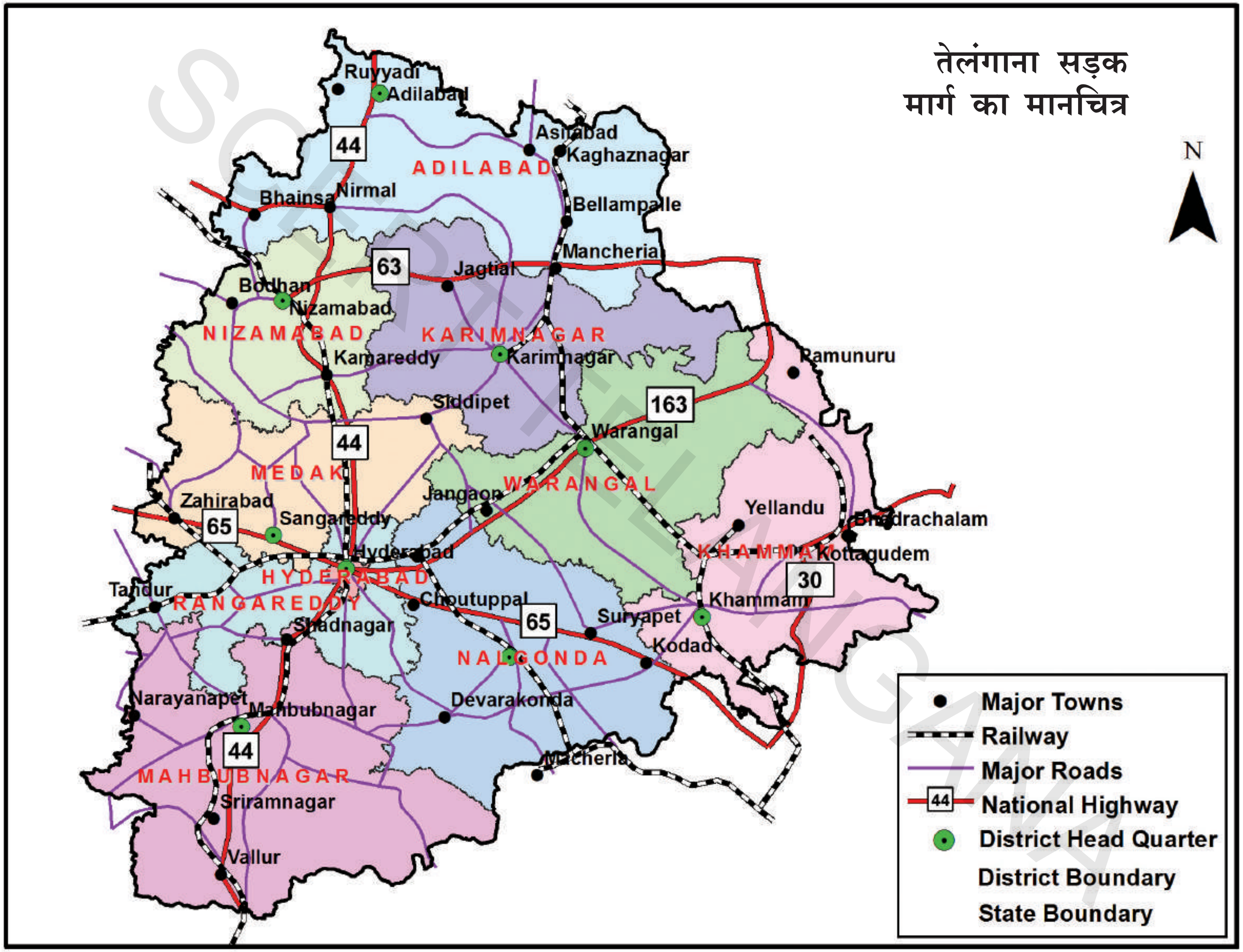
तेलंगाना सड़क
मार्ग का मानचित्र
N
Ruyyadi
Adilabad
44
Asifabad
Kaghaznagar
ADILABAD
Bhainsa
Nirmal
Bellampalle
Mancheria
63
Jagtial
Bodhan
Nizamabad
NIZAMABAD
KARIMNAGAR
Kamareddy
Karimnagar
Ramunuru
163
Siddipet
Warangal
44
MEDAK
WARANGAL
Jangaon
Zahirabad
Sangareddy
65
Yellandu
Bhadrachalam
Hyderabad
KHAMMAM
Kottagudem
HYDERABAD
30
Tandur
RANGAREDDY
Choutuppal
Khammam
Shadnagar
65
Suryapet
Kodad
NALGONDA
Narayanapet
Mahbubnagar
Devarakonda
44
Macherla
MAHBUBNAGAR
Sriramnagar
Vallur
Major Towns
Railway
Major Roads
44
National Highway
District Head Quarter
District Boundary
State Boundary

विश्व का बाह्य रेखीय मानचित्र

SCERT TELANGANA

भारत का राजनैतिक मानचित्र

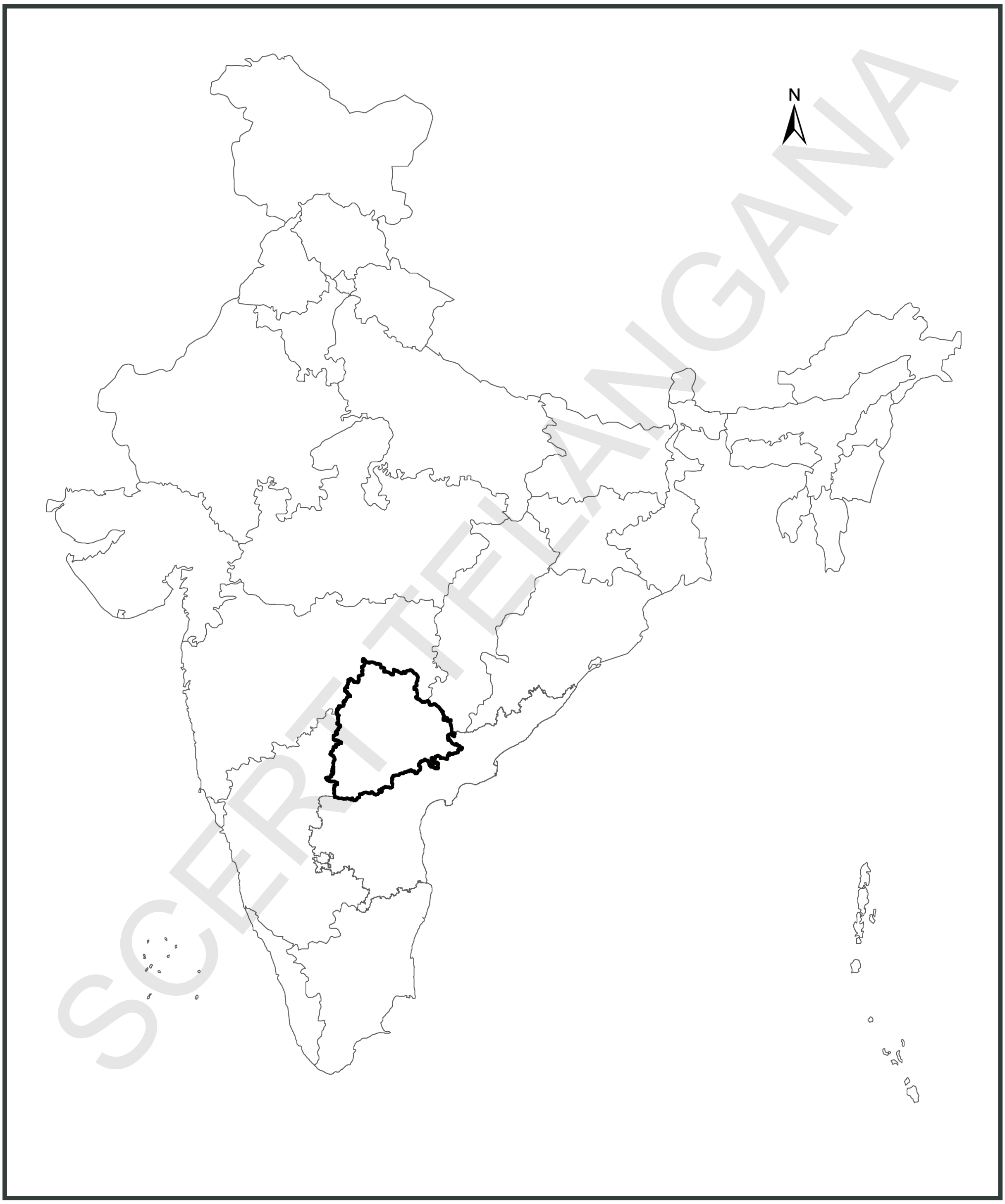

तेलंगाना का राजनैतिक मानचित्र

SCERT TELANGANA

Telangana State Symbols

Sl. No.	State Symbol	Common Name	Telugu Name
1.	State Animal	Spotted Deer	Jinka
2.	State Bird	Indian Roller	Pala Pitta
3.	State Tree	Jammi Chettu	Jammi
4.	State Flower	Tangedu	Tangedu

State Animal

State Bird

State Tree

State Flower

State Logo

National Symbols of India

National Flag : Designed by Sri Pingali Venkaiah

National Symbol : Lion Capital - Adopted from the Emperor Asoka's dharma stupa established at Saranath.

National Tree : Banyan tree

National Flower : Lotus

National Language : Hindi

National Fruit : Mango

National River : Ganges

National Animal : Royal Bengal Tiger

National Anthem : Written by Sri Ravindranath Tagore.

National Bird : Peacock

National Song : Vande Mataram Written by Sri Bamkim Chandra Chaterji

National Aquatic Animal : Dolphin

Indian National Calendar (Saka calendar)

S. No.	Month	Length	Start date (Gregorian calendar)	Ritu	Season
1	Chaitra	30/31	March 22	Vasanta	Spring
2	Vaishākh	31	April 21		
3	Jyaishtha	31	May 22	Grishma	Summer
4	Āshādha	31	June 22		
5	Shrāvana	31	July 23	Varsha	Monsoon
6	Bhādrapad	31	August 23		
7	Āshwin	30	September 23	Sharat	Autumn
8	Kārtik	30	October 23		
9	Agrahayana	30	November 22	Hemant	Winter
10	Paush	30	December 22		
11	Māgh	30	January 21	Sishira	Cold & dewy season
12	Phālgun	30	February 20		

National Heritage Animal : Elephant

National Calendar : Based on Shaka Samvatsara (Chaitra masam to Phalguna masam). We follow the Gregorian Calendar officially.

Indian Standard Time (IST) : Based on 82 1/2 degrees East Longitude. Our local time is 5hrs.30min. ahead of Greenwich mean time(GMT).

SCERT TELANGANA

Timeline of Satavahana Kings
(230 BCE - 225 CE)

Srimukha	271 BCE - 248 BCE
Krishna	248 BCE - 230 BCE
Satakarni - I	230 BCE - 220 BCE
Satakarni - II	184 BCE - 128 BCE
Hala	42 CE - 51 CE
Goutamiputra Satakarni	62 CE - 86 CE
Vasishtaputra Pulomavi	86 CE - 114 CE
Sivasri Satakarni	114 CE - 128 CE
Yagyasri Satakarni	128 A.D. - 157 CE

Timeline of Chola Kings
(900 CE - 1279 CE)

Vijayalaya	850 CE - 871 CE
Aditya Chola	871 CE - 905 CE
Parantaka - I	905 CE - 907 CE
Rajaraja - I	985 CE - 1016 CE
Rajaraja Chola	1016 CE - 1044 CE
Rajadhi Raja	1044 CE - 1052 CE
Veera Rajendra	1064 CE - 1069 CE
Kuluthonga Chola	1070 CE - 1121 CE
Rajaraja - II	1173 CE - 1178 CE
Kuluthonga Chola -III	1178 CE - 1219 CE
Rajendra - III	1256 CE - 1270 CE

Telangana Fact Sheet

- Telangana Area : 1,12,077 sq km
- Density : 307
- Latitude extent : $15^0$46' N - $19^0$47' N
- Longitudeval extent : $77^0$16' Eastern longitude
  $81^0$30' Eastern longitude
- Country : India
- Region : South India
- Formed on : June 2nd, 2014
- Capital : Hyderabad
- No. of Districts : 31
  (Adilabad, Komarambheem, Bhadradri, Jayashankar, Jogulamba, Hyderabad, Jagitial, Janagoan, Kama Reddy, Karimnagar, Khamma, Mahabubabad, Mahabubnagar, Manchiryal, Medak, Medchal, Nalgonda, Nagarkurnool, Nirmal, Nizamabad, Ranga Reddy, Peddapalli, Rajanna, Sanga Reddy, Siddipet, Suryapet, Vikarabad, Wanaparthy, Warangal Urban, Warangal Rura, Yadadri.)
- Official Languages : Telugu, Urdu
- No.of Assembly seats : 119
- No.of Council seats : 40
- No.of Lok sabha seats : 17
- No.of Rajya sabha seats : 7
- Important Rivers : Godavari, Krishna, Manjira, Musi
- No. of Zilla Praja Parishats : 9
- No. of Mandal Praja Parishats : 443
- No. of Municipal Corporations : 6
- No. of Municipalities : 38
- No. of Revenue Mandals : 464
- No. of Gram Panchayats : 8778
- Total Population (as per 2011 census) : 351.94 Lakhs
- No. of Males : 177.04 Lakhs
- No. of Females : 174.90 Lakhs
- Sex Ratio (No. of Females per 1000 Males) : 988
- Density of Population (per Sq.k.m.) : 307
- Literacy Rate : 66.46%
- Male Literacy Rate : 74.95%
- Female Literacy Rate : 57.92%

SCERT TELANGANA